

# अभय श्रेष्ठ (चङ्की) को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र  
सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको  
स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौँ  
पत्रको प्रयोजनका लागि  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

शोधकर्ता  
इन्दिरा भट्टराई  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर, काठमाडौँ  
२०७०

## शोध निर्देशकको मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभाग स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षका छात्रा **इन्दिरा भट्टराईले अभय श्रेष्ठ (चङ्की) को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन** शीर्षकको शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । शोध प्रक्रियाको अनुशासन भित्र रही शोध विषयको अपेक्षानुसार सामग्रीको सङ्कलन, वर्गीकरण र आवश्यक विश्लेषण गरी मिहेनतका साथ तयार पार्नुभएको उहाँको यस शोधपत्रबाट म पूर्णतः सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति :- २०७०/०९/१९

.....  
उप-प्रा. रजनी ढकाल  
शोध निर्देशक  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
कीर्तिपुर, काठमाडौं

# त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय

नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर

## स्वीकृति-पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको समूह २०६६/०६७ का छात्रा इन्दिरा भट्टारईले स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पार्नु भएको **अभय श्रेष्ठ (चड्की)** को **जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन** शीर्षकको शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कन गरी स्वीकृत गरिएको छ ।

### मूल्याङ्कन समिति

### हस्ताक्षर

१. प्रा.डा. देवीप्रसाद गौतम  
(विभागीय प्रमुख)

.....

२. उपप्रा. रजनी ढकाल  
(शोध निर्देशक)

.....

३. प्रा. केशव सुवेदी  
(बाह्य परीक्षक)

.....

मिति: २०७०/०९/२९

## कृतज्ञता ज्ञापन

अभय श्रेष्ठ (चड्की) को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षकको यस शोधपत्र मैले त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दशौं पत्रको प्रयोजनको लागि सम्मानीय गुरुआमा उपप्रा. रजनी ढकालज्यूको निर्देशनमा तयार गरेकी हुँ । आफ्नो कार्यव्यस्तताका बाबजुद पनि मलाई यो शोधपत्र तयार गर्ने सन्दर्भमा आवश्यक निर्देशन सल्लाह सुभावा एवम् सामग्री सङ्कलनका क्रममा सहयोग गर्नुहुने श्रद्धेय गुरुआमा प्रति म आभार प्रकट गर्दछु ।

प्रस्तुत शोधपत्र तयार गर्ने क्रममा महत्त्वपूर्ण सल्लाह सुभावा दिनु हुने यस विश्वविद्यालयका गुरुहरूप्रति आभारी छु । त्यसैगरी प्रस्तुत शीर्षकमा अध्ययन गर्नका निम्ति स्वीकृत प्रदान गर्नुहुने विभागीय प्रमुख डा. देवी प्रसाद गौतम तथा नेपाली केन्द्रीय विभागप्रति म हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । शोधपत्र तयारीका क्रममा सामग्री सङ्कलनका निम्ति सहयोग गर्ने त्रिभुवन विश्वविद्यालय केन्द्रीय पुस्ताकालय तथा नेपाली केन्द्रीय विभागको विभागीय पुस्ताकालय र शोधनायक अभय श्रेष्ठ प्रति आभार प्रकट गर्दछु ।

मेरो यस अध्ययनलाई यो क्षणसम्म ल्याई सदैव प्रेरणा, सहयोग र सद्भाव प्रदान गर्नुहुने मेरा पुज्यनीय पिता टंकप्रसाद भट्टराई, माता छलमाया भट्टराईका साथै सम्पूर्ण परीवारप्रति सदा ऋणी छु ।

अन्त्यमा यस शोधपत्र तयारीका निम्ति सहयोग गर्नुहुने सम्पूर्ण मित्रहरूप्रति तथा कम्प्युटर टङ्कनमा सहयोग गर्नुहुने क्रियटिभ कम्प्युटर सेन्टरप्रति हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु । यो शोधपत्र आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि सविनय अनुरोध सहित नेपाली केन्द्रीय विभाग त्रि. वि कीर्तिपुर समक्ष पेश गर्दछु ।

शैक्षिक सत्र २०६६/०६७

क्याम्पस रोल नं. २७९

मिति : २०७०/०९/२९

.....

इन्दिरा भट्टराई

स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्ष

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रि. वि कीर्तिपुर

## विषय सूची

|   | पृ. सं.     |
|---|-------------|
| <b>पहिलो परिच्छेद : शोध परिचय</b>         | <b>१-७</b>  |
| १.१ विषय परिचय                            | १           |
| १.२ समस्या कथन                            | २           |
| १.३ शोधकार्यको उद्देश्य                   | २           |
| १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा                  | ३           |
| १.५ अध्ययनको औचित्य, महत्त्व र उपयोगिता   | ४           |
| १.६ शोधकार्यको सीमाङ्कन                   | ५           |
| १.७ शोध विधि                              | ६           |
| १.७.१ सामग्री सङ्कलन विधि                 | ६           |
| १.७.२ सामग्री विश्लेषणको आधार             | ६           |
| १.८ शोधपत्रको रूपरेखा                     | ७           |
| <br>                                      |             |
| <b>परिच्छेद दुई : अभय श्रेष्ठको जीवनी</b> | <b>८-१९</b> |
| २.१ विषय परिचय                            | ८           |
| २.२ पुख्र्यौली र पारिवारिक पृष्ठभूमि      | ८           |
| २.३ जन्म र जन्मस्थान                      | ९           |
| २.४ वाल्यावस्था                           | ९           |
| २.५ शिक्षा दीक्षा                         | ९           |
| २.५.१ अक्षराम्भ                           | १०          |
| २.५.२ प्रारम्भिक तथा विद्यालयीय शिक्षा    | ११          |
| २.५.३ उच्चशिक्षा                          | १२          |
| २.६ पारिवारिक जीवन र सन्तान               | १३          |
| २.७ आर्थिक अवस्था                         | १४          |
| २.८ जागिरे व्यक्तित्व                     | १५          |

|      |                                    |    |
|------|------------------------------------|----|
| २.९  | संस्थागत संलग्नता                  | १६ |
| २.१० | रूचि र स्वभाव                      | १६ |
| २.११ | भ्रमण                              | १७ |
| २.१२ | साहित्य सिर्जनाको प्रेरणा र प्रभाव | १८ |
| २.१३ | मान सम्मान तथा पुरस्कार            | १९ |
| २.१४ | निष्कर्ष                           | १९ |

### **परिच्छेद तिन : अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्व २०-२८**

|       |  |    |
|-------|--|----|
| ३.१   | विषय परिचय   | २० |
| ३.२   | अभय श्रेष्ठका व्यक्तित्वका आयामहरू                     | २० |
| ३.२.१ | वाह्य व्यक्तित्व                                       | २१ |
| ३.२.२ | आन्तरिक व्यक्तित्व                                     | २१ |
| ३.३   | व्यक्तित्वका दुई पाटा                                  | २२ |
| ३.३.१ | साहित्यिक व्यक्तित्व                                   | २२ |
| ३.३.२ | साहित्येतर व्यक्तित्व                                  | २५ |
| ३.३.३ | अन्य व्यक्तित्व  | २७ |
| ३.३.४ | जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यिक लेखनका बिच अन्तः सम्बन्ध | २७ |
| ३.५   | निष्कर्ष   | २८ |

### **परिच्छेद चार : 'फूलविनाको शाखा' गजल सङ्ग्रहको अध्ययन २९-३८**

|     |  |    |
|-----|--|----|
| ४.१ | विषय परिचय   | २९ |
| ४.२ | गजलको सामान्य परिचय  | ३० |
| ४.३ | भाव वा विषयवस्तुका आधारमा 'फूलविनाको शाखा'<br>गजल सङ्ग्रहको अध्ययन | ३० |
| ४.४ | कल्पना प्रयोगका आधारमा 'फूलविनाको शाखा'<br>गजल सङ्ग्रहको अध्ययन    | ३२ |

|     |  |    |
|-----|--|----|
| ४.५ | लय तथा छन्द प्रयोगका आधारमा 'फूलविनाको शाखा'<br>गजल सङ्ग्रहको अध्ययन               | ३३ |
| ४.६ | बिम्ब, प्रतीक तथा अलङ्कार प्रयोगका आधारमा 'फूलविनाको शाखा'<br>गजल सङ्ग्रहको अध्ययन | ३५ |
| ४.७ | निष्कर्ष   | ३७ |

### **परिच्छेद पाँच : 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन ३९-५०**

|     |   |    |
|-----|---|----|
| ५.१ | विषय परिचय  | ३९ |
| ५.२ | कविताको सामान्य परिचय   | ३९ |
| ५.३ | संरचनाका आधारमा 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन                           | ४० |
| ५.४ | विषयवस्तुका आधारमा 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन                        | ४१ |
| ५.५ | बिम्ब, प्रतीक र अलङ्कार विधानका आधारमा 'कायाकल्प'<br>कविता सङ्ग्रहको अध्ययन | ४३ |
|     | ५.५.१ बिम्ब प्रयोग  | ४३ |
|     | ५.५.२ प्रतीक प्रयोग   | ४६ |
|     | ५.५.३ अलङ्कार प्रयोग  | ४७ |
| ५.६ | भाषाशैलीका आधारमा 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन                         | ४८ |
| ५.७ | निष्कर्ष  | ४९ |

### **परिच्छेद छ : 'तेस्रो किनारा' कथा सङ्ग्रहको अध्ययन ५१-६५**

|     |   |    |
|-----|---|----|
| ६.१ | विषय परिचय  | ५१ |
| ६.२ | कथाको सामान्य परिचय                                       | ५२ |
| ६.३ | कथानकका आधारमा तेस्रो किनारा कथा सङ्ग्रहको अध्ययन         | ५३ |
| ६.४ | पात्र वा चरित्रका आधारमा तेस्रो किनारा कथाको अध्ययन       | ५७ |
| ६.५ | दृष्टिबिन्दुका आधारमा तेस्रो किनारा कथा सङ्ग्रहको अध्ययन  | ५८ |
| ६.६ | परिवेशका आधारमा 'तेस्रो किनारा' नामक कथा सङ्ग्रहको अध्ययन | ६० |
| ६.७ | सारवस्तुका आधारमा 'तेस्रो किनारा' कथा सङ्ग्रहको अध्ययन    | ६१ |

|     |  |    |
|-----|--|----|
| ६.८ | भाषाशैलीको आधारमा 'तेस्रो किनारा' कथा सङ्ग्रहको अध्ययन | ६३ |
| ६.९ | निष्कर्ष   | ६४ |

**परिच्छेद सात : सारांश तथा निष्कर्ष** **६६-७०**

|     |          |    |
|-----|----------|----|
| ७.१ | सारांश   | ६६ |
| ७.२ | निष्कर्ष | ६८ |

**सन्दर्भ सामग्री सूची**



## सङ्क्षेपीकृत शब्द सूची

| सङ्क्षिप्त रूप | पूर्ण रूप                       |
|----------------|---------------------------------|
| अप्र.          | अप्रकाशित                       |
| आई.ए.          | इन्टर मिडियट अफ आर्टस्          |
| इ.सं.          | इस्वी संवत्                     |
| एस.एल.सी.      | स्कुल लिभिड सर्टिफिकेट          |
| ऐ.             | ऐजन                             |
| के.जी.         | किलोग्राम                       |
| क्र.सं.        | क्रमसङ्ख्या                     |
| गा.वि.स.       | गाउँ विकास समिति                |
| डा.            | डाक्टर                          |
| त्रि.वि.       | त्रिभुवन विश्वविद्यालय          |
| ने.के.वि.      | नेपाली केन्द्रीय विभाग          |
| ने.रा.प्र.प्र. | नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान |
| नि.मा.वि.      | निम्न माध्यमिक विद्यालय         |
| प्रा.          | प्राध्यापक                      |
| प्रा.वि.       | प्राथमिक विद्यालय               |
| पृ.सं.         | पृष्ठ सङ्ख्या                   |
| बि.ए.          | ब्याचलर अफ आर्टस्               |
| मा.वि.         | माध्यमिक विद्यालय               |
| वि.सं.         | विक्रम संवत्                    |
| वडा नं.        | वडा नम्बर                       |
| स्व.           | स्वर्गीय                        |
| सम्पा.         | सम्पादक/सम्पादन                 |

## परिच्छेद एक

### शोध परिचय

#### १.१ विषय परिचय

नेपाली साहित्यका कथा, कविता र गजल जस्ता क्षेत्रमा कलम चलाएका अभय श्रेष्ठ (चड्की) (२०२८) को हाल सम्म पुस्तककार कृतिका रूपमा फूल विनाका शाखा गजलसङ्ग्रह (२०६०), कायाकल्प कविता सङ्ग्रह (२०६२) र तेस्रो किनारा कथा सङ्ग्रह (२०६८) प्रकाशित छन् । सङ्ख्यात्मक रूपमा कम साहित्यिक सिर्जना लेखन गरे तापनि गुणात्मक, बौद्धिक तथा प्राज्ञिक दृष्टिकोणबाट ती रचनाहरू उत्कृष्ट मानिन्छन् । यिनै कृतिको अध्ययन र कवि श्रेष्ठको वास्तविकता प्रस्तुत गर्दै उनको जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गर्दै शोधपत्र तयार गर्नु नै ज्ञानात्मक पक्ष हो । त्यसैले प्रस्तुत शोधपत्रमा अभय श्रेष्ठ (चड्की) को जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

वि.सं. २०४७ मा समीक्षा पत्रिकामा गजल प्रकाशन गरी साहित्यिक यात्रामा प्रवेश गरेका श्रेष्ठ वि.सं. २०५९ सालमा वैतनी शीर्षकको लघुकथाबाट आख्यानका क्षेत्रमा प्रवेश गरेका थिए । गजल, कविता, कथा, लेख, निबन्ध जस्ता विधामा सक्रिय उनी दुई दशकदेखि नेपाली साहित्य र पत्रकारितामा क्रियाशील छन् । प्रज्ञा कथा पुरस्कार (२०६१), प्रहरी द्वैमासिक उत्कृष्ट रचना (२०६५) दृष्टि साप्ताहिक स्तम्भ सम्मान (२०६५) आम सञ्चारमा साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान (२०६०) र उत्कृष्ट गरिमा सम्मान (२०६९) बाट सम्मानित भै सकेका छन् । साहित्यमा युगीन समाजको कटु यथार्थलाई अभिव्यक्त गर्न सिपालु श्रेष्ठले आफ्नो जीवन भोगाइका घटनालाई आफ्ना कृतिमा समाहित गर्ने भएका कारण अन्य लेखकभन्दा भिन्न देखिन्छन् । साहित्य लेखनको प्रारम्भिक चरणमा मानसिक कुण्ठा, अर्न्तद्वन्द्व, यौन मनोवैज्ञानिक आदिको प्रयोगतर्फ झुकाव राख्ने श्रेष्ठले उत्तरार्द्ध चरणमा आम मानिसका दुःख, पीडा, समाजमा देखिने अन्याय र अत्याचारका बारेमा कलम चलाएको देखिन्छ । देशमा बढ्दै गइरहेको राजनीतिक विकृतिका विरुद्धमा उनको कलम साहित्य र पत्रकारिता दुवै विधा मार्फत

निरन्तर अधि बढिरहेको छ । यसरी साहित्यका विविध विधामा कलम चलाएका सिर्जनशील स्रष्टा श्रेष्ठका यी कृतिका अलावा थुप्रै फुटकर रचना प्रकाशित छन् । नेपाली साहित्य र पत्रकारितामा निरन्तर साधनामा रहेका यिनै श्रेष्ठको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन यस शोधकार्यमा गरिएको छ ।

## १.२ समस्या कथन

नेपाली साहित्यका विविध विधामा संलग्न अभय श्रेष्ठ (चड्की) ले नेपाली साहित्य जगतमा आफ्नो सफल साहित्यिक व्यक्तित्वको परिचय दिएका छन् । त्यस्तै पत्रकारिताका क्षेत्रमा पनि उनको बेग्लै पहिचान रहेको देखिन्छ । नेपाली साहित्य जगतमा चालीसको दशकदेखि नै साधनारत श्रेष्ठको विषयमा हालसम्म यदाकदा छिटपुट रूपमा टिका टिप्पणी, चर्चा परिचर्चा भए तापनि उनको समग्र जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन भएको देखिदैन । प्रस्तुत शोधपत्र अभय श्रेष्ठ (चड्की) को जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गर्न थालिएको हुँदा प्रस्तुत शोधपत्र निम्न लिखित समस्यामा केन्द्रित रहेको छ :

- (क) अभय श्रेष्ठको जीवनी पक्ष के कस्तो रहेको छ ?
- (ख) अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्व पक्ष के कस्तो रहेको छ ?
- (ग) अभय श्रेष्ठका साहित्यिक कृतिहरू के कस्ता रहेका छन् ?

## १.३ शोधकार्यको उद्देश्य

समस्या कथनमा प्रस्तुत गरिएका प्राज्ञिक समस्याहरूको समाधान गर्नु नै प्रस्तुत शोधकार्यको मूल उद्देश्य हो । त्यसैले प्रस्तुत शोधकार्य निम्न लिखित उद्देश्यहरूमा केन्द्रित रहेको छ ।

- (क) अभय श्रेष्ठको समग्र जीवनी पक्षको अध्ययन गर्नु,
- (ख) अभय श्रेष्ठको समग्र व्यक्तित्व पक्षको अध्ययन गर्नु,
- (ग) अभय श्रेष्ठका साहित्यिक कृतिहरूको सामान्य अध्ययन विश्लेषण गर्नु ।

## १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा

अभय श्रेष्ठका बारेमा विभिन्न लेखक, समालोचकहरूले विभिन्न पत्रपत्रिका र विभिन्न सन्दर्भमा सामान्य चर्चा र परिचर्चा गरेको पाइन्छ। उनको विषयमा पूर्ण तथा समग्र अध्ययन नभएको भए तापनि उनका बारेका लेखिएका यी फुटकर र सामान्य अध्ययन विश्लेषण सँग सम्बन्धित पूर्वकार्यहरूलाई यसरी प्रस्तुत गरिएको छ।

राजेन्द्र सुवेदी (२०६७) ले **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रहको अन्त्यमा टिप्पणी मूलक लेखमा-यस सङ्ग्रहका कथामा विषयको नवीनता र शिल्पको मौलिकता पाइन्छ, भन्दै कथाका मूल्यहरूको पहिचान बदलिदै गएको बताएका छन्। त्यसैगरी आजको यस परिस्थितिमा कथामा गति, यतिका सन्दर्भहरू, पात्र प्रयोग र परिवेशका योजनाहरू, विचार मनसिकताका द्वन्द्वहरू, कुतुहलका प्रश्नहरू, सारवस्तु र सन्देशका सन्दर्भहरू श्रेष्ठका कथामा स-सन्दर्भ उपस्थित भएको बताएका छन्।

राजेन्द्र वस्नेत (२०६२) ले **कान्तिपुर** पत्रिका (शनिवार १९ चैत्र) 'राजनीतिक कविता' नामक शीर्षकमा **कायाकल्प** कविता सङ्ग्रहको चर्चा गर्दै चङ्कीका कविताले पहिले हृदय छुन्छन् र दिमागमा ठक्कर दिएर पाठकलाई जुरूक्क उचाल्छन् भनी चर्चा गर्दै उनका कथामा राजनीतिक घटना र राजनीतिले पारेको प्रभाव र समसामयिक यथार्थको चित्रण पाइन्छ, भनेका छन्।

वसन्त वस्नेत (२०६८) ले **गरिमा** पत्रिका (वर्ष २९, पूर्णाङ्क १४५) मा अभय श्रेष्ठको **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रहको समीक्षा लेख लेखेका छन्। यस लेखमा उनले तीव्र बहाव भएको नदीमा भवाम्म हाम फाल्दा उत्पन्न हुने तरङ्ग जस्तै तिख्खर भाषा चलाउने अभयको यो कविता नेपाली कथाको भर भराउँदो नयाँ धार र शैली बुझ्न भए पनि पढ्न जरूरी रहेको बताएका छन्।

गोविन्द वर्तमान (२०६८) ले **नागरिक** पत्रिका (जेठ १४) मा **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रहको समीक्षा लेख्ने क्रममा अभय श्रेष्ठका बारेमा लेखेका छन्। उनले गजल, कविता, कथा र लेख निबन्धहरूमा चङ्की श्रेष्ठको नामले राम्ररी चिनिइसकेका स्रष्टाले आफ्नो त्यो नामलाई अभय नाममा रूपान्तरित गरेका छन्। उनले अगाडि लेखेका

छन्, एउटा नामको यस्तो वियोगान्त र अर्को नामको यस्तो प्रारम्भ वास्तवमा अलि असजिलो घटना हो र आवश्यकताले त्यसलाई सजिलो बनाइदिदो रहेछ भनेर चर्चा गरेका छन् ।

हरि अधिकारी (२०६८) ले कान्तिपुर (जेठ २८ गते) मा अभय श्रेष्ठको कथा सङ्ग्रहको समीक्षात्मक लेख लेखेका छन् । उक्त लेखमा उनले तेस्रो किनारामा प्रकाशित कथाहरूमा सर्जक अभय श्रेष्ठले विषयवस्तुको चयन प्रस्तुति र शैलीका हिसावले आफ्नो विशिष्ट छाप दिने कोशिस गरेका छन् भन्दै अभय अन्य कथाकार भन्दा धेरै लाग्ने बताएका छन् ।

ललिजन रावल (२०६०) ले फूल विनाको शाखा गजल सङ्ग्रहको श्रेष्ठका गजलमाथि विश्रुद्धखल भूमिका नामक शीर्षकमा आफ्ना गजलका पङ्क्तिहरूमा युवा गजलकार चङ्की श्रेष्ठ आफुले भोगेको वर्तमानलाई लालित्यपूर्व भाषा र शिल्पमा अभिव्यक्त गर्दछन् । नेपाली गजलमा देखा परेका थुप्रै विसङ्गति र विकृतिका विरुद्ध एउटा सजग र सचेत गजलकारका रूपमा चङ्की श्रेष्ठ देखापर्दै आएका छन्, यो नेपाली गजल विधाको आशलाग्दो र उज्यालो पक्ष हो भनी चर्चा गर्नुका साथै फूलविनाको शाखा नामक गजल सङ्ग्रह गजलको विकास क्रममा एउटा विकसित पाइला हो भनी चर्चा गरेका छन् ।

यसरी अभय श्रेष्ठ र उनका कृतिहरूका बारेमा भएका यी सङ्क्षिप्त अध्ययन विश्लेषणले अभय श्रेष्ठको जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्वको विश्लेषण गर्ने क्रममा पुरै साहयता नमिले तापनि यस अध्ययनको लागि मार्गनिर्देश गर्ने काम गरेको छ ।

## १.५ अध्ययनको औचित्य, महत्त्व र उपयोगिता

प्रस्तुत शोधपत्रका माध्यमबाट एकातिर नेपाली साहित्यका सर्जक अभय श्रेष्ठलाई चिनाउने प्रयास गरिएको छ । अर्कातिर उनका जीवनी र व्यक्तित्वका पाठालाई पाठक सामु चिनाएर उनका कृतिहरूको विधातत्त्वका आधारमा समग्र विश्लेषण गरिएको छ । यसबाट अभय श्रेष्ठलाई पाठक सामु चिनाउनका साथै उनका

साहित्यिक कृतिका बारेमा स्पष्ट धारणा व्यक्त गरिनुका साथै कृतिको विश्लेषण गर्ने मार्गनिदेश प्राप्त हुने हुदाँ प्रस्तुत शोधकार्यको औचित्य एवम् महत्त्व स्पष्ट हुन्छ ।

त्यस्तै अभय श्रेष्ठद्वारा लिखित उनका साहित्यिक कृतिका बारेमा विभिन्न समालोचक विद्वानहरूद्वारा विभिन्न ठाउँमा गरिएका टिका टिप्पणी, समीक्षा, समालोचना तथा विवेचनाले यसको अध्ययन पूर्ण हुन नसकेको परिप्रेक्ष्यमा समष्टिगत र वस्तुगत विश्लेषण गरी तयार पारिएको प्रस्तुत शोधपत्रको उचित महत्त्व देखिन्छ । त्यस्तै प्रस्तुत शोधपत्रबाट अभय श्रेष्ठका अन्य पक्षहरू तथा उनका कृतिहरूको अध्ययन विश्लेषण गर्ने भावी शोधार्थीका निम्ति प्रस्तुत शोधपत्र निकै उपयोगी सिद्ध बन्न पुगेको छ ।

#### १.६ शोधकार्यको सीमाङ्कन

अभय श्रेष्ठको पारिवारिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक आदि पृष्ठभूमिमा विकसित भएको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन नै प्रस्तुत शोधपत्रको क्षेत्र रहेको छ । श्रेष्ठको साहित्यिक साधनाका क्रममा वि.सं. २०७० सम्मका प्रकाशित र अप्रकाशित कृतिहरूलाई यस शोधपत्रमा सूचिवद्ध गरी प्रकाशित कृतिको मात्र अध्ययन विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ । श्रेष्ठका जीवनका मुख्य घटनाहरू, शैक्षिक जीवन तथा जागिरे जीवनका संस्मरणहरू र उनका व्यक्तिगत जीवनका घटनाहरू प्रस्तुत शोधपत्रको जीवनी शीर्षकको परिच्छेदमा प्रष्ट पारिएको छ । उनको जीवनका विभिन्न पाटाहरूको अध्ययन प्रस्तुत शोधको व्यक्तित्व परिच्छेदमा गरिएको छ भने उनका प्रकाशित पुस्तकाकार साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन तथा विश्लेषण प्रस्तुत शोधपत्रको कृतित्व अन्तर्गतको शीर्षकमा गरिएको छ । उनको कृतित्वको अध्ययन गर्ने क्रममा उनका आजसम्म पुस्तकाकार कृतिका रूपमा प्रकाशित **फूलविनाको शाखा** (गजल सङ्ग्रह), **कायाकल्प** (कविता सङ्ग्रह) र **तेस्रो किनारा** (कथा सङ्ग्रह) को विधातत्त्वका आधारमा अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ । यीनै उल्लेखित शीर्षक तथा उपशीर्षकमा आधारित भएर उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गर्नुनै प्रस्तुत शोधकार्यको सीमा मानिन्छ ।

## १.७ शोध विधि

### १.७.१ सामग्री सङ्कलन विधि

प्रस्तुत शोधपत्रमा सामग्रीहरूको सङ्कलन पुस्तकालयीय विधि र अन्तर्वाता विधिका आधारमा गरिएको छ । साथै यस शोधपत्रको निमित्त सामग्री सङ्कलन विधि अन्तर्गत प्राथमिक र द्वितीयक दुबै प्रकारका सामग्री सङ्कलनका स्रोतहरूको उपयोग गरिएको छ ।

प्राथमिक स्रोत अन्तर्गत प्रस्तुत शोधपत्रमा सामग्री सङ्कलन गर्दा शोधनायक सँग प्रत्यक्ष भेटघाट र सम्पर्कबाट लिखित एवम् मौखिक रूपमा आवश्यक जानकारी लिइएको छ । उनका पारिवारिक सदस्यसँग र उनका निकटतम व्यक्तिसँग समेत आवश्यक जानकारी लिइएको छ । यसै गरी प्राथमिक स्रोतका सामग्री सङ्कलन अन्तर्गत साहित्यकार अभय श्रेष्ठका कृतिहरू र तिनका भूमिका र मन्तव्य प्रस्तुत शोध पत्रमा प्राथमिक स्रोतका सामग्रीको रूपमा लिइएको छ ।

त्यस्तै द्वितीय स्रोतका सामग्री अन्तर्गत विभिन्न पुस्तकहरूमा प्राप्त समालोचकीय लेख, पुस्तकालयीय अध्ययन, साहित्यिक लेख र समीक्षा तथा सञ्चार माध्यम र टेलिफोनको प्रयोग आदि द्वितीय स्रोतका सामग्रीका रूपमा लिइएको छ ।

### १.७.२ सामग्री विश्लेषणको आधार

प्रस्तुत शोधपत्रको अध्ययन विधि अन्तर्गत वर्णानात्मक एवम् विश्लेषणात्मक विधिको प्रयोग गरिएको छ । यस शोधकार्यमा पुस्तकालय कार्यबाट प्राप्त भएका सामग्रीको सङ्कलन विश्लेषण, वर्गीकरण तथा मूल्याङ्कन गरिएको छ । अभय श्रेष्ठको कृतित्वको अध्ययन विधातत्त्वका आधारमा गरिएको छ भने उनको जीवनी र व्यक्तित्वको विश्लेषण जीवनीपरक समालोचनामा आधारित छ ।

## १.८ शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रको संरचनालाई सुसङ्गठित र व्यवस्थित रूपमा प्रस्तुत गर्नका लागि निम्न परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ :

- परिच्छेद एक : शोध परिचय
- परिच्छेद दुई : अभय श्रेष्ठको जीवनी
- परिच्छेद तीन : अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वको अध्ययन
- परिच्छेद चार : 'फूलविनाको शाखा' गजल सङ्ग्रहको अध्ययन
- परिच्छेद पाँच : 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन
- परिच्छेद छ : 'तेस्रो किनारा' कथा सङ्ग्रहको अध्ययन
- परिच्छेद सात : सारांश तथा निष्कर्ष

यस शोधकार्यका लागि आवश्यक विभिन्न पुस्तक, पत्रपत्रिका, अप्रकाशित शोधपत्रहरूलाई सन्दर्भ सामग्री सूचीका रूपमा राखिएको छ ।



## परिच्छेद दुई

### अभय श्रेष्ठको जीवनी

#### २.१ विषय परिचय

अभय श्रेष्ठ नेपाली साहित्यका विविध विधाहरू मध्ये गजल, कथा र कविता जस्ता विधामा सक्रिय रहेका छन् । यस परिच्छेदमा अभय श्रेष्ठको जीवनी पक्षको अध्ययन गरिएको छ । उनको जीवनीको अध्ययनका लागि जन्मदेखि अहिलेसम्म भएका र गरेका कार्यहरू तथा घटनाहरूका साथै उनको पुख्र्यौली घरपरिवार, वाल्यकाल, शिक्षा दीक्षा, विवाह सन्तान तथा दाम्पत्य जीवन, रूचि, स्वभाव, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति आदिको अध्ययन गरिएको छ ।

#### २.२ पुख्र्यौली र पारिवारिक पृष्ठभूमि

भक्तपुरका स्थायी बासिन्दा श्रेष्ठ कुलमा जन्मिएका अभय श्रेष्ठका पुर्खाहरू पशुपालन र खेती किसानी पेसा सम्हाल्दै आएको देखिन्छ । उनका पिता स्वर्गीय पूर्ण बहादुर श्रेष्ठ पनि सिकर्मी पेसा गरेर जीविका निर्वाह गरेको बुझिन्छ (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) यसका अलवा उनका पिता तथा माता खेती, किसानी र पशुपालनमा लागेका थिए । आम्दानीको खासै भरपर्दो पेसा नभएका कारण उनीहरूको आर्थिक अवस्था केही कमजोर नै देखिन्छ (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । सनातन हिन्दु धर्ममा विश्वास गर्दै आएको श्रेष्ठ परिवार हिन्दु धर्मका कट्टर अनुयायी मानिन्छन् ।

अभय श्रेष्ठका दुई दाजुभाइ र दुई दिदी बहिनी रहेको देखिन्छ । यी मध्ये अभय कान्छा छोराका रूपमा जन्मिएका हुन् । उनका दाजु ठुलो बाबु श्रेष्ठ हुन् । वि.सं. २०२५ मा जन्मिएका दाजु हाल सेभ द चिल्ड्रनमा कार्यरत छन् । दुई दिदी मध्ये जेठी सुशिला (२०२१) को ललितपुरको सिद्धपोखरीमा विवाह भई गृहस्थी जीवन बिताइरहेकी छिन् भने कान्छी दिदी सानुमाया श्रेष्ठ (२०२२) पनि ललितपुरमा नै विवाह गरेर

गृहस्थी जीवन बिताइरहेकी छिन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । दुई भाइहरू छुट्टा भिन्ना भएर आ-आफ्नो परिवारका साथै रहेका छन् ।

### २.३ जन्म र जन्मस्थान

अभय श्रेष्ठ (चड्की) को जन्म वि. सं. २०२८ भदौ २५ गते दिउँसो भक्तपुर जिल्लाको गुन्डु गा.वि.स. वाड नं ९मा भएको हो । पिता स्व.पूर्णबहादुर श्रेष्ठ र माता स्व. हीरा देवी श्रेष्ठको कोखबाट कान्छा सुपुत्रका रूपमा उनको जन्म भएको हो । (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । उनको न्वारनको र चिनाको नाम रोम कुमार श्रेष्ठ हो । हजुर बुबा स्व. पदम बहादुर श्रेष्ठ र हीरा देवी श्रेष्ठका दुई भाई छोरा मध्ये अभय श्रेष्ठ कान्छा छोरा तर्फका कान्छा नाति हुन् ।

### २.४ वाल्यावस्था

वाल्यकाल मानव जीवनको प्राथमिक चरण हो । वाल्यकालमा बालकको पृष्ठभूमि निर्माणमा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपमा सामाजिक, पारिवारिक र बालक हुर्केको वरिपरिको वातावरणले महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । यही आधारमा भविष्यमा त्यो व्यक्तिको जीवन कता तिर मोडिन्छ भन्ने कुराको स्पष्ट सङ्केत मिलिसकेको हुन्छ ( भेटवाल, २०६९ : ८) । अभय श्रेष्ठको वाल्यकाल भक्तपुरको गुण्डुमा नै बितेको देखिन्छ ((वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । आफू नेवारी परिवारमा हुर्किएको भए तापनि बाह्यमा साथीका सङ्गतमा वाल्यकाल बिताएको देखिन्छ । यसरी उनीहरूका सङ्गतका कारण उनलाई नेवारी भन्दा साधारण नेपाली भाषा बढी राम्रोसँग बोल्न आउँछ । बाबुको यथेष्ट आम्दानी नभएका कारण र चार जना सन्तानहरूका बीचमा हुर्किन परेका कारण उनको वाल्यकाल केही अभावमा बितेको देखिन्छ । ठूलो परिवार र यथेष्ट सम्पत्ति नभएका कारण वाल्यकालमा दुःख भैल्लु परेको देखिन्छ (वि. सं. २०६९।१२।२५

गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । बाबुसँग सिकर्मी काम गर्दै स्कूल पढ्दै गरेका थिए ।

## २.५ शिक्षा दीक्षा

नेपाली साहित्यका विविध विधामा कलम चलाएका श्रेष्ठको शिक्षारम्भ वि.सं. २०३४ मा छ वर्षको उमेरमा भएको देखिन्छ । विभिन्न समस्याहरूको सामना गर्दै बी.ए. सम्मको अध्ययन पुरा गरेको देखिन्छ । यस परिच्छेदमा उनको अक्षरारम्भ, प्रारम्भिक तथा विद्यालयीय शिक्षा, उच्च शिक्षा जस्ता उपशीर्षकमा आधारित भएर उनको शिक्षा दीक्षाको अध्ययन गरिएको छ ।

### २.५.१ अक्षरारम्भ

अभय श्रेष्ठ मूलतः शैक्षिक परिवेशमा जन्मिएको देखिन्छ । उनका बाबु पूर्ण बहादुर श्रेष्ठ औपचारिक शिक्षाबाट वञ्चित भएर पनि अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त गरेका थिए । अनौपचारिक शिक्षा मार्फत् पनि उनी बढी नै विज्ञ बन्न पुगेको देखिन्छ । पारिवारिक अवस्था न्यून भएर पनि आफुले बाल्यकालमा पाएको दुःख पीडा र शिक्षा प्राप्त गर्नबाट वञ्चित भएको अनुभवबाट विरक्त भएका कारण सन्तानहरूको शिक्षा प्रति बढी जागरूक देखिन्छन् । यसैकारण उनले आफ्नो छोरा अभयलाई घरमै सामान्य वर्णमालाका पुस्तक ल्याएर अक्षर चिनाइदिएको देखिन्छ । यसरी अभय श्रेष्ठको प्रारम्भिक शिक्षा विशेष गरी घरपरिवार र प्रकृतिको प्रेरणाबाट भएको देखिन्छ । वरिपरिको शिक्षित वातावरणमा हुर्किएका र बौद्धिक व्यक्तिहरूको भेटघाटबाट पनि उनको प्रारम्भिक शिक्षामा सघाउ पुगेको देखिन्छ । अभय सानैदेखि जिज्ञासु स्वभावका भएका कारण पनि सिकाइमा सघाउ पुगेको देखिन्छ (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी उनको शिक्षारम्भ घरमा आफ्नै बाबुबाट भएको देखिन्छ ।

## २.५.२ प्रारम्भिक तथा विद्यालयीय शिक्षा

आफ्ना बाबु स्व. पूर्ण बहादुर श्रेष्ठका साथ अक्षराम्भ गरेर घरमै सामान्य शिक्षा प्राप्त गरेका अभय श्रेष्ठ (चड्की) को औपचारिक अध्ययनको सुरुवात वि.सं. २०३४ सालतिर ६ वर्षको उमेरदेखि भएको हो । वि.सं. २०३४ सालमा ददिकोटको बाल चेतना प्राथमिक विद्यालयमा कक्षा १ मा भर्ना भएका थिए (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी १ देखि ३ कक्षा सम्मको शिक्षा सोही स्कुलमा लिएका हुन् भने कक्षा ४ देखि कक्षा ७ सम्म उनको मामा घर नजिकै रहेको अरनिको माध्यमिक विद्यालय भक्तपुरमा अध्ययन गरेका थिए । बाबु अनौपचारिक शिक्षाबाट शिक्षित भएका कारण स्कुल जानुपूर्व नै धेरै कुरा सिकिसकेका श्रेष्ठले विद्यालयमा गुरुहरूको निर्देशन तथा घरमा बाबुको नियन्त्रण, निगरानीले छोटो समयमै उल्लेख्य ज्ञान हासिल गरिसकेका थिए । उनको त्यो पढाइ प्रतिको लगाव र मिहिनेत देखेर गुरुहरू खुबै प्रशंसित हुन्थे । घरको अवस्था पनि त्यति सबल नभएको र मामाघरबाट सो स्कुल नजिक पर्ने भएका कारण उनी सोही स्कुलमा पढेका हुन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी)। त्यस्तै कक्षा आठ देखि दश सम्मको अध्ययन विद्यार्थी निकेतन माध्यमिक विद्यालय भक्तपुरबाट गरे । वि.सं. २०४६ मा दश कक्षा उत्तीर्ण गरेका अभयले सोही वर्ष (२०४६) मा प्रवेशिका परीक्षा दिएर दोस्रो श्रेणीमा उत्तीर्ण गरे (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । घरदेखि स्कुलको दुरी अलिकति टाढा भएका कारण त्यस समयमा शिक्षा प्रति त्यति सचेत र जागरूक भएर पढ्ने विद्यार्थीको सङ्ख्या निकै कम थियो । पारिवारिक शैक्षिक वातावरण र विज्ञ व्यक्तिहरूको सङ्गतका कारण उनको पढाइ राम्रो थियो । उनी कक्षामा अन्य विद्यार्थीका तुलनामा केही जान्ने विद्यार्थीका रूपमा चिनिएको देखिन्छ । उनीसँग सिकाइ माग्ने साथीहरूको लामो लाइन लाग्थो । वि.सं. २०४६ सालमा एस.एल.सी. उत्तीर्ण हुँदा उनको गाउँमा ठूलो सम्मान भएको थाहा हुन्छ (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । त्यस समयमा एस.एल.सी. पास गर्ने व्यक्ति एकदमै न्यून

थिए । यसरी उनको पारिवारिक शैक्षिक वातावरणका विचमा रहेर सहज र सुखपूर्वक नै माध्यमिक तह सम्मको अध्ययन पुरा भएको देखिन्छ ।

### २.५.३ उच्चशिक्षा

सानै उमेरमा आमाको स्नेह गुमाएका अभय उनी पाँच वर्षको हुँदा आमाले सदाको लागि छाडेर गएको देखिन्छ । बाबु सचेत र दीर्घ सोच भएका कारण उनलाई आमाको खाँचो हुन दिएनन् । स्नेही बाबु र मावलीको माया ममतामा बाल्यकाल बिताएका श्रेष्ठ उच्च शिक्षाको थालनी पाटन क्याम्पसबाट गरेका हुन् । वि.सं. २०४७ मा पाटन क्याम्पसमा आई.ए. तहमा भर्ना भए (ऐजन) । आमाको मृत्यु भएको र बाबुको राम्रो जागिर नभएका कारण आर्थिक अवस्था नयून भएकाले बाबुसँगै सिकर्मी काम गर्दै पढ्दै गर्न बाध्य भए । आई.ए. तहमा नेपाली अर्थशास्त्र र राजनीतिक शास्त्रको अध्ययन गरेका श्रेष्ठ अ.ने.रा.स्व.वि.यू. तर्फ भुकाव राख्ये । विविध समस्याका बावजुद वि.सं २०४८ मा आई.ए. उत्तीर्ण गरे (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । वि.सं. २०४८ सालबाटै आर्थिक अवस्था अलि सङ्कटपूर्ण भएको कारण **क्लेक्सन** नामक पत्रिकामा विज्ञापन सङ्कलकको काममा लागे र २०४८ साल देखि आफ्ना लेख रचनाहरू पत्रिकामा छपाएर केही आर्थिक जोहो गर्दै वि.सं. २०४९ मा बी.ए. मा भर्ना भए (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । आई.ए.मा नेपाली अर्थशास्त्र र राजनीतिशास्त्रको अध्ययन गरेका श्रेष्ठले वि.सं. मा समाजशास्त्र र राजनीतिकशास्त्रको अध्ययन गरेका हुन् । आई.ए पाटन क्याम्पसमा पढेका श्रेष्ठले वि.ए. को अध्ययन त्रिचन्द्र क्याम्पसमा गरेको देखिन्छ । वि.सं. २०५१ मा बी.ए. को प्रमाण पत्र लिएका श्रेष्ठ आर्थिक समस्याका कारण र आमा बाबुको अभावमा त्यति नै शिक्षामा सन्तुष्ट बनेर बसेका छन् । जीवन सङ्घर्षपूर्ण छ, सङ्घर्ष गरेर नै जिउन सिक्नुपर्छ भन्ने मान्यता बोकेका अभय जीवनका अनेक आरोह अवरोहको सामना गर्दै उच्च शिक्षा सम्म हासिल गर्न पुगेका हुन् । आफु यस स्थानसम्म आउन आफ्ना दुई दिदीहरू सुशिला र सानुमाया प्रति यथेष्ट रूपमा कृतज्ञता प्रस्तुत गर्दै सधैं उहाँप्रति ऋणी रहेको बताउँछन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते

साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । जे होस अभय श्रेष्ठ एउटा सङ्घर्षशील व्यक्तित्व रूपमा चिनिन्छन् ।

## २.६ पारिवारिक जीवन र सन्तान

अभय श्रेष्ठ (चंकी) को विवाह २१ वर्षको उमेरमा वि.सं. २०४९ साल असोज घटस्थापनाका दिन काठमाडौं स्थित बानेश्वर निवासी बुद्धिलाल महर्जन र नानुमाया महर्जनकी सुपुत्री अनिता महर्जनसँग भएको हो । वि.सं. २०४९ मा विवाह बन्धनमा बाँधिनु पूर्व श्रेष्ठका जीवनमा चार जना महिला प्रेमिकाका रूपमा आएको देखिन्छ । यसरी चार जनासँग प्रेम सम्बन्ध गाँसेर पनि अर्न्तजातीय प्रेम भएका कारण सफल हुन नसकेको बताउँछन् (ऐजन) । उनले एक जना महिलासँग एकतर्फी प्रेम गरेका थिए भने एक जना महिलाको प्रेम प्रस्ताव अस्वीकार पनि गरेको देखिन्छ । जे होस उनको विवाह भने प्रेम विवाह नभएर मागी विवाह गरेको बताउँछन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) अनिता महर्जनसँग विवाह बन्धनमा बाँधिए पछि पहिलो सन्तानका रूपमा वि.सं. २०५२ मा छोरा अमर श्रेष्ठको जन्म भयो । अमर हाल लिभर पुल कलेज बानेश्वरमा साइन्स विषयमा अध्ययनरत छन् । श्रेष्ठ दम्पतिको दोस्रो सन्तानका रूपमा वि.सं. २०५४ मा अशोक श्रेष्ठको जन्म भयो । अशोक हाल खोपा कलेजमा कक्षा ११ मा अध्ययनरत छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी सानो र सुखी परिवारले श्रेष्ठ दम्पति सन्तुष्ट देखिन्छ ।

आफु पत्रकारितामा लागेका र श्रीमती घरको काममा व्यस्त रहने छोराहरू कलेज पढ्ने यही नै उनका लागि सन्तुष्टि भएको बताउँछन् । मागी विवाह गरेको भए तापनि आफुलाई बुझ्ने श्रीमती पाएकोमा आफु खुशी रहेको बताउँछन् । श्रीमतीसँग सामान्य ठाकठुक बाहेक कहिल्यै मनमुटाव नभएका श्रेष्ठले श्रीमान् श्रीमतीको भगडा परालको आगो हो भन्दै धित मरून्जेल हाँस्दै बताए (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । सुरूमा आर्थिक

स्थिति दुर्बल भए पनि हाल श्रीमती र आफ्नो मिहिनेत परिश्रम र लगनशिलताद्वारा आर्जित सम्पत्तिले परिवारको आर्थिक स्थिति राम्रो भएको देखिन्छ । हाल उनको परिवारमा श्रेष्ठ दम्पति र दई छोरा गरेर जम्मा चार जनाको परिवार रहेको छ (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । श्रीमान्ले पनि आफ्नो समस्या बुझिदिने भएका कारण दाम्पत्य जीवन सहज भएको अनिताको भनाइ छ (श्रीमतीबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी उनको दाम्पत्य जीवन तथा पारिवारिक जीवन सुखमय रहेको र समाजको निम्ति उदाहरणीय बन्न पुगेको देखिन्छ ।

## २.७ आर्थिक अवस्था

भक्तपुरको गुन्डु गा.वि.स. भौगोलिक हिसाबले विकट नै मानिन्छ । सूर्य विनायकबाट तिन घण्टा भित्र हिड्नु पर्ने सो गाउँ सहरको छेउमा अवस्थित विकट गाउँ हो । त्यहाँका प्रायजसो जनताको आर्थिक अवस्था मध्यम र निम्न स्तरको रहेको छ । आय आर्जनको मुख्य स्रोतका रूपमा खेतीपाती र पशुपालन नै बढी देखिन्छ । थोरै मात्रामा मात्र निजामति र सरकारी कर्मचारी र केही वैदेशिक रोजगार र कृषिमै आश्रित देखिन्छन् । अभय श्रेष्ठ पनि वाल्यकालमा धेरै कष्ट भोग्नु परेको बताउँछन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । आफु पाँच वर्षको हुँदै आमाको मृत्यु भएको र पाँच जनाको परिवार बाबुको किसानी पेसामा आश्रित भएका कारण जीवन धान्न अलि गाह्रो भएको देखिन्छ । घरमा जति दुःख भए पनि मावलीमा हप्ता बिताएको अनुभव भने श्रेष्ठसँग छैन (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) भन्दै बिगतका घटना सम्झदै श्रेष्ठ भावुक हुन्छन् ।

श्रेष्ठले आई.ए. पढ्न थालेबाट आर्थिक अभावका कारण जागिर खान थालेका हुन् । राम्रो जागिरको खाजीमा काममा लाग्दै छाड्दै गरेका श्रेष्ठ द राइजिङ् नेपालमा जागिर खान थालेपछि आर्थिक सुधार आएको देखिन्छ । पुख्र्यौली सम्पत्ति त्यति नभएको र दुई छाक खान पनि सङ्घर्ष गर्नुपर्ने अवस्थाका श्रेष्ठले हाल गुन्डुमा नै घर र जग्गा

जमिन सबै जोडेको बताउँछन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी श्रेष्ठको आर्थिक स्थिति बिगतको तुलनामा धेरै राम्रो बन्दै गएको छ भने आम्दानी र जीवन स्तरमा पर्याप्त सुधार भएको देखिन्छ ।

## २.८ जागिरे जीवन

अभय श्रेष्ठले वि.सं. २०४६ सालमा विज्ञापन सङ्कलकका रूपमा कनेक्सन पत्रिकाबाट जागिरको सुरुवात गरेका हुन् । सो पत्रिकामा आफूलाई अनुकूल नभएका कारण एक महिना मात्र काम गरेको बताउँछन् । त्यसपछि जागिर खोज्ने क्रममा भौतारिएका श्रेष्ठ वि.सं. २०४८ देखि वि.सं. २०५२ का बिचमा विभिन्न पत्रिकामा लेखहरू लेखेर जिवीका निर्वाह गरेको देखिन्छ । त्यसपछि वि.सं. २०५२ मा गोरखापत्र द राइजिङ् नेपालमा सम्वाददाताका रूपमा नियुक्त भएर कामको सुरुवात गरेका थिए (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यस पत्रिकामा पनि उनलाई भने जस्तो नभएको कारण जम्मा दुई वर्ष मात्र काम गरे । अझ राम्रो जागिर खोज्ने क्रममा वि.सं. २०५४ मा नेपाल समाचार पत्रमा सम्वाददाताका रूपमा छिरे । त्यहाँ पनि उनी तिन वर्ष भन्दा बढी टिक्न सकेनन् । वि.सं. २०५७ देखि वि.सं. २०६५ सम्म स्पेस टाइम्स दैनिकमा सम्वाददाताका रूपमा आवद्ध हुँदै आए । वि.सं. २०६५/६६ मा नागरिक दैनिकमा समेत काम गरेका श्रेष्ठ हाल द राइजिङ् नेपालमा भाषा सम्पादकका रूपमा कार्यरत छन् (ऐजन) । सानैदेखि पत्रकार बन्ने सपना बुनेका श्रेष्ठ पत्रकारितामा बाहिर राम्रो देखे पनि भित्र त्यति राम्रो नभएको बताउँछन् । सानै देखिको चाहना र सपना तथा सोखका कारण राम्रो तलब नभए तापनि आफू सन्तुष्ट भएको बताउँछन् ।

यसरी अभय कनेक्सन पत्रिकामा विज्ञापन सङ्कलकको काम देखि द राइजिङ् नेपालमा भाषा सम्पादनसम्मको जागिरका बिचमा आएका समस्या र चुनौतिलाई सामना गर्दै पत्रकारितामा होमिएका हुन् । आफू निष्पक्ष पत्रकारिता गर्ने, कसैको चाकरी, चाप्लुसी, नातावाद र कृपावादबाट अलग रहने कुशल पत्रकार भएको कुरामा गर्व गर्दै यही पेसामा सन्तुष्ट रहेको बताउँछन् ।



## २.९ संस्थागत संलग्नता

अभय श्रेष्ठ समाज र सहित्यप्रति धेरै रूचि राख्ने स्वभावका व्यक्ति हुन् । विद्यार्थीकालदेखि नै साहित्य प्रतिको रूचि श्रेष्ठमा ज्यादै रहेको देखिन्छ । विद्यार्थीकालमा कविता भनेर लेखेका उनका आभ्यासिक भावनाहरू कतै प्रकाशित भएका छैनन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । उनी विद्यार्थीकालमा अनेरास्ववियुको सदस्यता लिएका थिए । राजनीतिमा अनेरास्वयु तर्फ भुकाव राख्ने उनी वाम राजनीतितर्फ क्रियाशील रहेका व्यक्ति हुन् (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । श्रेष्ठ प्रत्यक्ष रूपमा कुनै संघ संस्थामा संलग्न नरहे तापनि अप्रत्यक्ष रूपमा विभिन्न संघ संस्थामा आवद्ध रहेका छन् ।

## २.१० रूचि र स्वभाव

पहिलो पल्ट भट्ट टाढाबाट हेर्दा भावुक र निरासिलो जस्ता देखिने अभय श्रेष्ठ मूलतः सरल र मिलनसार व्यक्ति हुन् । अनुशासित र सबैलाई सम्मान गरेर शिष्टचार पूर्वक बोल्ने श्रेष्ठ गम्भीर स्वभावका देखिए तापनि व्यवहारमा हाँसो, ठट्टा र मनोरञ्जन रूचाउँछन् । उनी सँगको करिब दुई घण्टाको समय बिताउदा उनले जीवनमा भोगे भनेका घटना सायद उनका हैनन् जस्तो भान भयो । पुरा दिल खोलेर हाँस्ने श्रेष्ठ हाँसो, ठट्टा र सामान्य भाषाका माध्यमले साहित्य मार्फत् समाजका कुरीति माथि व्यङ्ग्य वाण प्रहार गर्दछन् । कसैमाथि अन्याय अत्याचार नगर्ने र गरेको पनि सहन नसक्ने श्रेष्ठ फुर्सदको समयमा लेख रचनातर्फ उन्मुख देखिन्छन् । सानो ठूलो नभनी देखेको सबै काममा क्रियाशील रहने श्रेष्ठ जाँगरिला र फुर्तिला पाराका देखिन्छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । अन्तर्वार्ता लिने क्रममा उनको भनाई यसप्रकार रहेको छ, “मलाई मिष्टभाषी मन पर्छ, म आफू पनि नाचिरहेको बोलिदन, नचाहिदो गर्दिन र त्यस्तो मन पनि पर्दैन, जीवन सङ्घर्षशील छ, सङ्घर्ष गर्नुपर्छ, अरूलाई ठगेर होइन आफ्नै मेहेनतमा रमाउनु पर्छ, साथीभाइ, इष्टमित्रसँग हाँसेर बोल्दैमा केही सकिदैन, पीडा नहुने मान्छेको छ र ? तर लुकाएर हाँस्न सिक्नुपर्छ । खोक्रो आडम्बर छाँट्नु हुँदैन”

(वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । खानपानमा उनको रोज्ने बानी छैन । खानामा दाल, भात, रोटी, तरकारी र माछा मासु बढी रुचाउँछन् । घरमा पकाएर दिएको कहिल्यै नमिठो भन्ने बानी उनमा छैन । गुलियो नरुचाउने श्रेष्ठको कुलत केसैमा पनि देखिदैन । श्रीमती रिसाएर बोले पनि उनी हाँसी हाँसी जवाफ दिन्छन् । बाहिर परस्त्रीसँग कहीं आँखा लगाउँदैनन् (श्रीमती अनिता श्रेष्ठबाट प्राप्त जानकारी) । श्रेष्ठको बाहिरी वर्ण कालो भए तापनि भित्री मन भने स्पष्ट र स्वच्छ देखिन्छ ।

मनोरञ्जनतर्फ पनि श्रेष्ठको ज्यादै रूचि रहेको छ । कविता, गजल र कथा लेखन तथा वाचन गर्ने अनि भलिबल, फुटबल, चेस जस्ता खेल खेल्न रुचाउने श्रेष्ठ फुर्सदमा गीत, कविता, गजल गुनगुनाउन पनि रूचि राख्छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) ।

## २.११ भ्रमण

भक्तपुर जिल्लाको गुन्दु गा.वि.स.मा जन्मेका अभय श्रेष्ठ जागिरका सिलसिलामा नेपालका अधिकांश स्थानको भ्रमण गरेका छन् । आफू पत्रकारिता पेसामा लागेका कारण विभिन्न स्थानमा जान पाएको बताउँछन् । त्यही जागिरकै सिलसिलामा नेपालभन्दा बाहिर भारत र बङ्गलादेशको पनि भ्रमण गरेका छन् । जागिरको सिलसिला भन्दा वेगर अन्य समयमा भ्रमण गरेको अनुभव भने कमै रहेको बताउँछन् (वि.सं. २०७० जेठ ६ गते फोनबाट प्राप्त जानकारी) । श्रीमती र छोराहरूसँग घुम्ने रहर भएर पनि कार्यव्यस्तताका कारण परिवारलाई त्यो समय उपलब्ध गराउन नपाएकोमा उनी दुखित छन् ।

## २.१२ साहित्य सिर्जनाको प्रेरणा र प्रभाव

कुनै पनि साहित्यकार वा साहित्य सर्जक व्यक्तित्वले प्रायः कुनै वा कसैको प्रेरणाबाट साहित्य सिर्जनामा लागेको हुन्छ । यस बाहेक प्रसिद्ध साहित्यकारको प्रभाव परेर वा साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन गरेर पनि साहित्य सिर्जना गर्ने हुन्छन् भने कतिपय व्यक्तिहरू आफू भित्रको प्रतिभाले प्रेरित भएर साहित्य रचना गर्न थालेका हुन्छन् (खनाल, २०५६ : २२) । जे होस् बिना प्रभाव र प्रेरणा साहित्यको रचना हुँदैन ।

अभय श्रेष्ठको साहित्य लेखन कार्यमा पनि प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपमा प्रेरणा र प्रभाव परेको पाइन्छ । उनी स्कूलले जीवनमा हुँदा नेपाली पढाउने गुरुहरूले कविता पढाएको बेलामा होस वा उहाँहरूले कविता वाचन गर्दा आफूमा एक किसिमको भाव तरङ्गित हुन्थ्यो भनी बताउँछन् (शोधनायकबाट प्राप्त जनाकारी) । यहीँबाट साहित्यतर्फ उनको चासो बढेको देखिन्छ । सानैबाट भावुक र पढाइमा रूचि भएका श्रेष्ठले विभिन्न पत्रपत्रिकाको अध्ययन गर्दथे । पहिलो पटक मधुपर्कमा ज्ञानुवाकार पौडेलको गजल पढेर उनमा गजल लेखनमा मोह बढेको देखिन्छ । मनु ब्राजाकीका साहित्यिक लेखले पनि उनमा प्रेरणा थपेको देखिन्छ । यसभन्दा अगाडि आफ्नो खलकमै कसैले साहित्य सिर्जना गरेका थिएनन उनले अप्ठ्यारो मान्दै बताए । वि.सं. २०४८ मा उनले पहिलो पटक गजल लेखनको थालनी गरेका हुन् । शीर्षक ठ्याक्कै विसै भन्न उनलाई अप्ठ्यारो लाग्दैन भन्छन् “कति लेखिए कति सम्भेर कहाँ साध्य लाग्छ र ?” (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । विद्यार्थीकालमा कथा, कविता तथा गजल लेखेको भए पनि ती स्तरीय नभएको उनी आफैँ बताउँछन् । “सुरूमा निकै राम्रो लाग्थ्यो तर पछि पछि तीभन्दा राम्रा लेख लेख्न थालिएछ, क्यार : ती लेख देख्दै लाज लाग्न थाल्यो अनि च्यातेर फालिदिए” यही शब्दमा उनी भन्छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी सुन्दर प्राकृतिक वातावरणमा हुर्किएका श्रेष्ठलाई साहित्य लेखनका क्रममा त्यहाँका सामाजिक, प्राकृतिक, साँस्कृतिक वातावरणको पनि प्रभाव देखिन्छ । प्रकृतिको रमणीय स्थानमा बसेर त्यहाँ वरपरका वस्तुका बारेमा कविता तथा गजल लेख्थे भनी बताउँछन् । नेवारको कूलमा जन्मिएर पनि ब्राह्मणको सङ्गतमा हुर्केका श्रेष्ठलाई ब्राह्मण संस्कृतिको पनि प्रभाव परेको देखिन्छ ।

यसरी अरूका साहित्य सिर्जना सुनेर, पढेर, हेरेर र त्यसको सिको गरेर साहित्य सिर्जना गर्न सफल श्रेष्ठले विविध क्षेत्रबाट प्रभाव र प्रेरणा ग्रहण गरेको देखिन्छ ।

## २.१३ मान सम्मान तथा पुरस्कार

अभय श्रेष्ठ नेपाली साहित्यका विविध विधामा कलम चलाउनुका साथै विभिन्न सङ्घ संस्थामा पनि अप्रत्यक्ष रूपमा आवद्ध रहेका छन् । नेपाली समाजको परिवेशमा आधारित भएर साहित्य सिर्जना गर्ने श्रेष्ठ विभिन्न मान र पदवीबाट सम्मानित भएका छन् । प्रज्ञा कथा पुरस्कार (२०६१), प्रहरी द्वैमासिक उत्कृष्ट रचना तथा स्तम्भ लेखनका लागि दृष्टि साप्ताहिक स्तम्भकार सम्मान (२०६५), पत्रकारितामा उल्लेख्य योगदान पुर्याए वापत पत्रकारिता सम्मान (२०६०), राष्ट्रिय गजल पुरस्कार (२०५७), गरिमामा प्रकाशित उत्कृष्ट गद्य पद्य लेखनका लागि भुइँचालो कथालाई दश हजार राशिको उत्कृष्ट गरिमा सम्मान (२०६९) जस्ता सम्मानबाट सम्मानित तथा विभूषित भएका छन् ।

## २.१४ निष्कर्ष

अभय श्रेष्ठको जन्म वि.सं. २०२८ भदौ २५ गते भक्तपुरको गुन्डु गा.वि.स. वडा नं ९ मा भएको हो । पाँच वर्षको उमेरमा आमा गुमाउन पुगेका अभयको वाल्यकाल सङ्घर्षको वितेको देखिन्छ । बाबुको गतिलो पेसा नभएकाले र घरमा प्रशस्त सम्पत्ति नभएका कारण समस्या भैले वी.ए. सम्मको अध्ययन पुरा गरेका छन् । २१ वर्षको उमेरमा वि.सं. २०४९ मा अनिता महर्जनसँग विवाह सम्बन्ध गाँसेका अभयका दुई सन्तान भइसकेका छन् । पत्रकारिता पेसामा संलग्न अभयले वि.सं. २०४७ देखि जागिर खान थालेका हुन् । फुटबल, भलिबल र चेस खेल्ने र समाज सेवा गर्ने रूचि भएका श्रेष्ठ हाँसिलो, जाँगरिलो र गम्भीर स्वभावका रहेका छन् । प्रकृतिको विविध रूप र अग्रजहरूका साहित्यिक पत्रिकाको प्रभाव र प्रेरणाले साहित्य साधनामा लागेको देखिन्छ । उनी साहित्यका अलवा पत्रकारिताको कदर गर्दै विभिन्न मान सम्मानबाट विभूषित पनि भएका छन् । जागिरका सिलसिलामा देश तथा विदेशका विभिन्न ठाउँहरूको भ्रमण गरेर विभिन्न अनुभवहरू बटुलिसकेका छन् । तसर्थ अभय श्रेष्ठ निष्पक्ष पत्रकारिता गर्दै समाजका यथार्थ घटनामा आधारित भई साहित्य सिर्जना पनि अगाडि बढाएका छन् ।

## परिच्छेद तिन

### अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्व

#### ३.१ विषय परिचय

व्यक्तिको जीवनमा विभिन्न पक्षले व्यक्तित्वको निर्माण गर्दछ । व्यक्तित्वलाई विभिन्न तरिकाले अर्थ्याइएको पाइन्छ । व्यक्तित्वको अर्थ मानसिक प्रक्रियामा एकरूपता वा अनुरूपताको निर्माण हो । एकरूपता भन्नाले सधैं एकै किसिमको काम मात्र गर्नु नभइ परिवेश अनुसारको एकरूपता भन्ने बुझिन्छ । वास्तवमा व्यक्तित्वको अभिप्राय आफ्नो आन्तरिक स्वरूपलाई दृढ गराउनु पनि हो (फुयाँल, २०६३ : १७) प्रत्येक परिवर्तित स्थितिमा मानिसले आफ्नो प्रतिभाको स्पष्ट र गहन छाप छोड्न सक्नुपर्छ । यस अर्थमा व्यक्तित्वको अर्थ परिवर्तनशिलता नभइ प्रतिकुल स्थितिको अनुकूल चलन सक्ने त्यो शक्ति सत्ता हो जसले मानिसलाई प्रत्येक क्षणमा नवीन दृष्टिकोण देखाउन प्रस्तुत गर्दछ । परिस्थिति अनुकूल चलन सक्ने र प्रत्येक क्षणमा नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्न सक्ने व्यक्ति भित्र निहित प्रतिभा नै व्यक्तित्व हो (ओभा, सन् १९७५ : ३१) । व्यक्तिको व्यक्तित्व निर्माणमा उसको पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिवेश, साथीहरूको सङ्गत जस्ता पृष्ठभूमिको महत्त्वपूर्ण भूमिका हुन्छ ।

उपयुक्त आधारमा अभय श्रेष्ठको समष्टि व्यक्तित्वलाई केलाउँदा उनी नेपाली साहित्यमा बामे सर्न आँटेका व्यक्तित्वका रूपमा परिचित छन् । उनले लामो सम्मको पत्रकारिताका साथै साहित्य लेखनका माध्यमबाट विभिन्न व्यक्तित्व बनाइसकेका छन् । उनका व्यक्तित्व अन्तर्गत साहित्यिक र साहित्येतर व्यक्तित्वका शीर्षक भित्र विविध उपशीर्षकको अध्ययन यस परिच्छेदमा गरिएको छ ।

#### ३.२ अभय श्रेष्ठका व्यक्तित्वका आयामहरू

प्रस्तुत शीर्षकमा अभय श्रेष्ठका व्यक्तित्वका पाटाहरूमध्ये बाह्य व्यक्तित्व र आन्तरिक व्यक्तित्वको छुट्टाछुट्टै उपशीर्षकमा राखेर अध्ययन विश्लेषण गरिएको छ ।

### ३.२.१ बाह्य व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठको बाह्य व्यक्तित्व सामान्य नेपालीको तुलनामा मिल्दो जुल्दो देखिन्छ। पाँच फिट पाँच इन्च उचाइ ६२ के.जी. वजनका श्रेष्ठ हेर्दा पातलो र लुरे खालका देखिन्छन्। कालो-कालो वर्णको कत्ला, फुल्ल आँटेको केश, फराकिलो निधार, थोचो नाक, चेप्टो चेप्टो अनुहार, हाँसदा दाँत देखिने, निधारमा केही खत भएका श्रेष्ठ देख्दाँ हाँसिरहेको प्रसन्न स्वभावका देखिन्छन्। पातलो पातलो शरीर भएका श्रेष्ठ हालसम्म सामान्य ज्वरो, रूखा खोकी बाहेक ठूलो बिमारी नभएका स्वस्थ व्यक्तित्व हुन्। श्रेष्ठ बोलाइमा स्पष्टवादी, मनमा लागेका कुरा भनिहाल्ने, कहिल्यै नरिसाउने, खुला स्वभाव, खुला हृदय भएका व्यक्ति हुन्। सर्ट, जिन्सको पाइन्ट, जुत्ता, सुइटर, ज्याकेट उनको मनपर्ने पोशाक हो। शुरूमा हेर्दा भावुक देखिने श्रेष्ठ सङ्गत पश्चात हाँसेर कहिल्यै नथाक्ने, सामान्य कुरालाई अलङ्कारिता भरेर मजाक गर्न रूचाउने प्रवृत्तिले उनको मिलनसारिता र स्नेही भावनाको स्पष्ट सङ्केत देखिन्छ। उनलाई एक दुई पटक भेटेका साथी रसिक सापकोटाको भनाइ यस प्रकार छ, “पहिलो पटक भेट्टा भेट्टा र शुरूमा बातचित गर्दा केही रिसाहा र बढी भावुक स्वभावका जस्ता देखिन्थे तर उनीसँगको केही बेर लामो बातचित पश्चात सायद उनी जस्तो निष्पक्ष र यति खुलेर बोल्ने नेवार साथी अझ सम्म भेटेको थिएन। अनुशासन र नियम वद्ध जीवन रूचाउने श्रेष्ठ गम्भीर स्वभावका देखिए पनि व्यवहारमा हाँसो ठट्टा र मनोरञ्जन रूचाउने खुला हृदयका सहयोगी व्यक्तित्व हुन्।”

### ३.२.२ आन्तरिक व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठको आन्तरिक व्यक्तित्व नियाल्दा उनी सानै देखि कल्पनाशील, भावुक र इमान्दार रहेको प्रतीत हुन्छ। सानै उमेरमा आमाको मृत्यु भएका कारण उनमा भावुकता पैदा गरेको पाइन्छ। अभाव नै अभावले घेरेको बाल्यकाल र युवा वस्था, आर्थिक अभावका कारण सिकर्मी र खेतीपाती तथा पशुपालनको धन्दाले उनमा भावुकता भित्रको यथार्थ चिन्ने अवसर प्राप्त भएको पाइन्छ। मैले बिगतमा धेरै सङ्घर्ष गरेको छु, दुःखलाई नजिकबाट नियालेको छु। साहित्यमा कतिपय

साहित्यकारले कल्पनाशील अनुभूतिहरू अभिव्यक्त गर्छन् तर मैले आफ्ना साहित्यिक रचनामा अनुभूतिपूर्ण यथार्थ र समाजमा घटित समसामयिक घटनालाई अभिव्यक्ति गर्ने प्रयास गरेको छु (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । जस्ता उनका अभिव्यक्तिले उनको व्यक्तित्वलाई प्रष्टाउने काम गरेको छ । यसरी उनमा सरल, सहज, सहयोगी, भावुक, कर्तव्यनिष्ठ, कर्मयोगी जस्ता आन्तरिक व्यक्तित्वगत विशेषता पाइन्छ ।

### ३.३ व्यक्तित्वका दुई पाटा

अभय श्रेष्ठका व्यक्तित्वमा दुईवटा अलग अलग पाटा वा प्रकार देखा पर्दछन् । उनी खास गरी साहित्यिक र पत्रकार व्यक्तित्व लिएर हाम्रो सामु चिनिन्छन् । मूलतः पत्रकारिता पेसालाई अँगालेका श्रेष्ठ साहित्यलाई पनि उत्तिकै महत्त्व दिएका छन् । श्रेष्ठ यी दुबै व्यक्तित्वबाट सुपरिचित छन् साथै यी दुबै प्रकारका व्यक्तित्व विकासमा उनको महत्त्वपूर्ण भूमिका देखिन्छ । श्रेष्ठको व्यक्तित्वलाई साहित्यिक र साहित्येतर गरी दुई प्रकारले विभाजन गरेर अध्ययन गरिएको छ ।

#### ३.३.१ साहित्यिक व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वलाई केलाउदै जाँदा उल्लेखनीय रूपमा देखा पर्ने एउटा पाटो साहित्यकार व्यक्तित्व पनि हो । विद्यार्थी अवस्था देखि नै साहित्य लेखनतर्फ अग्रसर भएका श्रेष्ठका साहित्यिक कृतिको प्रकाशन भने निकै समयपछि भएको देखिन्छ । विद्यार्थी कालमा लेखिएका छिटपुट भावना बाहेक वि.सं. २०४७ सालमा गजल लेखेर **समीक्षा** पत्रिकामा प्रकाशन गरेपछि मात्र साहित्यका क्षेत्रमा सार्वजनिक रूपमा उदाएका हुन् । उनका आजसम्म **फूलविनाको शाखा** (२०६०), **कायाकल्प** (२०६२) र **तेस्रो किनारा** (कथा सङ्ग्रह २०६८) जस्ता तिन विधाका तिन वटा कृति मात्र प्रकाशित छन् । श्रेष्ठको साहित्यिक व्यक्तित्व अन्तर्गत गजलकार व्यक्तित्व, कवि व्यक्तित्व र कथाकार व्यक्तित्वको रूपमा व्याख्या विश्लेषण गरिएको छ ।

## (क) गजलकार व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठलाई साहित्यिक व्यक्तित्वको रूपमा चिनाउने एउटा विधा गजल हो । उनको सार्वजनिक साहित्ययात्राको सुरुवात यही विधा मार्फत गरेका हुन् । विद्यार्थी अवस्था देखिनै गजल लेखनमा लागेका श्रेष्ठका त्यति बेलाका गजलहरू प्रकाशन योग्य नरहेको बताउँछन् । साहित्यिक लेखनमा तिन विधा गजल, कविता र कथा मध्ये गजल विधा उनको पहिलो रोजाई हो । जसको लेखन गजलकार ज्ञानुवाकर पौडेलका गजलबाट प्रभावित भएर लेखिएको पाइन्छ । आफूले भोगेको वर्तमानलाई आदित्यपूर्ण भाषा र शिल्पमा अभिव्यक्त गरेर गजल लेखेको पाइन्छ । प्रेमपरक भाव भन्दा वर्तमान समसामयिक परिवेशमा आधारित भएर गजल लेखेको पाइन्छ (वि.सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । उनका गजलहरू सामाजिक परिवर्तनका कारक मानिन्छन् ।

अभय श्रेष्ठको हालसम्म फूलविनाको शाखा (२०६०) गजलसङ्ग्रह मात्र प्रकाशित भएको छ । यस गजलसङ्ग्रह भित्रका उनका ६४ वटा गजलहरू सङ्ग्रहित रहेका छन् । यसरी पुस्तकाकार कृतिका रूपमा एउटा मात्र गजल सङ्ग्रह प्रकाशित भए तापनि उनका कयौँ गजलहरू विभिन्न पत्रिकामा प्रकाशित रहेका छन् । गजल लेखेर उनले विभिन्न पुरस्कार हात पारेका छन् तर उनलाई त्यसको मिति स्पष्ट भने छैन (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । आफूले भोगेका वर्तमानलाई विषयवस्तु बनाएर लेखिएका उनका गजलहरू सशक्त मानिन्छन् ।

यसरी पुस्तकाकार रूपमा एउटा मात्र गजल सङ्ग्रह प्रकाशित भए तापनि त्यही एउटा गजल सङ्ग्रह नै उनलाई गजलकार व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउन सफल भएको छ । उनलाई गजलकार अभय श्रेष्ठ बनाउने गजल सङ्ग्रह फूलविनाको शाखा सफल र सशक्त छ भन्न सकिन्छ ।



## (ख) कवि व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठलाई साहित्यिक व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउने अर्को पाटो कविता हो । सार्वजनिक साहित्यको सुरूवात गजलबाट भएको भए तापनि सार्वजनिक कविता लेखन भने वि.सं. २०५१ सालमा 'कुइरोमा हराएको बस्ती' नामक कविता **मधुपर्क** पत्रिकामा प्रकाशित कविताबाट भएको देखिन्छ । त्यसभन्दा पहिला उनले कविता नलेखेका भने होइनन् । स्कुले जीवनमा उनले कविता भनी लेखेका भावनाहरू कविता भन्न योग्य नभएका कारण उनले च्यातिदिएका थिए (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । वि.सं. २०५१ सालदेखि लेखिएका उनका कविताहरू वि.सं. २०६२ मा **कायाकल्प** नामक कविता सङ्ग्रहमा सङ्ग्रहित भएर प्रकाशित भएका हुन् । यस **कायाकल्प** कविता भित्र उनका ४३ वटा कविताहरू सङ्ग्रहित रहेका छन् । कवितालाई शब्दको रमिता, प्रकृतिको वखान, बुनोट र वाचनको विलासिताको सिकार बनाउनु यसको शक्तिलाई अस्वीकार्नु हो । कविता सौन्दर्यको पर्याय हे भने मेरो जीवनको बलियो साँस्कृतिक हतियार पनि हो (श्रेष्ठ, २०६२ : प्रारम्भ खण्ड) । भन्ने कवि अभय श्रेष्ठका कविताको विषयवस्तुका रूपमा समाजमा घटित समसामयिक घटना, उनका जीवनका यथार्थ घटना तथा कुराजनीतिका प्रसङ्गहरूलाई उठाएका छन् । अन्याय, अत्याचार, विकृति, विसङ्गतिको तिब्र विरोध गर्दै स्वच्छ समाजको परिकल्पना गर्न प्रेरित उनका कविताहरू विभिन्न बिम्ब, प्रतीक, अलङ्कार र समाज परिवर्तनका कारकका हेतुले सशक्त मान्न सकिन्छ ।

यसरी पुस्तककार रूपमा एउटा मात्र कवितासङ्ग्रह प्रकाशित गरेको भए तापनि फुटकर रूपमा र स्तम्भका रूपमा विभिन्न पत्र पत्रिका र एफ.एम. रेडियोमा उनका कविताहरू प्रकाशित तथा वाचन भएका हुन् । जे होस एउटै पुस्तककार कृति **कायाकल्प** नै श्रेष्ठलाई कवि अभय श्रेष्ठका रूपमा चिनाउन सफल भएको हो । यही कृतिबाट नै उनी कवि अभय श्रेष्ठ भनेर चिनिन सफल भएका छन् ।

### (ग) कथाकार व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठलाई साहित्यकार व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउने अर्को पाटो कथा विधा हो । उनका हालसम्म प्रकाशित पुस्तकाकार कृतिहरू मध्ये **तेस्रो किनारा** नामक कथा **तेस्रो** तथा **कान्छो** पुस्तकाकार कृति हो । गजल विधाबाट साहित्यमा उदाएका श्रेष्ठको कथा लेखनको सुरुवात २०५४ मा प्रकाशित 'अवशेष' नामक कथाबाट भएको देखिन्छ । उक्त कथा सर्वप्रथम **समकालीन साहित्य** पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो । त्यस भन्दा पहिला कथा लेखन नगरेका भन्ने होइनन् तर ती कथाहरू प्रकाशन योग्य नभएका कारण प्रकाशित हुन सकेनन् । साहित्यका गजल, कविता र कथा मध्ये अभय श्रेष्ठलाई तपाईंले रोजेको र मनपरेको विधा कुन हो भनी सोध्दा उनले कथा विधालाई रोजेका छन् (शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसरी कथाकारका रूपमा चिनिन चाहने श्रेष्ठका वि.सं. २०५४ देखि लेखन प्रारम्भ गरेर कथा लेख्दै आएका भए तापनि वि.सं. २०६८ मा आएर मात्र पुस्तककार रूपमा **तेस्रो किनारा** नामक कथा सङ्ग्रह प्रकाशित भएको छ । यस कथा सङ्ग्रह भित्र उनका लामा छोट्टा गरेर पन्ध्र वटा कथाहरू सङ्ग्रहित रहेका छन् । समसामयिक विषयवस्तुलाई ग्रहण गरेर समाजमा व्याप्त विकृति र विसङ्गतिका साथै पञ्चायती पृष्ठभूमिमा आधारित भएर कथाहरूको रचना गरेको देखिन्छ । समाजका विकृति र विसङ्गतिको व्यङ्ग्य गर्दै स्वच्छ समाजको निर्माणमा प्रेरित गर्न सफल देखिन्छन् ।

यसरी पुस्तककार रूपमा एउटा मात्र कथा सङ्ग्रह प्रकाशित गरेको भए तापनि फुटकर रूपमा पनि कथा लेखन गरेको देखिन्छ । एउटा मात्र कथा सङ्ग्रह भए तापनि उनलाई कथाकार व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउन सफल भएको छ । यही सङ्ग्रहबाट नै उनी कथाकारका रूपमा चिनिएका छन् । उनलाई कथाकारका रूपमा चिनाउने यस विधा सवल र सशक्त मानिन्छ ।

### ३.३.२ साहित्येतर व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वलाई प्रष्ट्याउने अर्को उल्लेखनीय पाटो साहित्येतर व्यक्तित्व हो । स्कूले जीवन भ्याएर उच्च शिक्षा हासिल गर्ने क्रमदेखि नै आर्थिक अवस्था कमजोर भएका कारण पत्रकारिता पेसामा हात हालेको देखिन्छ । यसका

अलवा उनी समाजसेवी व्यक्तित्व पनि हुन् । प्रस्तुत अध्यायमा यिनका यिनै पत्रकार व्यक्तित्व र समाजसेवी व्यक्तित्व नामक उपशीर्षकमा आधारित भएर अध्ययन विश्लेषण गरिएको छ ।

### **(क) पत्रकार व्यक्तित्व**

अभय श्रेष्ठका विभिन्न व्यक्तित्वहरू मध्ये पत्रकार व्यक्तित्व प्रमुख व्यक्तित्व अन्तर्गत पर्दछ । उनले जीवनको अधिकांश समय पत्रकार पेसामा बिताएका छन् । जागिरका क्रममा वि.सं. २०४६ मा कनेक्सन पत्रिकामा विज्ञापन सङ्कलकका रूपमा एक महिना जति काम गरेको देखिन्छ । यसरी जागिरे जीवनको सुरुवात गरेका श्रेष्ठ वि.सं. २०५२ मा गोरखापत्र राइजिड नेपालमा संवाददाताका रूपमा नियुक्त भएका हुन् । त्यस ठाउँमा दुई वर्षको जागिर पश्चात २०५४ देखि २०५७ सम्म नेपाल समाचार पत्र, २०५७ देखि २०६५ सम्म स्पेस टाइम्स दैनिक, २०६५ देखि २०६७ सम्म नागरिक दैनिक र २०६५ देखि नै द राइजिड नेपालमा सम्वाददाता बनेर काम गरिरहेका श्रेष्ठ २०६८ बाट त्यही द राइजिड नेपालमा भाषा सम्पादकका रूपमा कार्यरत छन् । यसरी विभिन्न पत्रिकामा काम गरेका श्रेष्ठ आफू सफल पत्रकारिता गर्ने स्वच्छ हृदयका पत्रकारका रूपमा चिनिन चाहन्छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । आफूले आजसम्म स्वच्छ र निष्पक्ष रूपमा कार्यवहन गरेकोमा आफूलाई गर्व लागेको बताउँछन् ।

यसरी २४ वर्षे लामो पत्रकारिताको अनुभव सङ्गालेका श्रेष्ठ पत्रकारिताको अध्ययन नगरिकन पनि स्वच्छ र निष्पक्ष पत्रकारिता गर्न सफल बनेका छन् । यो नै उनको ठूलो उपलब्धि मान्न सकिन्छ । यसरी हेर्दा उनका पत्रकार व्यक्तित्व सफल र सशक्त मानिन्छ ।

### **(ख) समाजसेवी व्यक्तित्व**

समाज कुनै पनि राष्ट्रको निर्माण स्थल हो । समाजको विकास भनेको सिङ्गो राष्ट्रको विकास पनि हो । अभय श्रेष्ठका विभिन्न व्यक्तित्व मध्ये सामाजिक व्यक्तित्व पनि एक हो । उनी समाजमा परि आएका काममा दिन-रात, भरी-वादल, भोक-निद्रा केही नभनी लागी पर्दछन् । उनी सामाजिक संघ संस्थामा प्रत्यक्ष आवद्ध नभए तापनि

अप्रत्यक्ष रूपमा विभिन्न संघ संस्थाका माध्यमबाट सामाजिक कार्यमा सक्रिय रहन्छन् । तपाईं समाज सेवामा कतै लाग्नु भएको छ, भन्ने प्रश्नमा उनी भन्छन् “म बाटो घाटो, पुल, स्कुल जस्ता सामाजिक कार्यमा श्रमदान र सक्दो चन्दा दिएकै छु, आपतमा परेकाहरूलाई पनि आर्थिक सहयोग गरेको छु । मलाई कति घटना याद छैन तर पीडित महिलाको आर्थिक अवस्थाका कारण आठदेखि दशसम्म पढ्न वार्षिक ३५ हजारका दरले राहत दिएको बताएका छन्” (वि.सं. २०७० पौष १३ गते शनिवार लिएको अन्तर्वार्ताबाट प्राप्त जनाकारी) भने अप्रत्यक्ष रूपमा पनि उनी समाजसेवामा लागेका छन् । साहित्य सिर्जनाका माध्यमबाट पनि उनी समाजसेवामा तत्पर देखिन्छन् । यसरी समाजसेवी व्यक्तित्व त्यति सबल नभए पनि छुटाउन नमिल्ने व्यक्तित्व हो ।

### ३.३.३ अन्य व्यक्तित्व

अभय श्रेष्ठले जीवनको अनवरत यात्रामा धेरै किसिमका व्यक्तित्वको निर्माण तथा विकास गरेका छन् । साहित्यिक व्यक्तित्व अन्तर्गत कवि, गजलकार र कथाकार त्यस्तै साहित्येतर व्यक्तित्वका रूपमा समाजसेवी र पत्रकार व्यक्तित्वका अलवा उनलाई सम्पादक व्यक्तित्वका रूपमा पनि लिन सकिन्छ । २४ वर्षदेखि पत्रकारितामा लागे तापनि खासै पत्रिकाको सम्पादन गरेका छैनन् भन्दा अनौठो लाग्नु स्वभाविक हो । उनले स्वर्ण गजुर साहित्यिक पत्रिका (२०५५) मा एक वर्षसम्म, दर्पण (हवाइपत्र, २०५१) पत्रिकामा दुई वर्षसम्म सम्पादकको भूमिका निर्वाह गरेका छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यसै आधारमा उनलाई सम्पादक व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउन सकिन्छ । क्याम्पस जीवनमा अनेरास्ववियुको सदस्यता ग्रहण गरेर वामपन्थी राजनीतिमा सक्रिय देखिन्छन् । त्यसपछि भने उनले सदस्यता ग्रहण गरेका छैनन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । यस आधारमा उनलाई राजनीतिक व्यक्तित्वका रूपमा पनि चिनाउन सकिन्छ ।

### ३.३.४ जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यिक लेखनका बीच अन्त : सम्बन्ध

अभय श्रेष्ठले आफ्नो ४२ वर्षे लामो जीवनकालमा सामाजिक राष्ट्रिय एवम् अन्तर्राष्ट्रिय परिवेशलाई भोग्दै आएको पाइन्छ । हालसम्मको जीवन भोगाइ क्रममा

उनले सरल जटिल परिस्थिति, पढाइका क्रममा देखेका भोगेका तीता मीठा अनुभव र वाल्यकाल देखि हालसम्म रमाइला नरमाइला सुख दुःखका घटनाका आरोह अवरोह आदिले रचनात्मक रूपमा उनको साहित्यिक व्यक्तित्व निर्माण भएको पाइन्छ । यिनको जीवनशैलीले निर्माण गरेका सार्वजनिक ज्ञान र पठन पाठनबाट प्राप्त गरेको साहित्यिक ज्ञान तथा आफुले देखे भोगेका ग्रामीण र सहरीया जनजीवनबाट प्राप्त भएको अनुभूतिगत यथार्थ ज्ञानले साहित्य लेखनलाई सघाएको छ । त्यसैले उनमा अध्ययन, जागिर, वाल्यकाल र साहित्य लेखनका बिचमा सामञ्जस्य हुन पुगेको छ । यस अन्तः सम्बन्धले भविष्यमा उनीबाट अरु थुप्रै उत्कृष्ट कृतिहरू आउने छन् भन्ने सहजै अनुमान गर्न सकिन्छ । उदार भावना एवम् सहृदयी लेखक अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वका विविध पाटाहरूमध्ये उनलाई कथाकार व्यक्तित्वले बढी चिनिएको अनुभव बढुलेका छन् (वि. सं. २०६९।१२।२५ गते साँझ ५ बजे न्यूरोडको पिपलबोटमा शोध नायकबाट प्राप्त जानकारी) । जे होस अभय श्रेष्ठका जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्वका बिच गहिरो अन्तः सम्बन्ध रहेको देखिन्छ ।

### ३.५ निष्कर्ष

बहुमुखी प्रतिभाका धनी अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वका विविध पाटाहरू रहेका छन् तापनि यी सबै व्यक्तित्व मध्ये आफू कथाकार व्यक्तित्वका रूपमा चिनिन चाहन्छन् । त्यसैगरी कवि व्यक्तित्व, गजलकार व्यक्तित्वले उनलाई साहित्यिक दुनियाँमा परिचित गराएको छ । त्यसैगरी समाजसेवी व्यक्तित्वले जनमानसमा चिनाउन र पत्रकार व्यक्तित्वले प्रतिष्ठित पत्रकारका रूपमा चिनाउन सफल भएको छ । उनी साहित्य मार्फत नेपाली समाजको उन्नति र विकासका मार्ग तय गर्न तत्पर देखिन्छन् । अर्काको दुःख देख्न नसक्ने उनी समाजसेवी व्यक्ति पनि हुन् । सामान्य रूपमा राजनीतिमा देखिएका अभयको राजनीतिक व्यक्तित्व पनि सहायक रूपमा लिन सकिन्छ । त्यसैगरी स्वर्ण गजुर र दर्पण नामक पत्रिकामा समेत सम्पादन गरेका श्रेष्ठको सम्पादक व्यक्तित्वलाई पनि सूचीबद्ध गर्न सकिन्छ । जे होस् ५ फिट ५ इन्च अग्लाई ६२ के.जी. तौल र मध्यम खालको शारीरिक व्यक्तित्व भएका श्रेष्ठलाई मिहेनती, इमान्दारी र सहयोगी भावनाका रूपमा लिन सकिन्छ ।

## परिच्छेद चार

### ‘फूलविनाको शाखा’ गजल सङ्ग्रहको अध्ययन

प्रस्तुत परिच्छेदमा फूलविनाको शाखा गजलसङ्ग्रहको विश्लेषण गर्ने क्रममा गजलको सामान्य परिचय दिदै यस अनुच्छेदमा गरिने विश्लेषणको परिचय खुल्ने गरी विषय परिचय र उक्त सङ्ग्रहको विश्लेषण गजल तत्त्वका आधारमा गरिएको छ ।

#### ४.१ विषय परिचय

साहित्यका गजल, कथा, कविता जस्ता विधामा कलम चलाएका अभयको फूलविनाको शाखा नामक गजल सङ्ग्रह प्रथम प्रकाशित कृति हो । वि.सं. २०४७ देखि साहित्य साधनामा लागेका अभय श्रेष्ठले गजल लेखनको थालनी भने वि.सं. २०४७ सालबाट गरेका थिए । अभय श्रेष्ठ स्वयम्ले आफ्नो भनाइलाई यसरी प्रस्तुत गरेका छन् : ‘पछिल्लो समय मेरो कलम कविता कथा र अखवारी लेखनमा केन्द्रित छ । कविता आख्यान साँच्चै भन्ने हो भने मेरो अनुपम प्रेम हो । फेरी पनि गजल मेरो पहिलो प्रेम हो । यसले नै मलाई सार्वजनिक परिचय दिएको हो’ (श्रेष्ठ, २०६० : भूमिका) यसरी यही गजलबाट सार्वजनिक भएका श्रेष्ठले यस गजल सङ्ग्रहमा ६४ वटा गजल समाहित गरेर पुस्तकका रूपमा प्रकाशित गरेका छन् । यसरी युवा गजलकार चङ्कीका गजलको अध्ययनबाट के कुरा पुष्टि हुन्छ भने उनका गजलहरू प्राय आफूले भोगेको वर्तमानलाई लालित्यमय भाषा र शैली शिल्पमा अभिव्यक्त गरेका छन् भन्ने कुराको पुष्टि हुन्छ । यसरी वि.सं. २०६० मा प्रकाशित यस गजलसङ्ग्रह भित्रका गजलहरूलाई गजलका तत्त्वहरू भाव, कल्पना लय तथा छन्द, बिम्ब प्रतीक तथा अलङ्कार आदि तत्त्वका आधारमा व्याख्या गरिएको छ । यस गजलसङ्ग्रह भित्रका ६४ वटा गजललाई एक-एक रूपमा विश्लेषण त सम्भव हुँदैन । त्यसकारण समग्र गजलसङ्ग्रहलाई उक्त तत्त्वका आधारमा सामान्य रूपमा विश्लेषण गरिएको छ ।

## ४.२ गजलको सामान्य परिचय

गजल शब्द अरबीबाट आएको फारसी र उर्दु अति चर्चित र लोकप्रिय गेययुक्त काव्य विधा हो । गजल विधा एक लोकप्रिय साहित्यिक विधा हो । एकातिर यो विधा कविताको आश्रय लिएर आफ्नो अस्तित्व प्रकट गरिहेको हुन्छ भने अर्कातिर सङ्गीतको आडमा गायन मार्फत आफुलाई अभि तीव्र रूपमा विकसित गर्दै अगाडि बढिरहेको हुन्छ (बराल, २०६४ : १) । यस कारण काव्यात्मक प्रस्तुतिका कारण श्रव्य तथा पाठ्य रूपमा प्रभाव छाड्न सफल विधा हो । साहित्यका विविध विधाहरू जस्तै गजल पनि साहित्यको एक प्रमुख विधा हो । यसले आफैमा पूर्ण सेरहरू तथा काफिया, रदिप, तखल्लुस, छन्द आदिको प्रयोगका कारण गजलले साहित्यका अन्य विधाभन्दा छुट्टै प्रकारको पहिचान प्राप्त गर्दछ । त्यस्तै गजलमा भाव वा विषयवस्तु, कल्पना, बिम्ब तथा प्रतीक सङ्गीत अनि भाषाशैलीको प्रयोग पनि यसमा अनिवार्य रूपमा हुने गर्दछ (बराल, २०६४ : १५) । गजलको संरचना तथा तत्त्व अन्तर्गत के के कुरा पर्दछन् भन्ने सन्दर्भमा कतिपय समीक्षक बिच बिवाद पनि देखिन्छ । तोयनाथ सापकोटाले गजलकार शम्भु प्रसाद ढुङ्गेल शीर्षकको शोधपत्रमा भाव तथा भाषाशैलीलाई गजलका तत्त्व भनेका छन भने सेर मतला, काफिया, रदिप, तथा मतलाको चर्चा गजलको स्वरूप उपशीर्षकमा गरेका छन् (बराल, २०६४ : १६) । त्यस्तै नीलमणी खनालले गजलकार मोतीराम भट्ट शीर्षकको शोधपत्रमा सेर, मिसरा, काफिया, रदिप, मतलालाई गजलका तत्त्वका रूपमा चर्चा गरेका छन् भने यसको विषयवस्तु, भाव भाषाशैली अनि लयलाई छुट्टै चर्चा गरेका छन् (खनाल, २०५४ : २३) । गजल साहित्यका विविध विधामध्ये एक स्वतन्त्र गेयात्मक विधा हो । गजल शब्द कुन स्रोतबाट आएको हो भन्ने बारेमा विद्वानहरूका बीच मतमतान्तर पाइन्छ । एक थरी विद्वानले गजललाई अरबी भाषाबाट आएको शब्द मानेका छन् ।

## ४.३ भाव वा विषयवस्तुका आधारमा 'फूलविनाको शाखा' गजल सङ्ग्रहको अध्ययन

गजलमा कुनै न कुनै कथ्य वा विषयवस्तुको प्रयोग हुनु अनिवार्य हुन्छ । यस्तो विषयवस्तु गजलमा भावमय भई आउँछ । गजलले कुन विषयलाई समाएर अगाडि

बढेको छ भन्ने कुरा नै विषयवस्तु वा भाव हो । एक त गजल विधा प्रेम प्रसङ्गमा आधारित भएर लेखिने साहित्यिक विधा हो । भने अर्कातिर अभय श्रेष्ठ यो गजल सङ्ग्रह प्रकाशित हुँदाको वखत भखरै बाइस वर्षे जवानीमा दौडदै थिए । त्यसकारण पनि माया पिरतिका प्रसङ्ग वा विषय यसमा समेटिनु स्वभाविक हो तर जवानीको दौरानमा भएर पनि सामाजिक विषयवस्तुको प्रयोग बढी गर्नु श्रेष्ठको सबल पक्ष मानिन्छ । त्यस्तै युद्ध लडाईं जस्ता क्रान्तिकारी विषयलाई पनि श्रेष्ठले आफ्ना गजलको विषय बनाउन पुगेका छन् :

खाली छन है प्रगतिका पाना यता गाउँतिर  
 चुहेका छन् हिजो जस्तै छाना यता गाउँतिर  
 मिच्नेले त यता पनि मिचेके छन् कानुनलाई  
 तिमी हामी जस्तालाई ठानना यता गाउँतिर (पृ. ११)

यसरी विभिन्न विषयलाई समेटेर गजल लेख्ने श्रेष्ठ समाजका यथार्थ घटनालाई समेटन र सामाजिक यथार्थ तथा कुकृतिको भण्डाफोर गर्न पनि खप्पिस देखिन्छन् ।

अन्यायले थिचिएर मर्नेहरू मरेकै छन्  
 भएको छ पक्षपाती कानुन पनि यहातिर (पृ. १२)

जस्ता सामाजिक भाव समेटेर गजल लेख्ने श्रेष्ठ सामाजिक गजलकार हुन् पनि भन्न सकिन्छ । जस्तै:

तिम्रो पनि बाटो उही मेरो पनि बाटो उही  
 तर किन नदीका ती किनारा भै हामीहरू (पृ. १३)

मेरै शीरमाथि आज पुल बनई गयौं तर  
 मुटु भरि बल्किदिने शुल हौं कि तिमी पसिन ? (पृ. १४)

अतीतका घाउहरू सम्झनामा दुख्ने गर्छन  
 बिभेपछि छातिभरि नियतीका भालाहरू (पृ. २५)

जस्ता प्रेमप्रधान गजलहरू पनि देखिएका छन् । यसरी उनका गजलहरूको अध्ययनबाट बुझ्न सकिन्छ कि उनका गजलहरू प्रेमी प्रेमीकाका वार्तालाप, प्रेमीसँगको गुनासो, प्रेमीका प्रतिको सान्त्वना, प्रेमीकालाई फूल, शूल चन्द्रमासँगको तुलना र त्यस्तै अन्याय र अत्याचारलाई सहनु परेको वाध्यता र फितलो कानुनका भरमा कोही



गलती गरेर पनि भक्ति भएको र कोही गलती नगर्दा नगर्दै पनि सजायको भागी हुनु परेको विषय तथा भाव उनका गजलमा प्राप्त गर्न सकिन्छ ।

त्यस्तै भूमिगत छन् आज पनि हाम्रा क्रान्तिकारीहरू  
उभ्याएर मैदानमा फेरी नर नारीहरू  
आर्दश र गौरव हुन् हाम्रा लागि गौतम बुद्ध  
शान्ति कायम गर्छु भन्छन् यता अस्त्रधारीहरू

जस्ता शेरबाट बन्दुकका भरमा देशमा शान्ति ल्याउन खोज्ने क्रान्तिकारी कमरेड प्रतिको व्यङ्ग्य भाव पनि उनका गजलमा देख्न सकिन्छ ।

श्रेष्ठका प्रायः कथामा श्रृङ्गारिक भावको प्रयोग पाइन्छ । त कतै कतै क्रोध भावको पनि प्रयोग नपाइएको भने होइन ।

यसरी श्रृङ्गार भाव भनौं वा माया पिरतीको विषयवस्तुलाई र समाजमा रहेका कुकृतिलाई भण्डाफोर गर्दै आफूले भोगेको यथार्थलाई विषयवस्तु बनाएर लेखिएका श्रेष्ठका गजलहरू सशक्त र सवल छन् भन्न सकिन्छ ।

#### ४.४ कल्पना प्रयोगका आधारमा 'फूलविनाको शाखा' गजल सङ्ग्रहको अध्ययन

कल्पना तत्सम् शब्द हो । यसको सामान्य अर्थ रूप दिनु, बनाउनु, विचार, उत्प्रेक्षा, प्रतिमा भन्ने हुन्छ । अथवा अर्थ स्मृति पटमा अनौठा नयाँ कुरा वस्तुको प्रतिमा रूपरेखा बनाएर काव्य चित्र प्रतिमा आदिका रूपमा उतार्ने वा मूर्त रूप दिने क्रियात्मक मानसिक शक्ति भन्ने पनि हुन्छ (बराल, २०६४ : ६९) । यसरी कल्पना भनेको कुनै कुरालाई यस्तो हुन्छ भनेर त्यसको धारणा बनाउनु पनि हो । कल्पना साहित्यका सम्बन्धमा एकदमै आवश्यक तत्त्व हो । कल्पना नभई साहित्य सिर्जना गरिदैन भन्ने होइन तर कल्पनालाई मिसाउन नसकेको खण्डमा साहित्य त्यति प्रखर बन्न सक्दैन भन्ने कुरा सही र यथार्थ हो । लेखकले उसको कृतिमा वास्तविक घटनालाई समावेश गराएर कृति लेखन गर्न सक्छ, तर त्यस कृतिमा उसले कल्पनालाई केही न केही रूपमा समेटेको हुन्छ । प्लेटोले काव्य सिर्जनाका क्रममा दैवी गुणलाई स्वीकारे पनि कविलाई भुट्टा भन्दै काव्य सत्यबाट दुई गुना टाढा हुने

बताएका थिए भने अरिस्टोटलले प्लेटोको उत्तर दिदै अनुकरणद्वारा सत्य प्रस्तुत गरेर कविले अर्को सत्यको निर्माण गर्दछ भनी प्लेटोको आक्षेपको विश्लेषण गरेका थिए ( बराल, २०६४ : ६९-७०) । यस आधारमा साहित्य सत्यको अनुकरण हो वा भ्रम भन्ने कुराको विवाद देखिन्छ ।

गजलकार श्रेष्ठ पनि आफूले भोगेको यथार्थलाई गजलमा ढाल्ने गजलकार भएर पनि उनका गजलमा कल्पनाको प्रयोग भएको पाइन्छ । श्रेष्ठले आफ्ना गजलमा प्रेमीकालाई फूलका रूपमा, शूलका रूपमा, कल्पना गर्दै काल्पनिक संसारमा हराएका छन् । हुन त भनिन्छ पिरतीमा दरबार हुन्छ र त्यही पिरतीमा तरबार हुन्छ । त्यस्तै चड्की श्रेष्ठ पनि कल्पनाको खोल ओडेर पिरतीको व्याख्या गर्न तत्पर देखिएका छन् । उनको काल्पनिक संसारमा आँसुले उनको मनमा आगो लगाएको प्रसङ्गको वर्णन पाइन्छ । त्यस्तै आँसु धमिलो भएको प्रसङ्ग जिन्दगीको युद्ध लड्नु, प्रेमीका बिना गगन र सगर शून्य हुनु, मायालुको बोलीमा धारिलो कटारी पाउनु, जिन्दगीको हिसाब गर्नु, छातीमा नियतिको भाला विभन्नु, आँसुले दियालो बाल्नु, डुल्दा डुल्दै मन थाक्नु, हावामा महल बनाउनु, उज्यालोको चोरी हुनु, विजयका मालाहरू पहिरनु, जिन्दगी उधारोमा बाँच्नु, रगतको धारो, आगोको फूल फक्रनु, शब्दको हतियार उठाउनु, प्रेमी हाँगोबाट भरेको फूल हुनु, सपनाहरू फुल्नु, मनको दियो बाल्नु जस्ता विभिन्न काल्पनिक प्रसङ्गले यस गजलसङ्ग्रहलाई रोचक र कौतुहलपूर्ण बनाएको छ । यसरी जतिसुकै यथार्थ र सत्यको खोल ओढे पनि कल्पनाको संसारमा नडुबिकन साहित्य साधना हुँदैन भन्ने कुराको पृष्टि चड्की श्रेष्ठले यस गजल सङ्ग्रह मार्फत् जनाएका छन् । जे होस् चड्की श्रेष्ठ आफूले भोगेका यथार्थ भित्र कल्पनालाई मिसाएर गजल रचना गर्न खप्पिस छन् र कल्पनाका दृष्टिले उनका गजलहरू सशक्त छन् भन्न सकिन्छ ।

#### ४.५ लय तथा छन्द प्रयोगका आधारमा 'फूलविनाको शाखा' गजल सङ्ग्रहको अध्ययन

लय तथा छन्द गजलका लागि अनिवार्य तत्त्व हुन् । लय तथा छन्द एकै जस्ता देखिए तापनि सूक्ष्म रूपमा परिभाषित गर्दा यी दुईका बिचमा केही भिन्नता पाइन्छ । केही मात्रामा भिन्नता भए तापनि यी दुई एकदम फरक तत्त्व भने होइनन् । लय

शब्दले कुनै पनि गेयात्मक विधालाई त्यसको गायनका माध्यमबाट सजिलो र रोचकता थपेको हुन्छ । गजल कविता जस्तो गेयात्मक विधा होइन लय हालेर पढ्न वा वाचन गर्न नसकिएमा त्यसको कुनै अस्तित्व देखिदैन । यदि गजलमा लय मिलेन भने गजल त्यति रोचक नहुने हुँदा यो गजलको अनिवार्य तत्त्व मानिन्छ तर गजलमा छन्द नभए तापनि गजल रोचक हुन्छ तर छन्दको प्रयोग गरेर लेखिएका गजल स्वतः लय प्रधान हुन्छन् । गजलमा छन्दलाई बहर भनिन्छ । बहरमा लेखिएका गजलहरू त्यति धेरै पाउन सकिँदैन तर बहरमा गजल नदेखिएका भने होइनन् ।

गजलकार श्रेष्ठका गजलहरू पढ्दा लय मिलेका छन् । उनका प्रायः जसो गजल लय हालेर वा रोचकताका साथ वाचन गर्न सकिन्छ तर उनले बहरको प्रयोग गरेर गजलको रचना गरेका छैनन् । श्रेष्ठले यदाकदा समान अक्षरमा गजल लेख्ने प्रयास गरेका छन् तर यस पक्षमा श्रेष्ठ त्यति सफल भएका भनेका छैनन् । उनका गजलहरू अनुप्रास युक्त छन् । त्यसकारण उनका गजललाई लयमा ढालेर पढ्न सकिन्छ अनुप्रास योजनामा भने श्रेष्ठ सशक्त नै देखिन्छन् । हुन त गजल लेखनमा पछाडिका शब्दहरू एउटै रूपमा वा बराबर अक्षरमा अनुप्रास दोहोरिएमा गजल बढी रोचक र श्रुतिमय देखिन्छ तर यस्तो पूर्ण अनुप्रास नभए तापनि फितलो अनुप्रासको प्रयोग श्रेष्ठका गजलमा पाइन्छ । उनका गजलमा पूर्ण अनुप्रासको पनि प्रयोग पाइन्छ । जस्तै :

खाली छैनन है प्रगतिका पाना यता गाउँतिर  
चुहेका छन् हिजो जस्तै छाना यता गाउँतिर  
सुनिदैन जिन्दगीका गाना यता गाउँतिर (पृ. ११) ।

जिन्दगीको यौटा यस्तो भूल जस्तो मेरो कथा  
नदीबीच बालुवाको पुल जस्तो मेरो कथा  
सधैं मौन बसिदिने फूल जस्तो मेरो कथा (पृ. १७) ।

त्यस्तै गरी उनका गजलमा यस्ता अपूर्ण अनुप्रासको पनि प्रयोग पाइन्छ ।

रूप उस्तै छ सबको अनुहार उस्तै-उस्तै  
हँसिया खुकुरीको हुन्छ धार उस्तै-उस्तै  
आज भोली कवि र पत्रकार उस्तै-उस्तै (पृ. ४५) ।

बगेकै छ हाम्रो रगत आज पनि यो पानीमा  
कस्तो कस्तो खबर आउँछ हेर एकाबिहानीमा

यसरी गजलकार श्रेष्ठका गजलहरू केही पूर्ण अनुप्रास युक्त र केही आंशिक अनुप्रास युक्त छन् । पूर्ण अनुप्रास युक्त शेरहरू बढी लयप्रधान छन् भने आंशिक अनुप्रास युक्त शेरहरू कम लयप्रधान छन् । त्यस्तै उनका गजलका शेरहरू केही बराबर अक्षरका छन् त केही घटीबढी छन् । यसरी समान अक्षरका शेर लयप्रधान छन् र घटीबढी अक्षरका शेर कम लय प्रधान छन् ।

समग्रमा उनका गजलहरू लय प्रधान नै छन् भन्न सकिन्छ । यदाकदा कतै कतै लयप्रधानमा चुकेका भए तापनि सशक्त छन् भन्न सकिन्छ ।

#### ४.६ बिम्ब, प्रतीक तथा अलङ्कार प्रयोगका आधारमा 'फूलविनाको शाखा' गजल सङ्ग्रहको अध्ययन

बिम्ब, प्रतीक, अलङ्कार पनि गजलका तत्त्वहरूमध्ये एक तत्त्व हो । गजल काव्यरूप भएका कारण यसमा भाषिक कलाको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । बिम्ब तथा प्रतीकको प्रयोग बिना गजलले विशिष्टता प्राप्त गर्न सक्दैन (बराल, २०६४ : ११२ ) । यसकारण बिम्ब तथा प्रतीकले गजललाई रोचक एवम् प्रभावकारी बनाउन मद्दत गर्दछ । जाने.ली.ले बिम्ब मुख्य दुई प्रकारका हुन्छन् भनेका छन् र ती हुन् पहिलो भौतिकवादी दृश्यावली र दोस्रो आलङ्कारिक भाषा । आलङ्कारिकताले बिम्बात्मक क्षेत्रलाई बढाउनका साथ विषयका जटिल र बोधात्मकतामा थप शक्ति प्रदान गर्दछ (बराल, २०६४ : ११३-११४) । यसरी साहित्यका उपमा रूपक आदि अलङ्कार पनि यही बिम्ब अन्तर्गत राख्न सकिन्छ ।

युवा गजलकार चङ्की श्रेष्ठका गजलहरूमा विभिन्न ठाउँमा बिम्ब तथा अलङ्कारको प्रयोग देख्न सकिन्छ । मनोवैज्ञानिकहरूले सात प्रकारका मानसिक बिम्बको परिचय दिएका छन् ती हुन्-दृश्य सम्बन्धी, गन्ध सम्बन्धी, स्पर्श सम्बन्धी, स्वाद सम्बन्धी, श्रव्यसम्बन्धी, ताप सम्बन्धी, गति सम्बन्धी (बराल, २०६४ : ११५) ।

यीनै सातवटा बिम्बको प्रयोग श्रेष्ठका गजलमा पाउन सकिन्छ । यस्ता बिम्बको उदाहरण यसरी दिन सकिन्छ :

(क) दृश्य सम्बन्धी बिम्ब

कहाँ होला हरियाली कता उडे चराहरू ?  
हेर आज वसन्तमै वन शून्य शून्य (पृ. १९) ।

(ख) गन्ध सम्बन्धी बिम्ब

वगैचामा ढकमक फूलहरू फूले पनि  
दुर्गन्ध छ फूलमै यहाँ कुनै सुगन्ध छैन (पृ. २४) ।

(ग) स्पर्श सम्बन्धी बिम्ब

अतीतका घाउहरू सम्भनामा दुख्ने गर्छन  
बिभेपछि छातीभरि नियतिका भालाहरू (पृ. २५) ।

(घ) स्वाद सम्बन्धी बिम्ब

पसिनाले सानो एउटा संसार सिच्च सक्थौ भने  
ऐजेरूको फसलमै मीठो मीठो फल होला (पृ. ३०) ।

(ङ) श्रव्य सम्बन्धी बिम्ब

कसले सुन्छ आज फेरि जिन्दगीको गीत यहाँ ?  
भएका छन् मान्छेहरू यति भयभीत यहाँ (पृ. १६) ।

(च) ताप सम्बन्धी बिम्ब

सुल्केको छ उतातिर आगो तर यता तिर  
मौनता यो हेर कसतो नयन शून्य शून्य (पृ. १९) ।

(छ) गति सम्बन्धी बिम्ब

कतिञ्जेल चल्छ होला जिन्दगी यो उधारोमा ?  
पाइला चाल्नु परेको छ सधै सधै अध्यारोमा (पृ. ३४) ।

यसरी विभिन्न बिम्बको प्रयोग गरेर गजल लेख्ने चड्की श्रेष्ठ रूपक अतिशयोक्ति जस्ता अलङ्कारको प्रयोग पनि आफ्ना गजलमा गरेका छन् ।

(क) रूपक अलङ्कार

एक्लो छु म राम जस्तै सधै सधै एक्लो  
एक्लो हुन्छ सत्यसँग नाम एकलै एकलै (पृ. ६१)

(ख) अतिशयोक्ति अलङ्कार

हावामाथि यौटा महल बनाएर आयौ फेरि  
तिनै काला मान्छेलाई मनाएर आयौ फेरि

यसरी समग्रमा श्रेष्ठ बिम्ब तथा प्रतीकका सन्दर्भमा सफल गजलकार मानिन्छ ।

बिम्बका जस्तै प्रतीकका पनि विभिन्न प्रकार हुने गरेको पाइन्छ । प्रतीकलाई परम्पारित व्यक्तिगत र स्थानिय गरी वर्गीकरण गरिएको पाइन्छ (बराल २०६४ :१२०) । यिनै प्रतीकको प्रयोग श्रेष्ठका गजलमा पनि पाउन सकिन्छ तिनको उदाहरण यसरी दिन सकिन्छ :

(क) परम्पारित प्रतीक

एक्लो छु म राम जस्तो सधै सधै एक्लो  
एक्लो हुन्छ सत्य सँग नाम एकलै एकलै (पृ. ६१) ।

(ख) व्यक्तिगत प्रतीक

तिम्रो लागि यस्तो इशारा भएछु  
जस्तो कुनै दलको नारा भएछु

(ग) स्थानीय प्रतीक

पिगलाको रूप लिइ हिँडेकी छिन् सीता पनि  
थुनिए छन् अयोध्यामै हेर आज राम यहाँ

४.७ निष्कर्ष

साहित्यका विविध विधा कथा कविता गजल जस्ता विधामा कलम चलाएका युवा गजलकार चङ्की श्रेष्ठ आफुले भोगेको वर्तमानलाई लालित्यपूर्ण भाषा र शिल्पमा गजल मार्फत् उर्तान सफल भएका छन् । नेपाली गजलमा देखापरेका विकृति

विसङ्गतिका विरुद्ध देखापरेका चङ्कीका गजलहरू प्रेमाभिव्यक्ति भित्र मात्र सीमित छैनन् । आम मान्छेका सुख दुःख र अनुभूतिका साथै सिङ्गो समाजका विविध पक्षलाई समेट्दै अगाडि बढेका छन् । गाउँको प्रगति नभएकोमा चिन्ता व्यक्त गर्ने गजलकार चङ्कीले वर्गीय समाजको पनि चित्रण गरेका छन् । उनका गजलमा आशावादी स्वरहरू पनि पाइन्छ । चङ्कीका धेरै जसो गजलहरू १४ र १६ अक्षरमा आधारित लयलाई पक्रिएर रचना गरिएको छ भने प्राय गजलमा अक्षरको तारतम्यपूर्ण प्रयोग देखिँदैन । काफिया प्रयोगमा भने श्रेष्ठले निकै सचेतता देखाएका छन् ।

आजको नेपाली गजलमा विशेष गरी काफियाको दोष धेरै गजलकारमा देखिन्छ तर श्रेष्ठ भने यस्तो कमजोरीबाट धेरै टाढा देखिन्छन् । गेयता अर्थात् लय गजलको अर्को अत्यावश्यक कुरा हो । श्रेष्ठका गजल वाचनमा मात्रा, लय र अनुप्रासको सुन्दर खाइबाट उनका गजल सबल मानिन्छन् । गजलकार श्रेष्ठले विभिन्न बिम्बको प्रयोग गरेर गजल रचना गरेका छन् र विभिन्न अलङ्कारको प्रयोग पनि उनका गजलमा पाइन्छ । यसरी समग्र रूपमा भन्नुपर्दा चङ्की श्रेष्ठ युवा गजलकार भएर पनि पाका पुराना गजलकार भन्दा कमी भने छैनन् ।

## परिच्छेद पाँच

### ‘कायाकल्प’ कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

#### ५.१ विषय परिचय

वि.सं. २०२८ मा भक्तपुरमा जन्मिएर २०४८ सालबाट साहित्यमा प्रवेश गरेका चड्की श्रेष्ठले साहित्यका गजल, कथा र कविता जस्ता विधामा कलम चलाएका छन् । उनको आजसम्म फूलविनाको शाखा (२०६०) नामक गजलसङ्ग्रह कायाकल्प (२०६२) नामक कविता सङ्ग्रह र तेस्रो किनारा (२०६८) नामक कथासङ्ग्रह प्रकाशित छन् । अराजक विद्रोह उत्तेजक विचार र अभिव्यक्तिको तीक्ष्णता जस्ता प्रवृत्तिका चड्कीका कविता कुरूप समाजका व्यङ्ग्यात्मक अभिव्यक्ति र त्रासदीपूर्ण मानवीय इतिहासका साक्षी र जीवनको साश्वत सत्यको खोजी र सङ्घर्ष गर्ने खालका छन् । चेतनाको उचाई कलाको सुन्दर संयोजन युक्त चड्कीका कविताले नेपाली कविता क्षेत्रलाई नयाँ भाषा दिएकाछन् । यस परिच्छेदमा श्रेष्ठको कविता सङ्ग्रह कायाकल्पलाई संरचना, विषयवस्तु, बिम्ब, प्रतीक र अलङ्कार विधान, भाषाशैली जस्ता तत्त्वका आधारमा विश्लेषण गरिएको छ ।

#### ५.२ कविताको सामान्य परिचय

साहित्यका विविध विधा मध्ये कविता प्राचीन र समृद्ध विधा हो । कवि शब्दमा ‘व्यत्’ प्रत्यय लागेर बनेको कविता शब्दले सर्वज्ञाता र कौशल वा कविको कर्म र कविद्वारा सिर्जना गरिएको भन्ने अर्थ स्पष्ट पार्दछ । मूलतः पद्य भेद मानिने कविताको रचना गद्यमा पनि हुने गर्दछ । पूर्व र पश्चिम दुवै तर्फ कविताको वर्गीकरणको तुलना गर्दा कविताको लघुतम रूप मुक्तक देखि लघु, मध्यम, वृहत् र वृहत्तर अनि विकासशिल महाकाव्य सम्म विभाजन गरिएको छ (भेटवाल, २०६९ : २६) । त्यस्तै संरचनात्मक आधारमा कविताको वर्गीकरण प्रगीतात्मक, आख्यानात्मक र नाटकीय गरी तिन किसिमले गरेको पाइन्छ (ऐजन) ।



साहित्यका अन्य विधाभन्दा पृथक आस्तित्व बोकेको कविता विधाका केही निजी तत्त्वहरू रहेका छन् । कवितामा कल्पना भाव र बुद्धि जस्ता आन्तरिक र रीति गुण, औचित्य र अलङ्कार जस्ता वाह्य तत्त्व रहेका छन् (बर्मा र अन्य २०१९ : ५०४) । भाव पक्ष र कलापक्ष काव्यका मुख्य तत्त्व हुन् (राय १९७५ : ४४) । यीनै मतहरूका आधारमा कविता निर्माणका लागि संरचना विषयवस्तु विम्ब प्रतीक र अलङ्कार विधान, भाषाशैली आदिलाई कविताका प्रमुख तत्त्व मानिन्छन् ।

### ५.३ संरचनाका आधारमा 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

कायाकल्प (२०६२) कविता सङ्ग्रह चङ्की श्रेष्ठद्वारा लिखित अराजकताको विद्रोह, उत्तेजक विचार र त्रासदीय मानवीय जीवनको चित्रणमा आधारित छ । कवितालाई शब्दको रमिता, प्रकृतिको वखान बुनोट र वाचनको बिलासिताको सिकार बनाउनु यसको शक्तिलाई अस्वीकार गर्नु हो भन्ने धारणा व्यक्त गर्ने कवि श्रेष्ठले आफ्ना कवितामा वैचारिकता र विषयवस्तुको सघनतामा जोड दिएका छन् । गद्य शैलीमा लेखिएको यस कविता सङ्ग्रहमा जम्मा ४३ वटा लामा छोटो कविता रहेका छन् । श्रेष्ठको एक मात्र कविता सङ्ग्रह यस कायाकल्प ६६ पृष्ठको आयाममा पूर्ण भएको छ । १ देखि ९ पृष्ठ सम्म भित्री कभर, प्रारम्भ, साभार, आभार कविताक्रम जस्ता प्रसङ्गले ओगटेको छ भने ६३ देखि ६६ पृष्ठमा र अन्त्य नामक लेख (राजकुमार बानियाँको) समाहित रहेको छ । उनका कविता शीर्षकका ४३ वटा लेख मध्ये 'आत्मकथा', 'आगो र फूलको कहानी', 'अभिषप्त' जस्ता तिनवटा लेख गजल नियम मुताविक रदीप, काफिया, आक्षरीक बहर जस्ता विशेषताले भरिपूर्ण रहेका छन् । अन्य कविताहरूमा 'अब सत्यलाई पनि साक्षी चाहिएको छ', 'कायाकल्प', 'क्रान्तिको पाठशाला', 'हत्या', 'जसको मुद्दा छिनिन्न', 'प्रचलित न्यायलयमा', 'म यो स्वतन्त्र भूमिको कैदी', 'भोक र प्रेम', 'एउटा अनौठो धारावाहिक', 'भैरव रथयात्रा', 'आँसुको पहाड', 'तिम्रो अनुहारको ऐना' 'हतियार निर्माता', 'देश बगाउन तम्तयार यी नदीहरू', 'जाडो, आगो र सपनाहरू', 'हावाको सौन्दर्य', 'रगतको महासागर', 'मेरो पोटानियाको दुरी', 'यात्रा', 'इतिहास', 'सबुद', 'छायाको पछि पछि', 'सहरका बत्ती निभेको एक साँभ', 'गलत मान्छे (प्रसङ्ग १)', 'प्रत्यावर्तन', 'अर्धासत्य', 'भीडमा अनुहार', 'गलत मान्छे',

‘आत्माको हत्या विरुद्ध’, ‘हराएको देश’, ‘अन्धाको रड’, ‘भ्रमको पर्दा च्यातिएको दिन’, ‘चिसो’, ‘पूर्वकथा’, ‘हतियार’ र ‘घडी फूलमा समय’ रहेका छन् । ‘हतियार निर्माता’ र ‘मेसोपोटामियाका आकाशमा’ नामक कवितामा मात्र रचना समय उल्लेख भएको र अन्यमा नभएका कारण सबै कृतिको रचना समय सन्दर्भलाई बुझ्न सकिदैन । हतियार निर्माता वि.सं. २०५९ मा र मेसोपोटामिया वि.सं. २०६२ को भएका कारण र अन्य कथाको घटना वा विषयवस्तु हेर्दा माओवादी जनयुद्धको बेला यही २०५२ देखि २०६२ भित्र हुन भन्ने अनुमान हुन्छ ।

गद्यात्मक शैली लघुत्तम आयाममा भावगत र वैचारिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत गरेर लेखिएका उपयुक्त सबै कविताहरूको शीर्षक चयन अभिधात्मक किसिमको छ भने सिङ्गै पुस्तकाकार कृतिको शीर्षक चयन प्रस्तुत पुस्तकमा समाहित दोस्रो कविताको शीर्षक नै राखिएको छ । कायाकल्पको अर्थ औषधी उपचारद्वारा तन्दुरूस्त बनेको तरूनो पन आएको वा व्यापक परिवर्तन उलटपुलट हो । कविले हाम्रो देशलाई पुनः तरूनोपन वा व्यापक परिवर्तन गर्ने आकांक्षा अनुरूप यस्तो शीर्षक चयन गरेको देखिन्छ ।

यस कविता सङ्ग्रहमा तिन वटा त गजल नै प्रस्तुत छन् भने अन्य कवितामा ३ देखि ८ अनुच्छेदको प्रयोग पाइन्छ । जसमध्ये तीन श्लोकका ५, चार श्लोकका ८, पाँच श्लोकका १४ छ, श्लोकका ११, सात श्लोकको १ र आठ श्लोकको १ रहेका हुन् ।

यसरी सर्वसाधारण जनताका पक्षमा कलम उठाउने कवि चड्की श्रेष्ठका कविता गद्यात्मक शैली मार्मिक भाव वहन गर्ने खालका छन् ।

#### ५.४ विषयवस्तुका आधारमा ‘कायाकल्प’ कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

विषयवस्तु कवितामा भावाभिव्यक्ति गर्ने मुख्य तत्त्व हो । कविताको विषयवस्तुका रूपमा कविको अनुभूति आएको हुन्छ र कवि त्यो अनुभूति कवितामा कुनै न कुनै विषय वा विचारसँग सम्बद्ध भएर आएको हुन्छ । कविले कुनै न कुनै विषयमा विचारलाई अनुभूति तुल्याएर कविताको रचना गरेको हुन्छ (लुइटेल्, २०४६ : ११६) । चड्की श्रेष्ठले आफ्ना कविताहरूमा हाम्रो देशको विग्रदो स्थिति, क्रान्तिकारी

विचार र त्यो विचारले जनतामाथि पारेको प्रभाव, प्रेम, बिस्फोट, जात्रा, पीत पत्रकारिता, राजनीतिक प्रतीकको व्यङ्ग्य, रासेल कोरीका भावुक सम्बोधन, जनयुद्धको विरोध जस्ता विषयवस्तुलाई समेटेका छन् । पेसाले पत्रकार रहेका श्रेष्ठ जनताको हितमा कलम चलाउने युवा साहित्यकार हुन् । उनी पत्रकार भएका नाताले उनले बनाउने समाचारलाई पनि कवितामा समेट्न सक्नु उनको बौद्धिकता हो । कुनै पनि पार्टीमा संलग्न नभएका कवि माओवादी जनयुद्धको चपोटेमा परेका जनताको भावनालाई पनि आफ्ना कवितामा समेट्न पुगेका छन् ।

देशको विग्रदो स्थितिको व्यङ्ग्यलाई आफ्ना कवितामा समेट्न पुगेका कविले अब ध्रुवसत्य कुराको पनि साक्षी चाहिने बेला आएको विश्वासमा अडिएको संसार लथालिङ्ग भएको विषयलाई यसरी समेटेका हुन् :

अब सत्यलाई पनि  
सत्य सावित हुन साक्षी चाहिएको छ  
घामलाई घाम हुन्  
जुनलाई जून हुन्  
आकाशलाई आकाश हुन साक्षी चाहिएको छ (पृ. ९)

प्रगतिशिल धाराका कवि श्रेष्ठले माओवादी जनयुद्धलाई मुख्य विषयवस्तु बनाएर कविताको रचना गरेका छन् । उनका यस्ता कविताहरूमा 'कायाकल्प', 'क्रान्तिको पाठशाला', 'एउटा अनौठो धारावाहिक', 'आँसुको पहाड', 'रगतको महासागर', 'भ्रमको पर्दा च्यातिएको दिन', जस्ता कविता रहेका छन् । कविले जनयुद्धमा जनताले भोग्नु परेको सास्तीलाई कविता मार्फत् यसरी उठाएका छन् :

खोलाका किनार र बगरमा  
खेतका कान्ला र कल्याणहरूमा फैलिएको,  
लाशको असैह्य दुर्गन्ध र  
संसारका यावत सृष्टिलाई खरानी बनाउने ... (पृ. २०)

चर्किदै चर्किदै चकनाचुर हुन आँटेको  
तिम्रो अनुहारको ऐनामा  
देखिदै तिम्रै अनुहार पनि टुक्रा टुक्रा (पृ. २३)

काठमाडौंली नेवारी समाजमा जन्म हुर्केका कविले नेवारी परम्परामा प्रचलित बिस्केट यात्राको प्रसङ्ग समेटेर भैरव रथयात्रा नामक कविताबाट राजनीतिलाई यसरी व्यङ्ग्य गरेका हुन् :

हामी आतुर छौं रथ तान्न आ-आफ्नो पक्षमा  
मानौं देशको अर्को नाम नै रथ हो  
हामी निरन्तर रथ तानिरहेछौं  
र प्रदर्शन गरिरहेछौं आ-आफ्ना गौरव र वीरता (पृ. २९)

त्यस्तै श्रेष्ठ पीत पत्रकारितालाई पनि विषयवस्तु बनाएर कविता लेखेका छन्

त्यही सम्पादक  
छापिरहेछ आज मेरो विरूदावली  
जसले कुनै दिन.....  
थमाइदियो मलाई अवकाशपत्र.....  
उसको नेता विरूद्ध उम्मेदवारी दिएको भोकमा  
गरिदिएको थियो मेरो पिताजीको हत्या (पृ. ३४) ।

## ५.५ बिम्ब, प्रतीक र अलङ्कार विधानका आधारमा 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

कायाकल्प कविता सङ्ग्रहका कविताहरूमा कवि चड्की श्रेष्ठले बिम्ब प्रतीक र अलङ्कारहरूको प्रयोग गर्दै कवितालाई प्रभावकारी र रोचकीय बनाएका छन् । विश्लेष्य कविता सङ्ग्रहका बिम्ब, प्रतीक र अलङ्कारको छुट्टा छुट्टै चर्चा यसरी गरिएको छ ।

### ५.५.१ बिम्ब प्रयोग

बिम्ब कविताको एउटा प्रमुख तत्त्व हो । जसले कवितालाई स्तरीकरणतिर डोर्‍याएको हुन्छ । बिम्ब कविताका संरचना वा बुनोटका तहमा प्रयुक्त हुने कविताको एउटा महत्त्वपूर्ण लघु घटक हो (भेटवाल, २०६९ : ७३) । बिम्बको प्रयोगले कविता आस्वादनमा महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । बिम्ब कविको

कल्पना मात्र नभएर पाठकका अनुभूतिको व्यञ्जन पनि हो (भेटवाला, २०६९ : ७४) । कवि चङ्की श्रेष्ठले कायाकल्प कविता सङ्ग्रहमा दृश्यात्मक बिम्बको प्रयोग गरेका छन् । उनका कवितामा प्रयुक्त बिम्बहरूलाई यसरी देखाउन सकिन्छ :

### (क) दृश्य बिम्ब

हेर्न अभिशप्त छु  
एउटा अनौठो धाराबाहिक  
कहिल्यै जित्न नसक्ने दुरूह खेलको  
साक्षि हुन् सडकमा, खेतका आलीमा र वनमा वुट्यानहरूमा  
तिम्रो अनुहारको ऐनामा (पृ. २०)

मान्छेहरू हेरिरहेछन् यो देशको अनुहार (पृ. २३)

म देखिरहेछु  
प्रत्येक बिहान एउटा असम्भार हुरी  
दक्षिण तिर हुनहुनाउँछ  
मान्छेहरू जोडले दक्षिणतिर दौडिरहेका हुन्छन् ..... (पृ. ३६)

मलाई बाटो देखाउदै  
मेरो अघि अघि हिड्दैछ मेरो छाया (पृ. ४१)

### (ख) श्रव्य बिम्ब

श्रेष्ठका कवितामा श्रव्य बिम्बको प्रयोग यसरी भएको छ :

अन्धाको रङ्जस्तो समयको पदचाप सुनिन्छ बारम्बार  
तर, कानमा तेल हालेर मौन मुद्रामा छन् मानिसहरू  
के त्यसो भए रोकिन्छ अब समयको गति ? (पृ. ११)

काला मेघहरू उत्तरबाट दक्षिण हुँदै  
गड्याङ्ग-गुडुङ्ग गरिरहेका थिए  
धरती सुकोमल छातिमाथि  
चट्याङ्ग प्रहार गरिरहेका थिए (पृ. ४८)

### (ग) आस्वाद्य बिम्ब

श्रेष्ठका कवितामा आस्वाद्य वा स्वाद बिम्बको प्रयोग यसरी गरिएको छ :

मेरो शरीरलाई  
पसल थापेर सजाइएको छ सोकेशमा  
फ्राइ गरेर पस्केका छन् मेरो मुटुका टुक्राहरू (पृ.१६)

कति मिठो हावाको त्यो स्पर्श (पृ.३६)

चिसो आचाक्ली बढेपछि  
निकै महङ्गिएको छ रायोको स्वाद  
प्रिय भ एका छन् गाँजा र चुरोटको सर्को  
चिया र कफीको सर्को (पृ.५८)

### (घ) स्पर्श सम्बन्धी बिम्ब

यसैगरी श्रेष्ठका कवितामा स्पर्श सम्बन्धी बिम्बको पनि प्रयोग यसरी भएको देखिन्छ :

गर्जरहेछ त्यस बेला वादल निरतर  
र प्रहार गरिरहेछ चट्याङ् धरती र आकाशको सुकोमल छाती भित्र (पृ.३६)

प्रत्येक बिहान  
एक सर्को हावा मेरो सामु आउँछ  
र मायाले सुम्सुमाउँदै मलाई उत्तर तिर जान्छ (पृ.३६)

कति मिठो आवाको त्यो स्पर्श (पृ.३६)

यसरी विभिन्न बिम्बका माध्यमले चङ्की श्रेष्ठका कवितालाई आस्वाद्य र व्यञ्जनात्मक बनाउन सफल भएको देखिन्छ ।

## ५.५.२ प्रतीक प्रयोग

प्रतीक प्रयोग कविताको एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । कुनै पनि कुरालाई सोभै नभनेर त्यसलाई घुमाउरो पाराले भन्नु नै प्रतीक हो । साहित्यमा कुनै वस्तु वा घटनालाई साङ्केतिक गर्ने शब्द वा पद समुहका लागि मात्र प्रतीक शब्दको प्रयोग गरिन्छ र यसले एक वा अनेक वस्तुलाई सङ्केत गर्दछ (भेटवाल, २०६९ : ७८) । काव्य वा कवितामा अभिधेयार्थ वा वाच्यार्थ भन्दा पर लक्ष्यार्थ वा व्याङ्ग्यार्थलाई प्रस्तुत गर्ने प्रक्रियालाई रचनाकारले साभै नभनी घुमाउरो पाराले अर्को अभिव्यक्ति प्रस्तुत गर्दछ ।

चङ्की श्रेष्ठले आफ्ना कविताहरूमा प्रतीकका माध्यमबाट ठाउँ ठाउँमा भावाभिव्यक्तिलाई सशक्त बनाएका छन् । कायकल्प कविता सङ्ग्रहका धेरै जसो कविताहरूमा उनले विभिन्न प्रतीकहरूको प्रयोग गरेका छन् । यसले कवितालाई व्याङ्ग्यात्मक एवम् ध्वन्यात्मक बनाएको छ । देशमा भइरहेको विकृति विसङ्गति एवम् जनयुद्धताकाको राजनीतिक अस्थिरता र जनतामा उत्पन्न त्रासलाई व्यक्त गर्ने सिलसिलामा कविले विभिन्न प्रतीकहरूको प्रयोग गरेका छन् । यस्तो प्रयोगले कवितामा थप सौन्दर्य वृद्धिका साथै अर्थगत चमत्कार प्राप्त भएको छ ।

चङ्की श्रेष्ठका प्रायः कविता माओवादी जनयुद्धताकाका रहेका छन् । त्यस बेलाको समयको वर्णन गर्ने क्रममा विभिन्न किसिमका प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । उनका 'वधपर्व' कथामा हत्यारालाई मौसम अनुसार बहकिने हावाको प्रतीकका रूपमा प्रयोग गरेका छन् । 'उत्तरगामी हावा'मा कविले राजनीतिमा परेको बाहिरी हस्तक्षेपलाई उत्तरगामी हावाको प्रयोग गरेका छन् । 'यात्रा' कवितामा लासका टुक्रा, फलेका रूख, मान्छेको हड्डी, कोचिएको टोड्का, रगतको नदी, गिद्द जस्ता प्रतीकको संज्ञा दिएका छन् । इतिहासमा साँभ सपनाको हत्या जस्ता शब्दहरू प्रतीकका रूपमा आएका छन् । त्यस्तै 'सवूत' कवितामा सेतो कागज, जोताहाको खेत, सत्यको मसानघाट सहरमा बत्ती निभेको साँभ,

जस्ता शब्द देशको कारुणिक गुर्जदो स्थितिको प्रतीकको रूपमा आएको छ । देव देवी मुगलान पस्नु, देशको धार्मिक, साँस्कृतिक सम्पदाको नष्ट भएको भन्ने प्रतीकका रूपमा आएका छन् । 'गलत मान्छे' कवितामा क्षितिज पारी डुब्न लागेको घामले मानिसको अस्तित्व हराउन लागेको छ भन्ने कुरालाई प्रतीकात्मक रूपमा अर्थाउँछ । खुट्टा र पखेटा काटिएका परेवाले जनयुद्धका समयम पिडित बन्न पुगेको सर्वसाधारणलाई जनाएको छ भने खुट्टा र पखेटा काट्नेलाई माओवादीको प्रतीकका रूपमा अर्थाउन सकिन्छ । 'प्रत्यावर्तन' कवितामा प्रयुक्त गंगालालको सालिकमाथि हानिएको हतौडाले सहिद प्रतीकको अपमानलाई प्रतीकात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेको छ । 'भिडबाट अनुहार' कवितामा भिडमा हराएको मानिसको अनुहार, रङ्ग र आफ्नो ब्रहमले मान्छेको धरापमा परेको मानवताको अस्तित्वलाई प्रतीकात्मक रूपमा अर्थाएको छ । 'हराएको देश' कवितामा कविले देशको अस्तित्व, गोर्खालीको गुनगानलाई धरापमा पारेको भन्ने अर्थमा हराएको देशलाई प्रतीकका रूपमा व्याख्या गरेका छन् । 'हतियार' कथामा नङ्गताको प्रतीकका रूपमा हतियार आएको छ । यसरी कवि अभय श्रेष्ठले आफ्ना कवितामा विभिन्न किसिमको बिम्ब तथा प्रतीक को प्रयोग गरेका छन् ।

### ५.५.३ अलङ्कार प्रयोग

कथामा सौन्दर्य पैदा गर्ने कारक तत्त्वलाई अलङ्कार भनिन्छ । अलङ्कारको शाब्दिक अर्थ गहना वा आभूषण हो । यसले कवितामा लयात्मक र भाव सौन्दर्यका अभिवृद्धिमा मद्दत गर्दछ (भेटवाल, २०६९ : ८१) । अलङ्कार शब्दालङ्कार र अर्थालङ्कार गरेर दुई किसिमका हुन्छन् । शब्दालङ्कारमा शब्दको चमत्कारिता हुन्छ भने अर्थालङ्कारमा अर्थको चमत्कारिता हुन्छ । चङ्की श्रेष्ठका कविता गद्य लयमा रचिएका छन् । उनका कवितामा उपमा, अलङ्कार, अतिशयोक्ति अलङ्कार जस्ता अलङ्कारको प्रयोग पाइन्छ ।



(क) उपमा अलङ्कार

उपमा अलङ्कारका नमुनाहरू यसप्रकार छन् :

घाममा सुकाइएको दाख जस्तै चाहुरिन  
जब गरिरहेको थिएँ अस्वीकर (पृ.१४)

बिहानीको घाम भैं  
फैलायौ तिमीले म तिर प्रेमको सिरानी (पृ.१८)

(ख) अतिशयोक्ति अलङ्कार

अतिशयोक्ति अलङ्कारका नमुनाहरू यस प्रकार छन् :

यिनै रगत वगेको खोलाहरू तर्दै  
यिनै हाँगा-हाँगामा लाशका टुक्र फुलेका रूख  
यिनै मान्छेका हड्डी कोचिएका टोड्काहरू हेर्दै .... (पृ.३८)

अनन्त समुद्र जस्तो यो भीडमा  
अनगिन्ती टाउकाहरू छन्  
अनगिन्ती शरीरहरू छन् ..... (पृ.४७)

यसरी अभय श्रेष्ठका अन्य अलङ्कारको प्रयोग भेटाउन नसकिएका कारण यस कविता सङ्ग्रहमा उपमा र अतिशयोक्ति अलङ्कारको प्रयोग भेट्न सकिन्छ ।

## ५.६ भाषाशैलीका आधारमा 'कायाकल्प' कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

भाव अभिव्यक्तिको माध्यम भाषा हो । भाषालाई प्रस्तुत गर्ने तरिका शैली हो । आफूमा निहित अन्तर्भावलाई प्रकाशन गर्ने सन्दर्भमा कविले भाषालाई साधन बनाउँछ (पौडेल, २०६३ : ७७) । अन्य साहित्यिक विधाको भाषाभन्दा कविताको भाषा नितान्त भिन्न हुन्छ । कथा, उपन्यास, नाटक लगायतका विधाका तुलनामा कविताको भाषा बढी आलङ्कारीक र प्रतीकात्मक हुने गर्दछ । कविताको भाषा गद्यात्मक र पद्यात्मक दुबै हुन्छ । गद्यमा सामान्य वा सोभो अभिव्यक्ति र व्याकरण सम्मत विचलनयुक्त भाषिक प्रयोग हुन्छ (भेटवाल, २०६९ : ८७) ।

कविताको भाषा विशिष्ट लयात्मक, विचलनयुक्त र गद्यात्मक वा पद्यात्मक खालको सरल र सुकोमल हुन्छ । शैली साहित्यकारको आफ्नो मौलिक वा निजीपना हो । कवितालाई काव्यात्मक उचाइमा पुऱ्याउने र स्रष्टालाई निजीपन दिने काम भाषाशैलीले गर्छ । कवि चड्की श्रेष्ठको कायाकल्प कविता सङ्ग्रह गद्यात्मक भाषामा लेखिएको छ । गद्यात्मक भएर पनि रोचकीय हुनु उनको काव्यगत प्रवृत्ति मानिन्छ । उनका कविताहरूमा माओवादी जनयुद्धबाट पीडित नेपाली जनताको पक्षमा आवाज उठाइएका छन् । त्यस्तै सामाजिक यथार्थ र संस्कृतिको चित्रण गर्ने उनका केही कविताहरू प्रेम प्रसङ्गका पनि रहेका छन् । उनका प्रायः कविता अभिधात्मक छन् । जसमा सामान्य भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ । त्यस्तै कतिपय कविता व्याङ्ग्यात्मक भएका कारण भाषामा केही क्लिष्टता देखिन्छ । समग्रमा चड्की श्रेष्ठका कविता सरल, सहज र सम्प्रेषणात्मक भाषाशैलीको प्रयोग गरेर लेखिएका छन् ।

## ५.७ निष्कर्ष

चड्की श्रेष्ठ (२०२८) ले नेपाली साहित्यका गजल, कविता र कथा जस्ता विधामा कलम चलाएका छन् । फूलविनाको शाखा गजल सङ्ग्रह प्रकाशित गरिसकेका श्रेष्ठले वि.सं. २०६२ मा कायाकल्प नामक कविता सङ्ग्रह लिएर कविताका फाँटमा देखिएका छन् । जम्मा जम्मी ६६ पृष्ठको उनको यस कृतिमा कूल ४३ वटा कविता सङ्ग्रहित छन् । गद्यमा लेखिएका उनका कवितामध्ये तीनवटा गजल संरचनाका ढाँचामा रचना गरिएका छन् । उनका यस सङ्ग्रहका प्रायः कविता माओवादी जनयुद्धताकाका घटनालाई आधार बनाएर लेखिएका देखिन्छन् । त्यस्तै कतिपय कवितामा नेपाली धार्मिक संस्कृतिको झलक पनि पाउन सकिन्छ । माओवादी जनयुद्ध र नेपाली जनताले भोग्नु परेका पीडालाई विषयवस्तु बनाएर लेखिएका उनका कवितामा विम्ब, प्रतीक र केही मात्रामा अलङ्कारको प्रयोग पनि देख्न सकिन्छ । कवि श्रेष्ठले कविता सङ्ग्रहको शीर्षक नै

प्रतीकात्मक रूपमा राखेका छन् । कायाकल्पको अर्थ औषधी उपचारद्वारा तन्दुरूस्त हुनु, तरूनोपन आउनु वा व्यापक परिवर्तन गर्नु भन्ने हुन्छ । यस आधारमा प्रस्तुत कविता सङ्ग्रह भित्रका कविताहरूले देशको मुहार फेर्ने वा देशमा व्यापक परिवर्तन ल्याउने आकांक्षा बोकेका छन् भन्ने अर्थमा यसको शीर्षक पनि सार्थक र उचित देखिन्छ । उपमा, अतिशयोक्ति जस्ता अलङ्कारको प्रयोग समेत गरिएका उनका कवितामा गद्यात्मक भाषाको प्रयोग पाइन्छ । गद्यात्मक भएर पनि रोचकीयता हुनु श्रेष्ठको उपलब्धि हो । उनका प्रायः कविता अभिधात्मक किसिमका छन् भने कतिपय कविता व्याङ्ग्यात्मक किसिमका छन् । कहीं कतै क्लिष्ट भाषाको प्रयोग बाहेक यत्रतत्र सामान्य भाषाशैलीको प्रयोग पाउन सकिन्छ ।

## परिच्छेद छ

### ‘तेस्रो किनारा’ कथा सङ्ग्रहको अध्ययन

प्रस्तुत परिच्छेदमा अभय श्रेष्ठको तेस्रो किनारा नामक कथा सङ्ग्रहको विधा तत्त्वका आधारमा समग्र विश्लेषण गरिएको छ । यस अन्तर्गत सुरुमा कविताको सामान्य परिचय, विषय परिचय प्रस्तुत गर्दै कथामा पात्र, दृष्टिबिन्दु, परिवेश, सारवस्तु, भाषाशैली जस्ता तत्त्वका आधारमा विश्लेषण गरिएको छ ।

#### ६.१ विषय परिचय

नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा गजल र कविता जस्ता विधामा कलम चलाइसकेका अभय श्रेष्ठको साहित्य साधना कथामा पनि देख्न सकिन्छ । पछिल्लो समयमा देखा परेका साहित्यकार अभय श्रेष्ठ कवि, गजलकार र कथाकारका रूपमा चर्चित छन् । चड्की साहित्यका यी तिन विधामा मात्र समिति छैनन् । उनी पेशाले पत्रकार हुन् । विभिन्न पत्र पत्रिकामा समाचार बनाउने श्रेष्ठका विभिन्न अखवारमा भिन्न भिन्न किसिमका लेखहरू लेखेका छन् । जे होस् श्रेष्ठ बहुप्रतिभाका धनी छन् भन्न सकिन्छ । अभय श्रेष्ठ कथाकारका रूपमा साहित्यमा सार्वजनिक हुनु पूर्व फूलविनाको शाखा (२०६०) नामक गजल सङ्ग्रह र कायाकल्प (२०६२) नामक कविता सङ्ग्रह प्रकाशनमा ल्याइसकेका छन् । यस कारण तेस्रो किनारा नामक कथासङ्ग्रह उनको तेस्रो साहित्यिक सन्तानका रूपमा साहित्यमा जन्मिएको कृति हो । नेपाली समाजमा व्याप्त रहेका कुकृति, कुप्रथा, अत्याचार जस्ता कुरालाई विषयवस्तु बनाएर त्यसलाई अन्य आभुषण लगाएर व्याख्या र विश्लेषण गर्न सफल कथाकार श्रेष्ठ आफूलाई साहित्यका नाम अभय श्रेष्ठ राखेर सो नामबाट चर्चित हुन पुगेका छन् । साहित्य यात्राको अन्तिम चरणमा प्रवेश गरेर पनि साहित्यमा स्थान जमाउन सफल भएका कथाकार अभय सशक्त कथाकारका रूपमा चर्चित छन् । चड्की श्रेष्ठ आफ्ना सुरुका कृतिहरू चड्की श्रेष्ठ नामबाट प्रकाहित भए तापनि उनको तेस्रो किनारा नामक कथासङ्ग्रह अभय श्रेष्ठका नामबाट प्रकाशित भएको छ ।

तिखर भाषाका तीक्ष्ण दृष्टियुक्त उनका साहित्यिक र समसामयिक स्तम्भ पनि उत्तिकै लोकप्रिय रहेका छन् । अभय श्रेष्ठ कथाका लागि २०६१ सालमा प्रज्ञा पुरस्कार, २०६५ सालमा प्रहरी द्वैमासिक उत्कृष्ट रचनामा कथा स्तम्भ लेखनका लागि दृष्टि साप्ताहिक स्तम्भकार सम्मान (२०६५), आमसञ्चारमा साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान (२०६०) पाइसकेका छन् (श्रेष्ठ, २०६८ : भूमिका) । वि.सं. २०४७ तिरैबाट साहित्य लेखनमा लागेका श्रेष्ठ सार्वजनिक रूपमा भने धेरै पछि देखिएका थिए । श्रेष्ठले आफू कथामा सार्वजनिक हुनु पूर्व नै कथाका लागि सम्मान थपिसकेका छन् ।

## ६.२ कथाको सामान्य परिचय

नेपाली साहित्यका विविध विधाहरू मध्ये कथा विधा लघु आयामको एक स्वतन्त्र विधा हो । कथाका बारेमा एडगर एलनपोको भनाइ छ 'कथा एउटा यस्तो कथात्मक कृति हो जुन छोटो हुनाले एक वसाइमा नै पढेर सिद्धयाउन सकिन्छ । पाठकमा एउटा प्रभाव जमाउनका निमित्त यो लेखिन्छ र यसरी प्रभाव जमाउन बाधा पर्ने कुरा यसमा रहन दिइँदैन । यो आफैमा पूर्ण हुन्छ' (श्रेष्ठ, २०६७ : ७) । यसरी कथा एक छोटो आयाममा लेखिने भएका कारण एकै वसाइमा पढेर भ्याइने स्वतन्त्र विधा जो जसले पाठकमा एउटा प्रभाव जमाउन सफल विधा हो ।

त्यस्तै लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाले पनि कथालाई एउटा सानो भ्यालसँग तुलना गर्दै लेखेका छन् "छोटो किस्सा एउटा सानो आँखीभ्याल हो जहाँबाट एउटा सानो संसार चियाइन्छ ..... थोरैमा मीठो र भरिलो हुनु छोटो किस्साको बानी हो ..... यो जत्तिको समाज सुधारक र मनुष्य उपर प्रभावकारी कुरा अरू छँदै छैन कि जस्तो लाग्छ । यसैमा सबै रस निकाल्न सकिन्छ ..... यसमा कला छ ..... यसको ढङ्ग नाटकीय हुन्छ । चट्ट जीवनलाई एक दृश्यमा छुन्छ" (श्रेष्ठ, २०६७ : ८) ।

यस आधारमा कथा एउटा सानो आँखीभ्याल हो जहाँबाट समग्र जीवनलाई देख्न सकिन्छ भन्दै थोरैमा धेरै कुरा बोकेको नाटकीय विधा हो भनी कथाको चर्चा गरेको पाइन्छ ।

कथा एक यौगिक रचना हो । जसको निर्माणमा विभिन्न एकाइको आवश्यक पर्दछ ती एकाइलाई तत्त्व भनिन्छ । ती एकाइ वा तत्त्वका बीचमा अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहने हुनाले तिनको अध्ययन हुनु आवश्यक छ । तर कथाका तत्त्वहरू के के हुन्छन् भन्ने बारेमा विभिन्न वैज्ञानिक बिच मतभेद हुनु स्वभाविक हो ।

ब्रान्डर म्याथ्युजले कथाको चर्चा गर्दै छोटो तर आफैमा पूर्ण कथानकको चर्चा गरेका छन् भने चरित्रका बारेमा पनि आफ्नो मत अधिसारेका छन् । यीनले कथाको उद्देश्य र भाषाका बारेमा पनि सङ्केत गरेका छन् (वराल, २०६९ : ५४) । यसप्रकार ब्रान्डर म्याथ्युजले कथाको तत्त्वका रूपमा कथानक, पात्र, उद्देश्य, भाषाशैलीलाई औल्याएका छन् । त्यस्तै एकोल्सले आख्यानका सन्दर्भमा कथानक, चरित्र, सारवस्तु, दृष्टिबिन्दु तथा भाषालाई महत्त्व दिएका छन् (वराल, २०६९ : ५४) । त्यसैगरी कृष्णहरि वरालले कथा सिद्धान्तमा जसरी घर बनाउन खाँबो भ्याल ढोका, गाह्रो आदिको आवश्यकता पर्दछ त्यसैगरी कथालाई कथा बनाउन पनि विभिन्न कुराले भूमिका खेलेको हुन्छ भन्दै कथानक, चरित्र, परिवेश, भाषालाई कथाको तत्त्व मानेका छन् (वराल, २०६९ : ५४) । यसरी यीनै धारणा अनुसार कथाको तत्त्वका रूपमा कथानक, चरित्र चित्रण, दृष्टिबिन्दु, परिवेश, सारवस्तु, भाषाशैलीलाई लिन सकिन्छ ।

### ६.३ कथानकका आधारमा 'तेस्रो किनारा' कथा सङ्ग्रहको अध्ययन

कथानक भनेको कथाकारले कथामा गर्ने घटनाहरूको व्यवस्थापन वा रखाइ हो । कुनै पनि घटनालाई तारतम्य मिलाएर राखेर कथाको निर्माण हुन्छ । यसैले घटना वा कथानक नभई कथाको निर्माण हुन सक्दैन । यसकारण कथानक कथाको प्रमुख तत्त्व हो । कथाकारले घटनाहरूको तारतम्य कुन रूपमा राखेको हुन्छ त्यसैका आधारमा कथाको मापन हुने गर्दछ । कथाकारले घटित घटनालाई रोचक शैलीमा मिलाएर राखेका खण्डमा कथा पनि रोचक हुन्छ तर घटनाको रखाइ मिलेन भने कथाको स्वरूप नै खजमजिन पुगी कथा खल्लो बन्न पुग्छ । वास्तवमा कथानक वा कथावस्तु स्वयम् कथाकारको विचार धारणा वा अनुभूतिको मूर्त अभिव्यक्ति हो । कथाकार जुन देश, समाज, स्थान र अवस्थामा छ त्यस्तो प्रभाव उसका कथामा परेको हुन्छ । त्यसले पनि

कथाकारको मूल्य निर्धारण गर्दछ । यसकारण कथानक विना कुनै पनि कथाले गति लिन सक्दैन । आख्यानात्मक कृतिमा पात्र र घटनाको कार्यकारण सम्बन्ध प्रस्तुत गर्दै पाठकमा उत्सुकता जगाउने तत्त्वलाई कथानक भनिन्छ । वास्तवमा घटनावली वा क्रियासमूह स्वयम्मा कथानक बन्दैन त्यसलाई योजनावद्ध कलात्मक रूप दिएपछि कथानक बन्दछ । त्यस्तै जीवनको एउटा अंशको सङ्क्षिप्त व्याख्या नै कथानक हो । यसर्थ कथानक भनेको कथावस्तु हो र कथावस्तु भनेको कथामा प्रयुक्त विषयवस्तु हो जसविना कथापूर्ण हुन सक्दैन ।

यसकारण अभय श्रेष्ठ काठमाडौंली सहरीया परिवेशमा जन्मिएका र सोही वातावरणमा हुर्किएका कारण उनमा काठमाडौंली सहरीया परिवेशमा आधारित कथावस्तुको चयन गर्नु स्वभाविक हो । उनको यस **तेस्रो किनारा** नामक कथा सङ्ग्रहमा सङ्कलित चौधवटा कथाहरू पुरै भिन्न भिन्न कथानकमा आधारित भएका देखिन्छन् । श्रेष्ठ आफू पेसाले पत्रकार हुन् र उनी हुर्केको ठाउँ सहरीया परिवेश काठमाडौं जुन नेपालको राजधानी भएका कारण उनका प्रायः कथा, पत्रकारिता, समाचार सङ्कलन जस्ता विषयमा आधारित छन् । उनको **तेस्रो किनारा** नामक कथामा नेपालमा प्रचलित कमैया प्रथाको विषयलाई आधार मानेर रचना गरिएको छ । मध्यपश्चिम र सुदूर पश्चिमको घटनालाई समेटेर लेखिएको यस कथामा कथाकार श्रेष्ठ यस्तो प्रथाको कटु आलोचनाका रूपमा देखिएका छन् । नेपालमा प्रचलित कमैयाप्रथा र सो प्रथाले पोलिएका दमित बनेका पात्रको मनोदशा चित्रण गरिएको उनको यो कथा अत्यन्त दर्दनाक र मर्मस्पर्शी बनेको छ । राजा महाराजा भनाउँदाबाट कमैया बन्न बाध्य पारिएकाहरू शारीरिक र मानसिक रूपमा कति विकृष्ट बनेका छन् भन्ने कुराको उल्लेख यस कथामा पाउन सकिन्छ । त्यस्तै 'वेग्लै मान्छे' नामक कथामा कथाकारले मानिसको मन ठूलो भएमा अरूलाई सहयोग गर्न धन नै पर्याप्त हुनु पर्दैन भन्ने कुरालाई देखाउन खोजिएको छ । यस कथामा कथाकारले म पात्र उसका बाबु र आमाको विषयलाई समेटेर स्वार्थी समाजका धनी भनाउँदाहरूलाई तिखो व्यङ्ग्य वाण प्रहार गर्न सफल भएका छन् । सामान्य परिवारको म पात्रको बाबु अरूले दुःख पाएको देखेर आफूले लगाएको जुत्ता फुकालेर दिएर आफू नाङ्गै खुट्टा घर आएको प्रसङ्ग

देखाएर धन भएर पनि मन नहुने प्रति तिखो व्यङ्ग्य प्रहार गरेका छन् । त्यस्तै सानो सानो कुरामा निहुँ खोजेर मरेको लास उठाएर रमिता हुने रमितेको कथालाई कथामा जोडेर कारुणिकताको चित्रण गरेका छन् । त्यस्तै सङ्घर्ष कथामा मानिसले जीवन जिउने क्रममा मानिसमा आइपर्ने घटना र ती घटनाहरू सँग गर्नुपर्ने सङ्घर्षको उल्लेख गर्दै मानिस भएर दुःखमा हार खानु हुँदैन र सुखमा मात्तिनु हुँदैन भन्ने कुरालाई विषयवस्तुका रूपमा उतारेका छन् । यस कथामा म पात्र आफ्नो जीवनमा आइपरेका समस्या र ती समस्या सुल्झाउनका निम्ति गरेका सङ्घर्षको वर्णन यस कथामा चित्रण गरिएको छ । त्यसैगरी 'निर्वाण' कथामा निर्वाण भनेको सारा अन्धकार पन्छाएर प्रेमको उज्यालोमा छिर्नु हो भन्ने कुरालाई स्पष्ट पारिएको छ । उक्त रूपमा म पात्र पूर्व प्रेमिकाको रतिरागमा मोहित बनेको कुराको उल्लेख गर्दै म पात्रको यौनकुण्ठाको वर्णन पाइन्छ । म पात्र पूर्व प्रेमिकालाई मार्ने उद्देश्यका साथ उसलाई पछ्याइ रहेको दृश्यको वर्णन छ । तर अन्त्यमा बालकप्रति पूर्व प्रेमिकाको अपूर्व प्रेम देखेर म पात्रमा आएको परिवर्तन अप्रत्यासित तर शानदार बनेर कथा टुङ्गीएको छ । महाभारत कथामा कथाकार श्रेष्ठले पौराणिक विषयवस्तु र पात्रका माध्यमबाट वर्तमान समय र परिस्थितिलाई ढालेर कथाको निर्माण गरिएको छ । मिथकीय धरातलमा टेकेर वर्तमानको समय तथा घटनाको परिचय दिनु श्रेष्ठको महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मान्न सकिन्छ । विदेशी प्रभुको शरण नपरी चुनाव जित्न नसकिने कुरालाई व्यङ्ग्यका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । भारत र चिनको रिमोटमा नेपाल चलन पुगेको छ भन्ने कुरालाई सान्दर्भिक रूपमा उठाइएको कथा हो 'महाभारत' । त्यसैगरी 'समेरूमा द्रौपदी' नामक कथा पनि मिथकीय विषयवस्तुलाई मुख्य आधार मानेर लेखिएको पौराणिक एवम् मिथकीय कथा हो । उक्त कथा नारीको संवेदना माथि विद्रोही कथा हो । यस कथामा नारी अवला छे भन्ने कुरालाई देखाइएको छ । सानो कुराको विजयका खातिर ऊ पाँच-पाँच जनाकी श्रीमती भएर बाँच्नुपर्ने र श्रीमान् जुवामा हाँरिदा ऊ थापिन वाध्य पर्नु जस्ता विविध कारणबाट उठन सक्नुपर्छ भनेर नारीका पक्षमा लेखिएको उक्त कथा विद्रोही प्रवृत्तिको कथा हो भनेर भन्न सकिन्छ ।



‘महान कलाकार’ नामक कथामा एउटा महान कलाकारको दुर्घटनामा मृत्यु भएको छ, उसको बारेमा एउटा न्युज बन्न वा न्युज बनाउन पत्रकारको सम्मेलन भएको छ। सो सम्मेलनमा हट नायिका देखि अन्य अन्यको सहभागिता देखाइएको छ। महान कलाकार भएर पनि उ जतातैबाट अपहेलित र अपमानित भएर बाँच्नु पर्दाको पीडालाई लिएर लेखिएको कथा हो। हाम्रो देशमा कथाकारको स्थान र अवस्था कस्तो रहेको छ भन्ने कुरालाई व्याङ्ग्यात्मक रूपमा देखाइएको छ। हाम्रो देशमा कलाको अवमूल्यन भएको छ, भन्ने कुरालाई तिख्खर रूपमा देखाउन खोजिएको छ। त्यस्तै सम्पादकको हृदय नामक कथा सञ्चार क्षेत्रमा देखिएका विकृति र विसङ्गतिलाई मुख्य आधार बनाएर लेखिएको कथा हो। उक्त कथामा पत्रकार भएर पनि उसले समाचार बनाउन सम्पादकको वा अन्य ठूला-ठूला नभउँदाको अनुमति लिनुपर्ने नत्र सजायको भागिदार हुनुपर्ने वाध्यात्मक परिस्थितिको चित्रण पाइन्छ, भने भुरवा कथामा भुरवा नामक ठाउँमा भएको बाहुन र मुसलमानहरूको युद्धलाई देखाएर मुसलमानहरूको क्रुरताको चित्रण गरिएको कथा हो। यस कथामा मुसलमानको मर्म नबुझेको कुरा र मानवमा मानवता हराएको प्रसङ्गलाई व्याङ्ग्यात्मक रूपमा देखाइएको छ, र अन्तिममा मुसलमानबाट जीवन सङ्कटमा परेको व्यक्ति मुसलमानको सहयोगबाट बाँच्न सफल भएको प्रसङ्ग देखाएर मानवमा हुनुपर्ने मानवताको उल्लेख गरिएको छ। त्यसैगरी ‘अजम्मरी कथा’ साश्वत वेकारीको कारण दुर्घटनाग्रस्त र डाक्टरद्वारा मृत घोषित व्यक्ति पोस्टमार्टम रूमबाट व्यूँभिएर फर्किएको कारुणिक घटनामा आधारित कथा हो। यस कथामा नेपालमा प्रचलित मनपरीतन्को तिखो व्यङ्ग्य पाइन्छ। कुनै पत्रकार अपरिचित गाडीको ठक्करबाट घाइते हुनु र अस्पताल लगिनु, डाक्टरको कमजोरीका कारण ऊ मृत घोषित हुनु र पोस्टमार्टमकै बेलामा ऊ व्यूँभनु जस्ता घटनाको क्रुर आलोचना नै यस कथाको विषयवस्तु रहेको छ।

त्यस्तै अमेरिका नामक कथामा नेपालमा व्याप्त रहेको वेरोजगारी समस्याका कारण विदेशी मुलुकमा श्रम बेचन जान पनि भाग्य पर्खनुपर्ने समस्याको चित्रण पाइन्छ। नेपालका मान्छे डि.भी.को चाहना र कल्पनामा दिन गुजार्नुपर्ने स्थितिको चित्रण उक्त कथामा पाउन सकिन्छ। ‘मोडेल’ कथा आधुनिकताको कुरूप यथार्थलाई आधार

बनाएर लेखिएको कथा हो । यस कथामा मोडेल बन्नका निम्ति आफ्नो अस्तित्व डाइरेक्टरलाई सुम्पनु परेको कारुणिक घटना र आफ्नै प्राणभन्दा प्रिय आमाको मृत्यु हुँदा समेत घर फर्कने अनुमति नपाएकी र जस्तै पीडामा पनि उसकै अङ्गालोमा बाँधिन बाध्य भएको घटनाको चित्रण छ । भूमी सङ्गीत तपाइकै लागि नामक कथामा पनि आधुनिकताले निम्त्याएको विकृति र विसङ्गतिलाई मुख्य विषयवस्तु बनाइएको छ । त्यस्तै 'खवर, कहर र जहर' नामक कथा पनि पत्रकारितामा आधारित कथा हो । नेपालका सन्दर्भमा पत्रकार पेसाको व्यङ्ग्य गरेर लेखिएको उक्त कथामा पत्रकारितामा आएका प्रदुषणबाट भयाक्रान्त जीवनको प्रस्तुति पाइन्छ । पत्रकार भएर पनि सफल पत्रकारिता गर्न नपाइएको स्थितिको वर्णनका साथै जागिर बचाउन समाचार सङ्कलनका क्रममा आफ्नै बहिनीलाई गुमाउन परेको कारुणिक घटनाको चित्रण पाइन्छ । त्यस्तै गरी अ.त.को सत्याग्रह नामक कथा पञ्चायतको पृष्ठभूमिमा लेखिएको र विभिन्न शीर्षक उपशीर्षकमा लिखित कथा हो जो आफैमा नलेखिएको एउटा इतिहास हो । राजनीति बारे थाहा नभएका सीमान्तकृत वर्गका दुई किशोर गान्धी र सुकरातको कुरा गरेकै कारण अराष्ट्रिय तत्व कहलिएको र अनेक दुःख भल्नु परेको कारुणिक कथाका साथै एउटाको मृत्यु हुनु जस्ता कारुणिक घटनामा आधारित एक किशोरको स्मृति शैलीमा लिखित यो कथा अराजनीतिक पृष्ठभूमिबाट थलिएर चरम राजनीतिक मोडमा टुङ्गिएको कथा हो । यसरी विभिन्न विषयवस्तुलाई समेटेर लेखिएका श्रेष्ठका कथाहरू कथावस्तुका दृष्टिले सशक्त मानिन्छन् ।

#### ६.४ पात्र वा चरित्रका आधारमा 'तेस्रो किनारा' कथासङ्ग्रहको अध्ययन

कथामा कथानकलाई अगाडि बढाउनका निम्ति प्रयोग गरिने व्यक्तिलाई चरित्र भनिन्छ । चरित्र वा पात्र विना कथानकलाई अगाडि बढाउन नसकिने भएका कारण यो कथाको अनिवार्य तथा आवश्यक तत्व हो । कथामा पात्र वा चरित्रको महत्त्व किन हुन्छ भने यो पात्रकै क्रियाकलापसँग सम्बन्धित हुन्छ । समाख्यताले पात्रकै बारेमा आफैँ कतिपय टिप्पणी गरिरहेको हुन्छ र पात्रको संवाद र क्रियाकलाप पनि कथानक अगाडि बढिरहेको हुन्छ (बराल, २०६९ : ६५) । कथामा पात्रको उपस्थिति र उसको क्रियाकलाप सुन्दा त्यो कथाको समय र स्थान पनि अनुमान गर्न सकिन्छ र कतिपय

कथामा त समाख्याता नै कथाको पात्र हुने गर्दछ । यस अर्थमा पनि कथामा पात्र अनिवार्य हुन्छ र आवश्यक पनि हुन्छ ।

कथाकार अभय श्रेष्ठको **तेस्रो किनारा** नामक कथा सङ्ग्रह भित्रका कथामा कथाकारले 'म' पात्रको प्रयोग बढी गरेका छन् । उनका कथामा म पात्रको माध्यमबाट अन्य पात्रको व्याख्या विश्लेषण गरिएको छ । कथाकार श्रेष्ठ आफू पत्रकार भएको नाताले उनका प्रायः कथाहरू पत्रकारितामा आधारित छन् र ती कथाका पात्रहरू पनि पत्रकार 'म' रहेका छन् । तिनै पत्रकारले आफूले जीवनमा भोगेका यथार्थलाई वर्णन गरिएको छ । पछिल्लो चरणका कथाकार भएर पनि मिथकीय तथा पौराणिक पात्रहरूको प्रयोग उनका कथामा देखिएको छ । उनका कथाका पात्रहरूको सम्बन्ध प्रायः कथामा एउटै भूमिका र स्थान पनि देख्न सकिन्छ । उनका प्रायः कथामा म पात्र नामक पात्र सानै उमेरमा आमा त्याग्न पुगेको छ । यस दुःख पनि उनका अगाडिका केही कथा एकपछि अर्को कथाको क्रमानुक्रम हो कि भन्न सकिन्छ । उनका 'तेस्रो किनारा', 'वेग्लै मान्छे', 'सङ्घर्ष', 'निर्वाण', 'महान कलाकार', 'अजम्मरी', 'अमेरिका', 'खबर, कहर र जहर' जस्ता कथामा म पात्र सबै रूपमा देखिएको छ । 'महाभारत', 'सुमेरूमा द्रौपदी' जस्ता कथामा मिथकीय पात्रको प्रयोग पाइन्छ । त्यस्तै 'सम्पादकको हृदय', 'मोडेल', 'अ.त.को सत्याग्रह'मा ऊ पात्रको बढी चर्चा पाइन्छ । उनका कथाका पात्र वर्गीय व्यक्तिगत दुवै प्रकारका छन् । म पात्रका रूपमा आएका विविध रूपधारी पात्र वर्गीय पात्रको प्रतिनिधित्व गर्ने पात्र हुन भने उसको बाबु, आमा, नानीराम, सर, गाउँले युवक, जस्ता व्यक्तिगत पात्रको प्रयोग पनि श्रेष्ठका कथामा पाउन सकिन्छ । वेग्लै मान्छेका बा र आमा पनि व्यक्तिगत पात्रका रूपमा लिन सकिन्छ । यसरी विविध थरिका पात्रको संयोजन गरेर कथा लेख्ने श्रेष्ठले विविध पात्रको प्रयोग गरेर सबै पात्रको प्रतिनिधित्व गर्न पुगेका छन् ।

#### ६.५ दृष्टिबिन्दुका आधारमा 'तेस्रो किनारा' कथा सङ्ग्रहको अध्ययन

कथामा समाख्याताले कथा रचनाका लागि वस्न रोजेको ठाउँलाई दृष्टिबिन्दु भनिन्छ । कथाकारले आफ्नो दृष्टिकोणलाई बोक्ने पात्रको छनौट गर्दछ । दृष्टिकोण

वोक्ने पात्रलाई दृष्टिकेन्द्री पात्र भनिन्छ, र त्यस पात्रले कार्यव्यापार सम्पन्न गर्ने ठाउँ नै दृष्टिबिन्दु हो । दृष्टिबिन्दु भनेकै कथामा पात्रको स्थान हो । एउटा मुख्य पात्र जसले पाठको नालीवेली लगाउँछ त्यही पात्रले ओगट्ने स्थान नै दृष्टिबिन्दु हो (वराल, २०६४ : ११) । प्रायः कथाहरू तृतीय पुरूष र प्रथम पुरूष दृष्टिबिन्दुमा आधारित भएर रचना गरिएका हुन्छन् । अभय श्रेष्ठका प्रायःजसो कथाहरू प्रथम पुरूष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग पाइन्छ । यस्तो दृष्टिबिन्दुमा म पात्रको प्रयोग अनिवार्य हुन्छ । त्यसैकारण चड्की श्रेष्ठका प्रायः कथामा म पात्रको प्रयोग अलि बढी नै पाइन्छ । प्रथम पुरूष दृष्टिबिन्दु पनि केन्द्रीय र परिधीय किसिमको हुने गर्दछ । केन्द्रीयतामा कथा वाचक कथाको प्रमुख पात्र हुन्छ र उसले आफ्ना कुरा निजी प्रकारले भनिरहेको हुन्छ भने परिधीयमा म पात्रको उपस्थिति त रहन्छ तर केन्द्रीय घटना चरित्रभन्दा अलिपर बसेर घटनाको वृत्तान्त सुनाइरहेको छ । यस आधारमा अभय श्रेष्ठको 'तेस्रो किनारा', 'सङ्घर्ष', 'निर्वाण', 'भुरवा', 'अजम्मरी', 'खवर, कहर र जहर' जस्ता कथाहरू प्रथम पुरूष केन्द्रीय दृष्टिबिन्दुमा रचना गरिएका छन् । यी कथामा स्वयम् कथाकार नै कथाको प्रमुख पात्रका रूपमा उभिएको छ र घटनाको निकटतम भएर कथा वाचन गरेका कारण यी कथाहरू प्रथम पुरूष केन्द्रीय दृष्टिबिन्दुमा आधारित छन् भन्न सकिन्छ । त्यसैगरी उनका केही कथाहरू प्रथम पुरूष परिधीय दृष्टिबिन्दुमा आधारित भएर लेखिएका छन् । ती कथामा कथाकार म पात्रका रूपमा उभिएको त छ तर कथामा घटित घटनाहरू उसको आफ्नै वृत्तभन्दा बाहिर बसेर घटनाको वेलीविस्तार लगाएका छन् । ती कथाहरूमा : 'वेगलै मान्छे', 'महान कलाकार', 'अजम्मरी', 'अमेरिका', 'अ.त.को सत्याग्रह' जस्ता कथाहरू पर्दछन् । त्यस्तै श्रेष्ठका तृतीय पुरूष दृष्टिबिन्दुमा आधारित भएर रचिएका कथाहरूमा 'महाभारत', 'सुमेरुमा द्रौपदी', 'मोडेल' र 'भूमि सङ्गीत तपाइकै लागि' पर्दछन् । यसकारण श्रेष्ठका कथाहरू प्रथम र तृतीय पुरूष दृष्टिबिन्दुमा आधारित भएर रचना गरिएका छन् भन्न सकिन्छ ।

## ६.६ परिवेशका आधारमा 'तेस्रो किनारा' नामक कथा सङ्ग्रहको अध्ययन

परिवेश भनेको कथामा आउने घटना र चरित्रलाई उपयुक्त किसिमको पृष्ठभूमि प्रदान गर्ने दृश्य, कार्यको समय र ठाउँ हो । यसलाई देशकाल परिस्थिति वातावरण पनि भनिन्छ (बराल, २०६३ : १०) । यसरी प्रयुक्त कथा कुन ठाउँमा घटित भएको हो र त्यो घटना कहिलेको हो भन्ने स्पष्ट जानकारी नै परिवेश हो । देश कालको सही आयोजनाले कथामा वर्णन गरिने घटना र चरित्रले गरेको कामको विश्वासनीयता दिने काम गर्दछ । कुनै दुर्गम स्थान, त्यसका विशिष्ट पात्रहरू तथा त्यसैको उद्घाटन गर्ने उद्देश्यले कथाकारले आञ्चलिक कथाको सिर्जना गर्दछ (बराल, २०६३ : १०) । त्यस्तै वातावरण भन्नाले कथामा हुने कार्यले पाठकमा छाड्ने प्रभाव बुझिन्छ । कृति अघि बढ्दै जाँदा पाठकमा हुने दुःख, हर्ष, क्रोध, घृणा आदि भावहरूको प्रकटीकरण र तिनको परितृप्ति नै वातावरण हो (बराल, २०६३ : १०) । पात्रको मानसिक क्रियासँग यसको सोभो सम्बन्ध देखिन्छ । यसमा व्याङ्ग्यात्मक स्वर, आलोचना, दुःखान्त, त्रासद् आदि भाव आउँछन् (बराल, २०६३ : १०) । यस अर्थमा अभय श्रेष्ठ (चड्की) का प्रायः कथामा देशका रूपमा वा ठाउँका रूपमा काठमाडौँको सहर वरिपरिका दृश्यहरू देख्न सकिन्छ, भने काल वा समयका रूपमा २०६२-२०६३ को जनयुद्धताकाको समय झल्केको भान हुन्छ । उनले वातावरणका रूपमा उनका प्रायः कथामा कारुणिकताले स्थान जमाउन सफल भएको छ, भने यदाकदा व्याङ्ग्यात्मक भाव पनि वातावरणका रूपमा आएको छ । त्यस्तै एकान्त ठाउँ, उखुवारी, भित्रको उकुसमुकुसको चित्रण पनि उनका कथामा पाउन सकिन्छ । उनका 'महाभारत', 'सुमेरूमा द्रौपदी' जस्ता कथाहरू पौराणिक पृष्ठभूमिमा टेकेर लेखिएका कथा हुन् । महाभारत कथामा अभिधात्मक रूपमा पौराणिक कालको झल्को देखिए तापनि व्याङ्ग्यात्मक तरिकाले लोकतान्त्रिक चुनाव ताकाको परिवेशलाई घुसाउने प्रयास गरिएको छ । त्यस्तै भुरवा, नामक कथा सुदूरपश्चिममा व्याप्त कमैया प्रथालाई परिवेशका रूपमा उभ्याउँदै कमैया प्रथा उन्मुलन हुनुपूर्वको समयलाई आधार मानेर लेखिएको कथा हो । त्यस्तै तेस्रो किनारा नामक कथामा पनि मध्यपश्चिम र सुदूर पश्चिमको परिवेशमा आधारित भएर लेखिएको कथा हो । अन्य कथाहरू नेपालको राजधानी काठमाडौँलाई परिवेश बनाएर

लेखिएका छन् । ‘सङ्घर्ष’ कथामा भने श्रेष्ठले काठमाडौंको गाउँले परिवेशको चित्रण दिन हिला गरा, उकालो, नीलकाँडा विभने भाडी जस्ता प्रसङ्गको उल्लेख गरेका छन् । ‘वेग्लै मान्छे’, ‘निर्वाण’, ‘महान कलाकार’, ‘सम्पादकको हृदय’, ‘अजम्मरी’, ‘अमेरिका’, ‘मोडेल’, ‘भुमी सङ्गीत तपाइकै लागि’, ‘अ.त. को सतयाग्रह’, ‘खबर, कहर र जहर’ जस्ता कथाहरू सहरीया परिवेशमा आधारित कथाहरू हुन् । ठ्याक्कै समय नतोकेको भए तापनि यी कथाहरू २०६२-०६३ को जनआन्दोलन ताकाको समयको झलक दिने खालका छन् ।

यसरी श्रेष्ठ आफू सहरीया परिवेशमा जन्मे हुर्केका भएका कारण सोही परिवेशको चित्रण आफ्ना कथामा हुनु स्वभाविकै हो । यदाकदा एक दुई कथा मध्यपश्चिम तथा सुदूरपश्चिमको परिवेश ल्याउनु र केही कथा मिथकीय परिवेशमा रचनु उनको प्राप्ति मान्न सकिन्छ । श्रेष्ठ कारुणिक र व्याङ्ग्यात्मक वातावरणमा तल्लीन देखिन्छ ।

### ६.७ सारवस्तुका आधारमा ‘तेस्रो किनारा’ कथा सङ्ग्रहको अध्ययन

कुनै कृति पढिसकेपछि समग्रमा हामीले त्यस कथामा जुन भाव, अभिप्राय वा शिक्षा पाउँछौं, त्यही सारवस्तु हो । जसलाई हामी उद्देश्य पनि मान्दछौं । सारवस्तु शब्दले विषयवस्तुलाई नबुझाएर त्यसमा भएको गुदी वा मुख्य विचारलाई बुझाउने गर्दछ । विषयवस्तु सबै कथामा हुन्छ तर सारवस्तु सबैमा हुनुपर्दछ भन्ने छैन । कथानक, चरित्र, परिवेश, दृष्टिबिन्दु, प्रतीक तथा अन्य तत्त्वहरू व्यवस्थित गराएर कथालाई बाँध्ने बिन्दु पनि सारवस्तुले प्रदान गर्दछ (बराल, २०६९ : ९२) । श्रेष्ठ पेसाले पत्रकार हुन् उनी काठमाडौंली सहरी समाजमा जन्मिएर हुर्किएका हुन् र मानिस स्वभावैले राजनीतिमा झुकाव राखेको हुन्छ र उनको झुकाव क्रान्तिकारीतर्फ अलि छ कि जस्ता भान हुन्छ, यस अर्थमा पनि भन्न सकिन्छ कि मान्छेको व्यक्तिगत छाप उसका कृतिमा पर्नु स्वभाविकै हो । कथामा कथा कथा म पात्रको रूपमा चङ्की श्रेष्ठको पनि उपस्थितिको आभास हामीले पाउन सक्दछौं । अभय श्रेष्ठका कथाहरूले सामाजिक परिवर्तनको पक्षमा आवाज उठाएको भान यदाकदा हुने गर्दछ । समाजमा

व्याप्त कुरीति, कुकृतिको भण्डाफोर उनका कथामा देख्न सकिन्छ । श्रेष्ठका प्रायः कथाको सारवस्तु भनेको अवोध र शैशव कालमै आमाको निधन भोग्न पुगेका कथाकारको आत्मपीडनको अनुभूति र मृत्युको निर्दयताप्रति प्राहार गरिएको सटिक टिप्पणी देख्न सकिन्छ । त्यस्तै मान्छे आफूमा भएको गुण थाहा नपाएर कस्तुरी भैं आत्म सम्मोहित बन्न पुगेको स्थितिलाई पनि सारवस्तुका रूपमा देखाउन खोजिएको छ ।

श्रेष्ठको 'तेस्रो किनारा' कथामा मुलुकमा प्रजातन्त्र र जनअधिकारका कुराहरू जतिपटक उठाइए तापनि भूमिको व्यवस्था नागरिक र अर्थिक अधिकारका प्रश्नहरू जहातही रहेको र सरकारले जति घोषण गरे तापनि दास प्रथा र कमैया प्रथा उन्मूलन हुन नसकेको भाव प्रस्तुत गरिएको छ । त्यस्तै वेग्लै मान्छे कथामा मानिस धन हुँदा मात्र दानी हुने हैन मान्छेको मन फराकिलो भएको खण्डमा दान गर्ने वा दुःखीलाई मद्दत गर्नका निमित्त धन पर्याप्त हुनपर्दैन भन्ने भाव व्यक्त गरिएको छ । सङ्घर्ष कथामा जीवन सङ्घर्षमय छ । सङ्घर्ष त्याग जीवनका पाटा हुन् संसारिक माया मोहले कतै जीवनमा सङ्घर्ष थपेको हुन्छ भन्ने भाव व्यक्त भएको पाइन्छ । त्यस्तै 'निर्वाण' कथामा जीवन कल्पनाको भरमा निर्माण भएर चल्न सक्ने वालुवाको महल नभएर यथार्थको ढुङ्गे चट्टान हो भन्ने भाव देख्न सकिन्छ । यसको पुष्टि पूर्व प्रेमिकालाई मार्न गएको म पात्र उसको अपूर्व प्रेम देखेर उसमा आएको परिवर्तनबाट स्पष्ट हुन्छ । त्यस्तै 'महाभारत' कथामा राजनीतिक र आर्थिक सन्दर्भ सांस्कृतिक र मानवीय सन्दर्भको व्यवहारिक रूप प्रदान गर्दै मिथकीय आधारमा टेकेर वर्तमानको अवस्था व्यङ्ग्य प्रस्तुत गरिएको छ । 'सुमेरूमा द्रौपदी' कथामा मान्छेमा निहित स्वार्थ अज्ञेय र दुर्वोध्य छ भन्ने कुरा पाण्डवको स्वर्गारोहणसँग जोडिएको मिथकलाई पुनर्व्याख्या गर्दै आफ्नो स्वार्थ समाप्त भइसकेपछि कसैलाई पनि वास्ता नगर्ने मानवीय स्वभावको व्याख्या गरिएको छ । महान कलाकारमा मान्छे आफूमा भएको मूल्यको आफैले अवज्ञा गरेर कस्तुरीभैं भौतारिएको हुन्छ र आफ्नो महत्त्व थाहा नपाएर आफैलाई ठगिरहेको हुन्छ भन्ने भाव रहेको देखिन्छ । सम्पदाकको 'हृदय' नामक कथामा कथित प्रतिष्ठाका आफ्नो उचाइ देख्ने र भित्र भित्रै खिइएर वाउन्ने वन्दै गएका

मूल्यका कथित संवाहकका दुराचार प्रतिबिम्बित गर्ने पत्रकारिताको सारवस्तु पाउन सकिन्छ । त्यसैगरी भुरवामा मानिस मानिस बिच हुने वैमनस्यतालाई देखाएर त्यसको तुरून्तै अन्त्य हुनुपर्ने भाव छ । ‘अजम्मरी’ कथामा डाक्टरको लापरवाही र मनोमानिताले ज्यूदै मान्छे मारिन पुग्दछ, भन्दै त्यसप्रति खबरदारीता प्रकट गरिएको छ । त्यस्तै ‘अमेरिका’ कथामा बेरोजगारी समस्याले ग्रसित हुन पुगेका नेपालीको मनेदशा र भाग्यवादलाई कारूणिक र व्याङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । ‘मोडेल’ कथामा गाउँ र सहर अशिक्षा र अभाव आजको अपाच्य आधुनिकता आदिको सिकार बनेपछि मान्छे स्वयम्ले परिस्थितिलाई नियमन गर्न सक्दैन र स्वयम् दुर्घटनामा पर्न सक्छ भन्ने कुरालाई देखाइएको छ र ‘भूमी सङ्गीत तपाइहरूकै लागि’ कथामा पनि आधुनिकताले जन्माएको परिस्थितिलाई व्यङ्ग्य गरिएको छ । त्यस्तै ‘खबर कहर र जहर’ कथामा मान्छे भौतिक र बौद्धिक दुवै हिसाबबाट शोषित र पीडित बनेको वर्तमानमा पत्रकारिता क्षेत्रमा विकसित भएको पीत पत्रकारिता र अनैतिक मर्यादाहरूको अनुहार पहिल्याउने काम भएको छ । त्यस्तै उनको अन्तिम कथा अ.त.को सत्याग्रह नामक कथामा मान्छे अविवेकमै भौतारिएर गलत दिशामा बहकिन सक्छ । मान्छे सुशिक्षित भएन भने सही कार्यको पनि गलत निष्कर्ष निकालेर सही मान्छे पनि दण्डित हुने स्थितिको निर्माण हुन्छ भन्ने भाव रहेको छ । यसरी समग्रमा श्रेष्ठले आफ्ना कथामा सभ्य समाज निर्माणका लागि समाजमा देखिएका कुरीति, कुकृति, पीत पत्रकारिता र मनोमानीताको अन्त्य हुनुपर्दछ भन्ने भाव आफ्ना कथामा पोख्न पुगेका छन् ।

#### ६.८ भाषाशैलीको आधारमा ‘तेस्रो किनारा’ कथा सङ्ग्रहको अध्ययन

भाषा भनेको कुनै पनि कृति लेख्ने माध्यम हो भने शैली सो भाषालाई प्रयोग गर्ने तरिका हो । चरित्र कथाको घटना घटित भएको ठाउँ तथा समय पनि यसैका आधारमा बुझिन्छ । समाख्याता को हो भन्ने बुझाउन पनि भाषाकै शरण पर्नु आवश्यक हुन्छ । यसरी हेर्दा कथाका लागि भाषा नै सर्वश्व हुन्छ (वराल, २०६९ : १००) । कथामा कस्तो शैलीको प्रयोग भएको छ भन्ने कुरो मान्छे अनुसारको शैली फरक फरक हुने भएका कारण पनि यसले कथाको सान्दर्भिकतामा असर पुऱ्याएको हुन्छ । विम्ब प्रतीक पनि यही भित्र पर्दछन् अभय श्रेष्ठ एक शिक्षित व्यक्ति भएका कारण



उनको भाषा स्तरीय किसिमको हुनु स्वभाविकै हो र पत्रकारितामा लागेको व्यक्ति भएका कारण उनको प्रस्तुति शैली तिखारिएको छ । सानो सानो कुरालाई पनि प्रभावकारी तवरले व्यक्त गर्ने क्षमता कथाकार श्रेष्ठमा देख्न सकिन्छ । अभय आफू नेवार जाति भएर पनि नेवारी भाषाको प्रयोगबाट उनका कथा अलग हुनु उनको भाषाशैलीगत वैशिष्ट्य मान्न सकिन्छ । अंग्रेजी शब्दको प्रयोग भने उनका कथामा यदाकदा देख्न सकिन्छ । तर गाह्रा अंग्रेजी शब्दको भने प्रयोग पाइदैन । पात्रानुकूलको भाषा उनका कथामा पाउन सकिन्छ । खाइस्यो, गइस्यो जस्ता सव्य आदरार्थी शब्दको पनि प्रयोग पाइन्छ । त्यस्तै हुन्चस, खुवाउच जस्ता ग्रामीण शब्दका साथै अच्छा, वच्चु जस्ता हिन्दी भाषाका शब्दको प्रयोग पनि उनका कथामा पाउन सकिन्छ । बाल भाषाका शब्द पनि उनका भाषामा पाउन सकिन्छ । जे होस् सामान्य कुरालाई पनि मिलाएर लेख्न सक्ने खुबी श्रेष्ठका कथामा देख्न सकिन्छ ।

## ६.९ निष्कर्ष

वि.सं. २०२८ मा बाबु पूर्णबहादुर श्रेष्ठ र आमा हीरादेवी श्रेष्ठका कोखबाट भक्तपुरमा जन्मिएका अभय श्रेष्ठ (चङ्की) नेपाली साहित्यका गजल, कविता तथा कथा विधामा प्रख्यात मानिएका छन् । पछिल्लो चरणमा देखिएका श्रेष्ठले **तेस्रो किनारा** नामक कथा सङ्ग्रह सार्वजनिक गर्नुपूर्व कविता र गजल विधाका कोसेली पस्किसकेका छन् । वि.सं. २०४७ मा साहित्यमा लागेर साहित्यका लागि यत्तिको कोसेली दिन सक्नु उनको उल्लेख्य प्रगति हो । **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रहमा श्रेष्ठका चौधवटा कथा सङ्कलित छन् । आफू काठमाडौंली सहरीया वातावरणमा हुर्किनु पेसाले पत्रकार हुनु जस्ता कारणले उनका कथामा यसको प्रभाव देखिएनु स्वभाविकै हो । उनका कथामा नेपाली समाजमा विद्यमान रहेको कुकृति, कुप्रथा, पीत पत्रकारीता र पदीय दुरूपयोग जस्ता विकृतिलाई आफ्ना कथाको विषयवस्तु बनाउन पुगेका श्रेष्ठले कथा र घटना अनुसारका पात्रको प्रयोग गरेका छन् । उनका कथाका पात्रहरू देख्दा नै केही घटनाको वेलिविस्तार तिनै पात्रले दिएका छन् कि जस्तो भान आमपाठकमा परेको देखिन्छ । कता कता मिथकीय विषयवस्तु र मिथकीय पात्रको पनि प्रयोग गर्न पुगेका श्रेष्ठ मिथकीय विषयवस्तुमा आधारित वर्तमान अवस्थाको चित्रण गर्न पनि सफल भएका

छन् । प्रायः सहरीया परिवेशमा आधारित भएर कथा लेखेका श्रेष्ठ, सहरीया विकृति, विसङ्गति र स्वार्थपनप्रति पनि व्यङ्ग्य प्रहार गरेका छन् । श्रेष्ठका कथाहरू प्रायः जसो प्रथम पुरूष दृष्टिबिन्दु र यदाकदा तृतीय पुरूष दृष्टिबिन्दुमा आधारित भएर रचना गरेको देखिन्छ । समाज सुधार हुनुपर्ने भावमा आधारित उनका कथाले सिङ्गो समाजको प्रतिनिधित्व गर्न पुगेको देखिन्छ । पात्रानुकूलको भाषाको प्रयोग गरेको श्रेष्ठका कथा भाषिक रूपमा सशक्त बनेका छन् ।

## परिच्छेद सात

### सारांश तथा निष्कर्ष

यस शोधकार्यलाई व्यवस्थित गर्नका लागि विभिन्न परिच्छेदमा बाँडिएका छ । यस परिच्छेदमा अधिल्ला परिच्छेदहरूमा गरिएका कार्यहरूको सारांश दिइनुका साथै शोधकार्यको समग्र निष्कर्ष पनि दिइएको छ ।

#### ७.१ सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र मूलतः पाँच परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ । यसको पहिलो परिच्छेदमा समग्र शोधको परिचय खुल्ने गरी शोध परिचय राखिएको छ । यसमा शोध सम्बन्धी विषय परिचय, शोधकार्यमा उठेका समस्या, शोध समस्यामा उठेका प्रश्नहरूका उद्देश्यका रूपमा उद्देश्य कथन, यस शोधपत्रसँग नजिक रहेर गरिएका केही समीक्षाहरू, प्रस्तुत शोधपत्रको उद्देश्य, महत्त्व र उपयोगिता यस शोधपत्र भित्र गरिने कार्यहरूको सीमारेखा तय गरिएको शोधकार्यको सीमाङ्कन यस शोधपत्र विश्लेषण गर्दा प्रयोग गरिएको तरिकाका रूपमा शोधविधि र प्रस्तुत शोधपत्रको रूपरेखा जस्ता तत्वहरू समाहित रहेका छन् ।

प्रस्तुत शोधको दोस्रो परिच्छेदमा अभय श्रेष्ठको जीवनीको अध्ययन नामक शीर्षकको तय गरिएको छ । यस अन्तर्गत विषय परिचय, पुख्र्यौली र पारिवारिक पृष्ठभूमि, जन्म र जन्म स्थान, वाल्यावस्था, शिक्षाद्विधा, पारिवारिक जीवन, विवाह र सन्तान, आर्थिक अवस्था, जागिरे जीवन, संस्थागत संलग्नता, रूचि र स्वभाव, भ्रमण, साहित्य सिर्जनाको प्रेरणा र प्रभाव, मान सम्मान तथा पुरस्कार आदि उपशीर्षकमा आधारित रहेर उनका जीवनी पक्षको अध्ययन विश्लेषण गरिएको छ, र अन्त्यम समग्र पक्षको छोटो निष्कर्ष पनि दिइएको छ ।

त्यसैगरी प्रस्तुत शोधको तेस्रो परिच्छेदका रूपमा अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वको अध्ययन नामक शीर्षकको तय गरिएको छ । यस अन्तर्गत सुरूमा विषय परिचय राखिएको छ । त्यसपछि अभय श्रेष्ठका व्यक्तित्वका आयामहरू नामक उपशीर्षक भित्र बाह्य र आन्तरिक व्यक्तित्वको चर्चा गरिएको छ । अर्को उपशीर्षकमा उनका

व्यक्तित्वका दुई पाटाहरू साहित्येतर र व्यक्तित्वको चर्चा गरिएको छ । साहित्येतर व्यक्तित्व भित्र साहित्य गजलकार व्यक्तित्व, कवि व्यक्तित्व र कथाकार व्यक्तित्वको चर्चा गरिएको छ भने साहित्येतर व्यक्तित्वका रूपमा पत्रकार व्यक्तित्व, समाजसेवी व्यक्तित्व र अन्य व्यक्तित्वको चर्चा गरिएको छ । अन्य व्यक्तित्व भित्र पनि राजनीतिक व्यक्तित्व र सम्पादक व्यक्तित्वको चर्चा गरिएको छ । यसरी विभिन्न शीर्षक र उपशीर्षकबाट अभय श्रेष्ठको व्यक्तित्वलाई चिनाइएको छ । अन्त्यमा समग्र परिच्छेदको छोटो निष्कर्ष पनि प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रस्तुत शोधपत्रको चौथो परिच्छेदमा चड्की श्रेष्ठका नामले प्रकाशित अभय श्रेष्ठको **फूलविनाको शाखा** गजल सङ्ग्रहको अध्ययन नामक शीर्षकको चयन गरिएको छ । यस अन्तर्गत सुरुमा गजलको सामान्य परिचय दिइएको छ । सुरुमा यस परिच्छेदमा अध्ययन गरिएको विषयको सामान्य परिचय स्वरूप विषय परिचय राखिएको छ । त्यसपछि गजलको सामान्य परिचय दिइएको छ, त्यसपछि गजल तत्त्वका आधारमा प्रस्तुत कृतिको सामान्य विश्लेषण गरिएको छ र अन्त्यमा छोटो निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रस्तुत शोधपत्रको पाँचौं परिच्छेदमा चड्की श्रेष्ठका नामले प्रकाशित अभय श्रेष्ठको **कायाकल्प** कविता सङ्ग्रहको अध्ययन नामक शीर्षकको चयन गरिएको छ । यस अन्तर्गत सुरुमा यस परिच्छेदमा अध्ययन गरिएको विषयको सामान्य परिचय स्वरूप विषय परिचय राखिएको छ । त्यसपछि कविताको सामान्य परिचय दिइएको छ। त्यसपछि कविता तत्त्वका आधारमा प्रस्तुत कृतिको सामान्य विश्लेषण गरिएको छ र अन्त्यमा छोटो निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रस्तुत शोधपत्रको छैटौं परिच्छेदमा अभय श्रेष्ठको **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रहको अध्ययन नामक शीर्षकको चयन गरिएको छ । यस अन्तर्गत सुरुमा यस परिच्छेदमा अध्ययन गरिएको विषयको सामान्य परिचय स्वरूप विषय परिचय राखिएको छ । त्यसपछि कथाको सामान्य परिचय दिइएको छ त्यसपछि कथा तत्त्वका आधारमा

प्रस्तुत कृतिको सामान्य विश्लेषण गरिएको छ र अन्त्यमा छोटो निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

सातौं परच्छेदमा प्रस्तुत शोधपत्रको सारांश तथा निष्कर्ष नामक शीर्षक चयन गरिएको छ । यस अन्तर्गत सारांशका रूपमा अगाडिका परिच्छेदमा के कस्ता शीर्षक तथा उपशीर्षकको चयन गरिएको छ भन्ने कुराको सामान्य टिपोट र अन्त्यमा निष्कर्ष नामक उपशीर्षकमा समग्र शोधको सङ्क्षिप्त निचोड दिइएको छ ।

## ७.२ निष्कर्ष

अभय श्रेष्ठको जन्म वि.सं. २०२८ भदौ २५ गते दिउँसो पिता स्व. पूर्ण बहादुर श्रेष्ठ र माता स्व. हीरादेवी श्रेष्ठका कोखबाट भक्तपुरको गुन्दु गा.वि.स. वडा नं. ९ मा भएको हो । यिनको न्वारनको नाम रोम कुमार श्रेष्ठ हो तर उनी सुरूमा चङ्की श्रेष्ठका नामले चिनिन्थे भने अचेल अभय श्रेष्ठका नामले चिनिन्थे । यिनको सरकारी कामकाजको नाम पनि अभय श्रेष्ठ नै हो ।

आर्थिक दृष्टिले विपन्न परिवारमा जन्मिएका श्रेष्ठको वाल्यकाल दुःखपूर्वक र सङ्कटै सङ्कटमा बितेको देखिन्छ । आफू पाँच वर्षको हुँदा आमा गुमाएका श्रेष्ठले बाबुको माया पनि धेरै पछि सम्म पाउन सकेनन् । वि.सं. २०३४ मा औपचारिक शिक्षा हासिल गरेका श्रेष्ठले १-३ सम्मको अध्ययन वाल चेतना प्रा.वि. ददिकोटमा, ४-७ सम्मको अध्ययन, अरनिको नि.मा.वि.मा र ८-१० सम्मको अध्ययन, विद्यार्थी निकेतन मा.वि.मा गरेका थिए । त्यसपछि उच्च शिक्षा लिने क्रममा आइ.ए. पाटन क्याम्पस र बि.ए. त्रिचन्द्र कलेजमा पढेको देखिन्छ । वि.सं. २०४६ सालमा एस.एल.सी.उत्तीर्ण गरेका श्रेष्ठ वि.सं. २०४९ मा आइ.ए. र २०५१ मा बि.ए.को प्रमाणपत्र हात पारेको देखिन्छ ।

वि.सं. २०४९ असोज घटस्थापनाका दिन काठमाडौँ स्थित वानेश्वर बस्ने बुद्धिलाल महर्जन र नानुमाया महर्जनकी सुपुत्री अनिता महर्जनसँग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित गरेका हुन् । श्रेष्ठ दम्पतिको पहिलो सन्तानका रूपमा अमरलाई २०५२ सालमा र दोस्रो सन्तानका रूपमा अशोकलाई २०५४ सालमा जन्म दिइसकेका छन् ।

उनीहरू हाल १२ र ११ कक्षामा अध्ययनरत छन् । वि.सं. २०४६ बाट पत्रकार पेसामा लागेका श्रेष्ठ विभिन्न पत्रपत्रिकामा विज्ञापन सङ्कलक, सम्वाददाता र भाषासम्पादक बनेर धेरै अनुभव बटुलिसकेका छन् । स्कूले जीवनदेखि नै आफ्ना गुरुहरू र पाठ्यक्रममा राखिएका साहित्यिक व्यक्तित्व र तिनका कृतिहरूको अध्ययनबाट प्रभाव प्रेरणा प्राप्त गरेका थिए । वि.सं. २०४८बाट गजल विधाका माध्यमबाट सार्वजनिक भएका हालसम्म तीनवटा पुस्तककार कृतिका रूपमा **फूलविनाको शाखा** गजलसङ्ग्रह (२०६०), **कायाकल्प** कविता सङ्ग्रह (२०६२) र **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रह (२०६८) प्रकाशित भएका छन् भने केही कृतिहरू फुटकर रूपमा विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित पनि भएका छन् । यसरी विभिन्न पत्रपत्रिकामा काम गरेका र साहित्यका गजल, कविता र कथा विधामा कलम चलाएका श्रेष्ठले विभिन्न व्यक्तित्व बटुलिसकेका छन् । यस अन्तर्गत कवि व्यक्तित्व, कथाकार व्यक्तित्व, गजलकार व्यक्तित्व, पत्रकार व्यक्तित्व, समाजसेवी व्यक्तित्व जस्ता व्यक्तित्वले उनी जनमानसमा परिचित हुन पुगेका छन् । बाह्य रूपमा भट्ट हेर्दा भावुक देखिए तापनि उनी हँसिलो, स्वाभिमानी जस्ता व्यक्तित्वले उनलाई चिनाउन सफल भएका छन् । ५ फिट ५ इन्च अग्ला, ६२ के.जी. तौल भएका श्रेष्ठ जोशिला, जाँगरिला र जागरूक किसिमका देखिन्छन् । साहित्यका विविध विधा मध्ये गजल, कविता र कथा जस्ता विधामा कलम चलाएर प्रत्येक विधाका एक एक वटा पुस्तककार कृतिको प्रकाशन पनि गरिसकेका छन् । गजल विधाको लेखनबाट साहित्यमा उदाएका अभय श्रेष्ठको पहिलो प्रकाशित साहित्यिक कृति **फूलविनाको शाखा** गजल सङ्ग्रह (२०६०) हो । यस सङ्ग्रहमा उनका ६४ वटा गजल सङ्ग्रहित रहेका छन् । उनले गजलका विषयवस्तुका रूपमा प्रेमाभिव्यक्ति, युद्ध, लडाईं, क्रान्तिकारी जस्ता घटना र ती घटनाले जनमानसमा पारेको प्रभावलाई समसामयिक घटनाको साँचोमा ढालेर प्रयोग गरेका छन् । ती समसामयिक घटना र आफूले भोगेको युगीन यथार्थलाई कल्पनामा ढालेर प्रस्तुत गर्न पनि उनी सबल देखिन्छन् । यसरी वर्गीय समाजको चित्रण गर्दै आशावादी स्वर पनि उनका कृतिमा देख्न सकिन्छ । धेरैजसो गजलहरू १४ र १६ अक्षरमा संरचित छन् भने अन्यमा अङ्क योजनाको तारतम्य मिलेको देखिदैन । जे होस् उनका यी गजलहरूले उनलाई गजलकार श्रेष्ठका रूपमा चिनाउन सफल भएको देखिन्छ । उनका गजलमा गन्ध

सम्बन्धी बिम्ब, स्पर्श सम्बन्धी बिम्ब, स्वाद सम्बन्धी बिम्ब, श्रव्य सम्बन्धी बिम्ब, ताप सम्बन्धी बिम्ब र गति सम्बन्धी बिम्बको प्रयोगका साथै पारम्परिक, व्यक्तिगत र स्थानीय प्रतीकको पनि प्रयोग देख्न सकिन्छ । त्यस्तै रूपक र अतिशयोक्ति अलङ्कारले पनि उनका गजलहरू सशक्त मानिन्छन् ।

त्यस्तै उनको दोस्रो प्रकाशित साहित्यिक कृतिका रूपमा **कायाकल्प** कविता सङ्ग्रह (२०६२) प्रकाशित छ । यस कविता सङ्ग्रह भित्र लामा छोटो गरी ४३ वटा कविता सङ्ग्रहित रहेका छन् । यी मध्ये तिनवटा गजल ढाँचामा संरचित छन् भने अन्य गद्यात्मक भाषामा लेखिएका छन् । उनका कवितामा माओवादी जनयुद्धताकाको त्रासदीय वातावरणको चित्रणका साथै त्यसले जनमानसमा उत्पन्न पीडाको घटनालाई विषयवस्तु बनाएको देखिन्छ । दृश्य, श्रव्य, आस्वाद्य बिम्बका साथै विभिन्न प्रतीकहरू र उपमा, अतिशयोक्ति जस्ता अलङ्कारको प्रयोगले उनका कविता सशक्त मानिन्छन् । विभिन्न बिम्ब तथा प्रतीकको प्रयोग गर्ने श्रेष्ठले आफ्नो कविताको शीर्षक नै प्रतीकात्मक पाराको राखेको देखिन्छन् ।

अभय श्रेष्ठको तेस्रो प्रकाशित साहित्यिक कृतिका रूपमा **तेस्रो किनारा** कथा सङ्ग्रहका (२०६८) प्रकाशित भएको छ । यस कथा सङ्ग्रहमा उनका १४ वटा कथाहरू सङ्कलित रहेका छन् । आफू सहरीया वातावरणमा हुर्किनु, पेसाले पत्रकार हुनु, जीवनमा धेरै दुःख र सङ्कट भोग्नु जस्ता कारणले उनका कथामा यसको प्रभाव देखिनु स्वभाविक हो । उनका कथामा समाजमा विद्यमान रहेका कुकृति, कुप्रथा पीत पत्रकारिता र पदीय दुरूपयोगको व्यङ्ग्य विरोध गरिएको छ । समसामयिक यथार्थ घटनामा आधारित उनका कथामा घटनाक्रम पहिल्यै ओकलि सकेको भान हुन्छ । मिथकीय घटना र मिथकीय पात्रको प्रयोग पनि उनका कथामा देख्न सकिन्छ । प्रायः जसो कथामा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेका श्रेष्ठका केही कथामा तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग पनि पाइन्छ । सरल, सहज र सम्प्रेष्ण भाषाको प्रयोगले उनका कथाहरू सशक्त बनेका छन् ।

## सन्दर्भ सामग्री सूची

अधिकारी, हरि (२०६८). 'समीक्षा', कान्तिपुर, काठमाडौं : (वर्ष १९, अङ्क ११४, पृ. ८ जेष्ठ) ।

खनाल, प्रदीप (२०५६). *सानुभाइ महर्जनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन*, अप्रकाशित शोधपत्र, स्नातकोत्तर तह, त्रि.वि., कीर्तिपुर ।

त्रिपाठी, वासुदेव र अन्य (२०४६). *नेपाली कविता भाग-४*, ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

..... (२०४६, सम्पा.) *साभा कविता*, ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

थापा, राजु (२०५६). *कवि मदन रेग्मीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन*, अप्रकाशित शोधपत्र, स्नातकोत्तर तह, त्रि.वि., कीर्तिपुर ।

फुयाँल, मंगलचन्द्र (२०६०). *युद्ध वीर राणको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन*, अप्रकाशित शोधपत्र, स्नातकोत्तर तह, त्रि.वि., कीर्तिपुर ।

बराल, कृष्णहरि (२०६४). *गजल सिद्धान्त*, ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

..... (२०६९), *कथा सिद्धान्त*, काठमाडौं : एकता बुक्स ।

भेटवाल, लेखनाथ (२०६९). *अनिरुद्र तिमिसनाको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन*, अप्रकाशित शोधपत्र, स्नातकोत्तर तह, त्रि.वि., कीर्तिपुर ।

वर्मा, धिरेन्द्र र अन्य (२०१९, सम्पा.). *हिन्दी विश्वकोष खण्ड २*, वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा ।

राय, बाबुगुलाव (सन् १९७५). *सिद्धान्त और साहित्य*, दिल्ली : रामलाल पुरी ।

लुईटेल, खगेन्द्रप्रसाद (२०४६). *क्षेत्रप्रताप अधिकारका काव्य प्रवृत्ति*, अप्रकाशित शोधपत्र, स्नातकोत्तर तह, त्रि.वि., कीर्तिपुर ।

वस्नेत, राजेन्द्र (२०६२). 'समीक्षा', कान्तिपुर, काठमाडौं : (वर्ष १४, अङ्क ४२ पृ. १२) ।



वस्नेत, वसन्त (२०६८). 'समालोचनात्मक समीक्षा', गरिमा, ललितपुर : साभा  
प्रकाशन, (वर्ष २९, पूर्णाङ्क १४५) ।

वर्तमान, गोविन्द (२०६८). 'समीक्षा', नागरिक, काठमाडौं : (वर्ष ३, अङ्क ३५, पृ. १४,  
जेष्ठ) ।

श्रेष्ठ, चड्की (२०६०). फूल विनाको शाखा, काठमाडौं : विवेक सिर्जनशील प्रकाशन ।

..... (२०६२). कायाकल्प, काठमाडौं : विवेक सिर्जनशील प्रकाशन ।

श्रेष्ठ, अभय (२०६८). तेस्रो किनारा, काठमाडौं : साङ्ग्रिला बुक्स ।

श्रेष्ठ, दयाराम (२०६६), अभिनव कथाशास्त्र, काठमाडौं : पालुवा प्रकाशन ।

..... (२०६७, सम्पा.), नेपाली कथा भाग-४, दोस्रो.सस्करण, ललितपुर : साभा  
प्रकाशन ।